

गांधी के हरिजन और अहंमियत | भारत-पाक क्रिकेट राजनीति

राव फो राग्नीष्ठ रामाचार पत्रिका

13 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 50

# आख्तगढ़

SUBSCRIBER COPY NOT FOR RESALE

www.outlookhindi.com

## #पिंग क्रांति

दक्षिण पूर्व एशिया में तख्खापलट  
के लगभग सालाना घटनाक्रमों में  
नवयुवा पीढ़ी और सोशल मीडिया  
कैसे बना इंकलाबी दस्ता

नेपाल के  
काठमांडू में  
झंडा लहराता  
एक युवक

RNI NO. DELHIN/2009/26981





From high-performance power cables to smart metering and distribution infrastructure, Anvil has been a frontrunner in providing sustainable solutions for electrical utilities to the people of India.

Our commitment at Anvil Energy is to make renewable energy the new normal in India.



Shaping the New  
Energy  
Ecosystem  
of India



Anvil Cables ensuring last mile delivery of power



Anvil Distributech managing electrical distribution for secure, sustainable grids



Anvil Urja simplifying the switch to green energy

[info@anvil.energy](mailto:info@anvil.energy)  
[www.anvil.energy](http://www.anvil.energy)



# अमेरिकी वीजा बंदिश



गिरिधर झा

इतना तय है कि ट्रम्प तकनीक में महारत हासिल करने वाले भारतीय युवाओं पर पाबंदियां लगाकर अमेरिका का ही नुकसान करेंगे, चाहे आर्थिक क्षेत्र हो या तकनीकी। अमेरिका के दरवाजे बंद होने से भारतीय छात्रों के लिए सारे विकल्प खत्म नहीं हो जाएंगे।

## भा

रत के प्रति पश्चिमी देशों के पूर्वाग्रह का इतिहास नया नहीं है। वहां सदियों तक भारत की छवि 'संपर्यों के देश' के रूप में बनी रही। बीसवीं सदी में विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हुए क्रांतिकारी परिवर्तन की बदौलत विकसित देशों ने अभूतपूर्व प्रगति की, लेकिन उस दौरान भी भारत के प्रति उनकी धारणा नहीं बदली। भारत उनकी नजरों में तीसरी दुनिया का आर्थिक रूप से कमज़ोर देश ही बना रहा है। वैसे तो प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के बीच और उसके बाद ब्रिटेन के साम्राज्यवादी हुक्मत के खिलाफ गांधी के ऐतिहासिक अहिंसक आंदोलन और स्वतंत्रता उपरांत देश में प्रजातात्त्विक व्यवस्था के सुचारू रूप से लागू होने की वजह से भारत के प्रति नजरिए में बदलाव दिखा था। लेकिन, भारत तकनीक के क्षेत्र में कभी पाश्चात्य देशों की बराबरी कर सकेगा, यह उम्मीद किसी को नहीं थी। आज भारत इस क्षेत्र पर किसी भी विकसित देश से मुकाबला कर सकता है और उसकी गणना आर्थिक रूप से मजबूत मुल्कों में होती है।

दरअसल आजादी के बाद जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल में छात्रों को उच्चस्तरीय तकनीकी शिक्षा देने के लिए इंजीनियरिंग और मेडिकल के पढ़ाई के लिए उच्चतर संस्थानों की स्थापना की गई। उन्हीं संस्थानों से उत्तीर्ण होकर भारत से सैकड़ों डॉक्टर और इंजिनियर देश से निकलकर अमेरिका और यूरोपीय देशों में काम करने गए, जहां उन्होंने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। नब्बे के दशक में जब इंटरनेट क्रांति का प्रादुर्भाव हुआ तो तब भारत को दुनिया भर में तकनीकी रूप से दक्ष युवाओं का देश समझा जाने लगा। इंटरनेट युग में भारतीय युवाओं ने दुनिया भर, खासकर अमेरिका में डिजिटल क्रांति लाने में महती भूमिका निभाई। अगले दो दशकों में भारत के कंप्यूटर इंजीनियरों का ऐसा बोलबाला रहा कि उन्होंने गूगल और माइक्रोसॉफ्ट सहित कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सर्वोच्च पद को भी सुशोभित किया। जाहिर है, अमेरिका जैसे प्रजातात्त्विक देश में बिना मेधा के ऐसा संभव नहीं हो सकता था। यह 'गठबंधन' दोनों देशों के लिए 'विन-विन सिचुएशन' यानी दोहरे फायदे का सौदा साबित हुआ। भारतीय युवाओं ने अपनी प्रतिभा और कौशल के बल पर डिजिटल युग में अमेरिका की अर्थव्यवस्था को और सुदृढ़ करने में योगदान दिया, तो अमेरिका यहां के युवाओं को बेहतरीन अवसर देने वाला अग्रणी देश बना। हर वर्ष गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेजन जैसी अमेरिकी कंपनियां बेहतरीन भारतीय युवाओं को अपने यहां नौकरी करने का अवसर देने लार्य और आज भी देती हैं। लेकिन क्या अब स्थितियां बदलने वाली हैं? क्या भारतीय छात्रों और युवाओं के 'ग्रेट अमेरिकन ड्रीम' के अंत की शुरुआत हो रही है?

दरअसल पिछले सप्ताह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने हर नए एच-1 वीजा की फीस बढ़ाकर एक लाख डॉलर कर दी है, जो पहले से कई गुना अधिक है। इसी वीजा के आधार पर अधिकतर भारतीय युवा अमेरिकी कंपनियों में काम करने का अवसर पाते हैं। ट्रम्प प्रशासन के इस निर्णय से आशंका जराई जा रही है कि इसका सबसे अधिक खामियाजा भारतीय युवाओं को ही भुगतान पड़ेगा, क्योंकि 71 फीसदी वीजा उन्हें ही मिलता है। विशेषज्ञों का मानना है कि अमेरिकी कंपनियों के लिए अब यह मुश्किल नहीं होगा कि वे उतनी संख्या में भारतीय युवाओं को नौकरी दे सकें, जितना वे पहले दिया करती थीं।

ट्रम्प का कहना है कि उन्होंने यह कदम इसलिए उठाया, ताकि अमेरिकी युवाओं को ज्यादा से ज्यादा नौकरियों मिल सकें और अमेरिकी कंपनियों भारत या दूसरे देशों से सिर्फ उन्हें कुशल लोगों को इस वीजा के माध्यम से नौकरियां दें, जो उनके अपने देश में उपलब्ध न हों। इसमें दो मत नहीं है कि ट्रम्प के इस कदम के पीछे उनकी अपनी राजनीति है। पिछले कुछ वर्षों में अमेरिका और कुछ अन्य देशों में आवाज उठी कि वहां के युवाओं की नौकरियां छीन कर विदेशियों को दी जा रही हैं। पिछले कुछ वर्षों में अमेरिका भी बेरोजगारी का दंश झेल रहा है लेकिन क्या ट्रम्प के इस कदम से उसका समाधान हो पाएगा? क्या बड़ी टेक कंपनियां अमेरिकी युवाओं को वे तमाम नौकरियां दे पाएंगी, जिन्हें पहले एच-1-वीजा की माध्यम से दिया जाता था? ट्रम्प को इसकी उम्मीद है, लेकिन यह कहना फिलहाल मुश्किल है।

हालांकि इतना तय है कि ट्रम्प तकनीक में महारत हासिल करने वाले भारतीय युवाओं पर पाबंदियां लगाकर अमेरिका का ही नुकसान करेंगे, चाहे आर्थिक क्षेत्र हो या तकनीकी। अमेरिका के दरवाजे बंद होने से भारतीय छात्रों के लिए सारे विकल्प खत्म नहीं हो जाएंगे। डिजिटल युग में जिन भारतीय युवाओं ने अपनी प्रतिभा के बल पर बड़ा मुकाम हासिल किया, उन्हें दरकिनार करना अमेरिकी इंडस्ट्री के हित में नहीं है। इसलिए ट्रम्प को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

X @giridhar\_jha



20

## जेन जी हरावल दस्ता

नेपाल की ताजा-ताजा और उसके पहले श्रीलंका, बांग्लादेश के तखापलट में छात्र-युवाओं की महती भूमिका और उसमें सोशल मीडिया के औजार बनने से शुरू हुई नई बहस, क्या है इसके राजनैतिक-सामाजिक मायने

**30 सोशल मीडिया:** क्या है जादू

**34 नजरिया:** पीयूष पांडे

**36 नजरिया:** उद्घव प्याकुरेल

**38 नजरिया:** निर्मल मणि अधिकारी



◀ **14 हरिजन:** अनोखे अखबार की कहानी



► **17 आनंद बन:** ▶  
अमृत वर्ष



**40 क्रिकेट:** हाथ न मिलाने का राज

कवर फोटो: ए.पी.

## आउटलुक

वर्ष 17, अंक 21

संपादक: पिरिधर झा

एंडीटीरियल कैम्पेन्टें: हरिमोहन मित्र  
वरिष्ठ सहायक संपादक: आकांक्षा पारे काशिव  
वेब टीम: उपासना पांडेय, राजीव नवन चतुर्वेदी,  
मीरा पांडे, मंथन रसोनी  
डिजाइन: रोहित कुमार राय, (सीनियर डिजाइनर)  
रेजोन सिंह (विजुअलाइजर)  
फोटो सेक्यूरिटी: विपुल तिवारी (डिप्टी फोटो संपादक),  
संदीपन चट्टाङ्ग, सुरेश कुमार पांडे (स्टाफ फोटोग्राफर)

विजयेस कार्यालयः

चीफ एजेंट्स्ट्रिट ऑफिसर: उंडनील रौय  
प्रकाशक: संदीप कुमार योप  
डायरेक्टर ब्रांड एंड मार्केटिंग: श्रुतिका दीवान  
सीनियर जनरल मैनेजर: देववाणी टैगोर,  
शेलेन्ड्र वाहगा  
संकुलेशन एंड सम्बन्धितान: गगन कोहली, जी.  
रमेश (साउथ), कपिल ढल (नार्थ),  
अरुण कुमार झा (ईस्ट), मनोज कोवले (वेस्ट)

प्रोडक्शनः

जनरल मैनेजर: शशांक दीक्षित  
मैनेजर: सुधा शर्मा, गोरक्ष श्रीवास (एसोसिएट  
मैनेजर), गणेश साह (डिप्टी मैनेजर)  
अकाउंट्स:  
वाइस एमेसेंट: दीवान सिंह बिट  
हेड, सेल्स आपेशास: मनोज मिश्रा  
कंपनी सेक्रेटरी एवं लॉर्निंग ऑफिसर: अंकित मंगल  
प्रधान कार्यालय: ए.वी.-10 सफदरजंग एन्कलेव,  
नई दिल्ली-110029  
संपादकीय कार्यालय: ए.वी.-10 सफदरजंग  
एन्कलेव, नई दिल्ली-110029

संपादकीय ईमेल

edithhindi@outlookindia.com

ग्राहकी के लिए संपर्क: 9266855837/9266855636

कार्यालय संख्या: सुबह 10 से शाम 6 बजे तक

yourhelpline@outlookindia.com

संपादक: पिरिधर झा  
आउटलुक पाब्लिशिंग (ईंडिया) प्रा.लि. की तरफ से  
इंडनील रौय द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। एमपी प्रिंटर्स  
(ए यूनिट ऑफ डी.बी. कॉर्प. लिमिटेड), बी-220/  
223, इंडस्ट्रीयल परियाँ, केज 2 नोएडा, यूपी से मुद्रित  
और ए.वी.-10 सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली से  
प्रकाशित।



# भारतीय परंपरा और विज्ञान का प्रतीक विक्रमादित्य वैदिक घड़ी

**भारतीय विज्ञान की गौरवपूर्ण झलक**

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य निति नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। इसी कड़ी में विक्रमादित्य वैदिक घड़ी के माध्यम से भारतीय परम्परा और विज्ञान को पुनर्स्थापित करने का कार्य किया जा रहा है। सोमवार 1 सितंबर 2025 को मुख्यमंत्री निवास में सीएम मोहन यादव ने विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का अनावरण किया। यह घड़ी भारतीय काल गणना पर आधारित विश्व की पहली वैदिक घड़ी है। मध्यप्रदेश का सीएम हाउस देश का पहला ऐसा शासकीय निवास होगा, जहां भारतीय परंपरा और विज्ञान पर आधारित वैदिक घड़ी स्थापित की गई है। विक्रमादित्य वैदिक घड़ी के जरिए विरासत-विकास-प्रकृति और तकनीक के संतुलन का प्रकटीकरण होगा। वैदिक घड़ी के ऐप के माध्यम से मोबाइल में ही वैदिक घड़ी का संचालन कर सकते हैं।

## युवाओं का ऊर्जापूर्ण प्रतिभाग

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मुख्यमंत्री निवास के नवनिर्मित द्वार पर विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का मंत्रोच्चार के बीच अनावरण किया। इस अवसर पर शौर्य स्मारक से आरंभ हुई 'भारत का समय-पृथ्वी का समय' रैली मुख्यमंत्री निवास पहुंची। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ऐली में शामिल युवाओं का स्वागत किया और उनके मोबाइल में विक्रमादित्य वैदिक घड़ी ऐप भी डाउनलोड करवाया। इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विक्रमादित्य वैदिक घड़ी के ऐप का लोकार्पण, राजा भोज पर निर्मित यूट्यूब सीरीज के फोल्डर का विमोचन और खगोल विज्ञान पर केन्द्रित फिल्म की सीडी का विमोचन भी किया। कार्यक्रम में युवाओं का प्रतिभाग बताता है कि

राज्य के युवाओं को प्रदेश सरकार में विश्वास है और उन्हें सरकार की नीतियों में अपना उज्ज्वल भविष्य नजर आ रहा है।

## वैदिक घड़ी है विशेष

विक्रमादित्य वैदिक घड़ी सूर्योदय और सूर्यस्त के आधार पर समय की गणना करती है। इसमें GMT के 24 घंटों को 30 मुहूर्त (घटी) में विभाजित किया गया है। हर मुहूर्त का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व है। घटी में घंटे, मिनट और सेकंड की सुई के साथ-साथ पंचांग, मुहूर्त, मौसम और अन्य धार्मिक जानकारी भी देखने को मिलेगी।

विक्रमादित्य वैदिक घड़ी के मोबाइल ऐप में 3179 विक्रम पूर्व (श्रीकृष्ण के जन्म), महाभारतकाल से लेकर 7000 से अधिक वर्षों के पंचांग, तिथि, नक्षत्र, योग, करण, वार, मास, व्रत एवं त्यौहारों की दुर्लभ जानकारियां समाहित की गई हैं। धार्मिक कार्यों, व्रत और साधना के लिए 30 अलग-अलग शुभ मुहूर्तों की जानकारी और अलार्म की सुविधा भी है। प्रचलित समय में वैदिक समय (30 घंटे), वर्तमान मुहूर्त स्थान, जीएमटी और आई एस टी समय, तापमान, हवा की गति, आर्द्रता और मौसम संबंधी सूचनाएं भी लोगों को उपलब्ध कराई जा रही हैं। यह ऐप 189 से अधिक वैश्विक भाषाओं में उपलब्ध है। इसमें दैनिक सूर्योदय और सूर्यस्त की गणना समेत इसी आधार पर हर दिन के 30 मुहूर्तों का सटीक विवरण शामिल है।

## प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में हो रहा विकास

विक्रमादित्य वैदिक घड़ी के अनावरण के मौके

पर अपने संबोधन में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकास मॉडल का विशेष आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने विकासशील दृष्टिकोण को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। भारत का मान-सम्मान बढ़ाने के लिए वे प्रतिबद्ध हैं। उन्हीं के प्रयासों से वर्ष 2014 में दुनिया के अंदर यूनेस्को के माध्यम से योग को पुनर्स्थापित किया गया। भारत का ज्ञान, कौशल और विशेषता केवल भारत के लिए नहीं है, यह समूची मानवता के लिए है। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा कि सुशासन के जो मूल्य और मापदंड विक्रमादित्य काल में स्थापित किए गए थे, उन्हीं की प्रेरणा से वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में व्यवस्थाओं का संचालन हो रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर परिस्थिति में देश के वैज्ञानिकों, सैनिकों, किसानों सहित देश के लिए समर्पित प्रत्येक व्यक्ति के साथ मजबूती से खड़े हैं।

## कार्यक्रम में रहे गणमान्य मौजूद

मुख्यमंत्री मोहन यादव के साथ विक्रमादित्य वैदिक घड़ी के अनावरण कार्यक्रम में कई गणमान्य अतिथि मौजूद रहे। कार्यक्रम को पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर, सांसद श्री आलोक शर्मा, वैदिक घड़ी के अन्वेषणकर्ता श्री आरोह श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौधे और महर्षि सांदीपनि विश्वविद्यालय के कुलगुरु पंडित शिवशंकर मिश्र ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, विधायक श्री रामेश्वर शर्मा, विधायक श्री विष्णु खन्नी, भोपाल महापौर श्रीमती मालती राय, अध्यक्ष नगर निगम श्री किशन सुर्यवंशी, मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार श्रीराम तिवारी, अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा श्री अनुपम राजन सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलगुरु और बड़ी संख्या में युवा उपस्थित थे।



## भयावह तस्वीर

29 सितंबर के अंक की तस्वीर, 'बादल रौद्र राग' बारिश की त्रासदी की कहानी कहती है। यह तस्वीर ही अपने आप में संपूर्ण है। इसके बाद कुछ और पढ़ने या समझने को बाकी नहीं रह जाता। जब आवरण पर नजर गई, तो एक क्षण के लिए लगा सब ठहर गया है। ये हम कहां से कहां आ पहुंचे हैं। हमें न अपनी फिक्र है, न अपने आसपास के वातावरण की। जो

त्रासदी इस तस्वीर में दिख रही है, उससे लगता है कि मनुष्य प्रजाति ने पूरी कोशिश की है कि पृथ्वी नष्ट हो जाए। इस तस्वीर में दिख रही तबाही ने कई घटे निःशब्द रखा। दुर्गम तीर्थयात्राओं को भी मनोरंजन और रील्स बनाने का ठिकाना बना लिया है। भीड़ को नियंत्रित करने के बजाय हम उस भीड़ को सुविधा देने की खातिर प्रकृति से छोड़ा भीड़ कर रहे हैं।

नीरजा नाफ़ड़े | इंदौर, मध्य प्रदेश

## बाढ़ की विभिषिका

29 सितंबर के अंक में बाढ़ की विभिषिका के बारे में पढ़ा। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली और असम सभी जगह पानी ने गजब ढा दिया है। उत्तराखण्ड का धराली हो या जम्मू-कश्मीर का किश्तवाड़, अचानक तेज बारिश ने सैकड़ों जिंदगियां लील ली हैं। हिमाचल प्रदेश की कहानी और भी बुरी है। चंबा से लेकर मनाली तक हिमाचल प्रदेश इस बार भीषण मानसूनी तबाही का सामना कर रहा है। आखिर यह हो क्या रहा है। सबकी समझ से बाहर की बात है। सड़क से लेकर ट्रेन तक यातायात का हर साधन ठप पड़ा हुआ है। सिक्किम, असम और अरुणाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में भी यही हाल है।

केके. शर्मा | बनारस, उत्तर प्रदेश

## ढाक के तीन पात

आउटलुक के 29 सितंबर के अंक में, 'आपदा की जबाबदेही तय करना जरूरी' पूरी आवरण कथा का निचोड़ है। इस लेख में बिलकुल सच लिया है कि 'बाढ़ 'अप्रत्याशित प्राकृतिक त्रासदी' नहीं, गलत फैसलों,

लापरवाह नीतियों और ढीली जबाबदेही का नतीजा है।' यह बिलकुल सच है कि भारत में आने वाली हर आपदा पर बाद में सिर्फ हाथ झाड़ लिए जाते हैं। किसी की कभी कोई जबाबदेही तय नहीं की जाती है। कायदे से तो बाढ़ के लिए पहले से तैयारी की जानी चाहिए। हर साल बिहार, पंजाब, महाराष्ट्र और गुजरात परेशानी झेलते हैं लेकिन नतीजा वही ढाक के तीन पात रहता है। जब भी किसी राज्य में बाढ़ की समस्या सामने आती है, तो कुछ दिनों के लिए वहां राहत सामग्री पहुंचाई जाती है, लोगों की जान-माल का तुकसान होता है और फिर सब पहले की तरह हो जाता है।

मालती सिंह | बहादुरगढ़, हरियाणा

## पानी का बदला

29 सितंबर के अंक में, बाढ़ विभिषिका के बारे में पढ़ा। हमारे यहां समस्या यह है कि एक बार कोई त्रासदी हुई, उसके बाद सब भूल जाते हैं। अगले साल फिर वही कहानी दोहराई जाती है। जलवायु परिवर्तन की वजह से बारिश के पैटन बदलने की भी अलग ही कहानी है। यह समझना होगा कि यह आपदा आने की अकेली वजह जलवायु परिवर्तन नहीं है। नदियों के कैचमेंट ऐरिया की हालत लगातार बिंदुती जा रही है। पहले बारिश के पानी को जंगल, घास के मैदान, वेटलैंड और तालाब रोक लेते थे। पानी को जमीन में रिसने का मौका मिलता था फिर यह पानी धीरे-धीरे नदी तक पहुंचता था। अब ऐसा नहीं हो पाता क्योंकि कैचमेंट ऐरिया हमने लगभग खत्म ही कर दिया है। अगर हम अब भी नहीं चेते तो हालात बदतर होते जाएंगे।

प्रणीता भंडारी | बीकानेर, राजस्थान

## श्रेष्ठ पत्र को उपहार स्वरूप 1000 रुपये मूल्य की पुस्तकें

तकनीकी विकास ने पत्र लेखन की विधा को हाशिए पर जरूर धकेला है, लेकिन यह विधा पूरी तरह खत्म नहीं हुई है। पत्र लेखकों को प्रोत्साहन देने के लिए आउटलुक हिंदी पत्रिका अपने पाठकों के लिए एक योजना लाए रही है। किसी भी पत्रिका के लिए प्रतिक्रिया स्वरूप मिलने वाले पाठकों के पत्र महत्वपूर्ण होते हैं। आउटलुक हिंदी पत्रिका में प्रकाशित लेखों पर 150 शब्दों में अपनी प्रतिक्रिया भेजें और पाएं हिंदी के प्रतिलिपि सामिक्य प्रकाशन की ओर से एक हजार रुपये मूल्य की पुस्तकें। हर अंक में उपने वाले पत्रों में से एक सर्वश्रेष्ठ पत्र चुना जाएगा।

व्यान रवेंद्र किंग पत्र साफ लिखे गए हैं और लेख न हों। संबंधित लेख का उल्लेख जरूर करें और अपनी टिप्पणी सटीक रखें। चुने गए पत्र पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। अपना नाम एवं पिन कोड सहित पूरा पता जरूर लिखें। संपादकीय निर्णय सर्वोपरि होगा।

## आउटलुक पत्रिका प्राप्त करने के स्थान

**दक्षिण:** हैदराबाद उशमान बुक स्टोल, 9912850566, सिंकंद्राबाद साई बाबा मैग्जीन स्टोर, 9949891356

**उत्तर:** दिल्ली - दिल्ली मैग्जीन डिस्ट्रिब्यूटर्स प्रा.लिमिटेड, 011-41561060

लखनऊ - सुभाष पुस्तक भंडार प्रा. लिमिटेड, 9839022871, चंडीगढ़ - पूरी न्यूज एंजेंसी, 9888057364, देहरादून- आदित्य न्यूज एंजेंसी, 9412349259, भोपाल- इंडियन न्यूज एंजेंसी, 9826313349, रायपुर- मुकुंद पारेख न्यूज एंजेंसी, 9827145302, जयपुर- नवरत्न बुक सेलर, 9829373912, जम्मू- प्रीमियर न्यूज एंजेंसी, 9419109550, श्रीनगर- जेपी न्यूज एंजेंसी, 9419066192, दुर्गा (छत्तीसगढ़) - खेमका न्यूज एंजेंसी, 9329023923

**पूर्व:** पटना- ईस्टर्न न्यूज एंजेंसी, 9334115121, बरौनी- ज्योति कुमार दत्ता न्यूजपेपर एंजेंट, 9431211440, कोलकाता- अर्भी साहा, 8961066724/ 9830389342, रांची- मॉर्डन न्यूज एंजेंसी, 9835329939, ज्ञान भारती, 9835196111, जमशेदपुर- प्रसाद मैग्जीन सेंटर, 2420086, बोकारो- त्रिलोकी सिंह, 9334911785, भुवनेश्वर- ए. के. नायक, 9861046179, गुवाहाटी- दुर्गा न्यूज एंजेंसी, 9435049511

**पश्चिम:** नागपुर- नेशनल बुक सेंटर, 8007290786, पाठक ब्रदर्स, 9823125806, नासिक- पाठक ब्रदर्स, 0253-2506898, पुणे- वीर न्यूज एंजेंसी, 9422034176, अहमदाबाद- के वी अजमेरा एंड संस, 079-25510360/25503836, मुंबई- दंगत न्यूज एंजेंसी, 22017494

## रोकी जा सकती है आपदा

29 सितंबर के अंक में, 'आपदा की जबाबदेही तय करना जरूरी' सबसे जरूरी लेख है। बारिश के दिनों में 'बादल फट गए', सामान्य रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला वाक्य है। इस पर कोई बात नहीं करता कि दरअसल बादल फटना होता क्या है। भारत में भारी बारिश को अक्सर 'बादल फट गए' कह कर टाल दिया जाता है। सच्चाई यह है कि इसका सटीक डेटा हमारे पास है ही नहीं। बादल फटने का पूर्वानुमान लगाना भी कठिन होता है क्योंकि यह बहुत छोटे इलाके में बेहद तेज बारिश के रूप में होता है और मौसम विभाग के पारंपरिक राडार और उपराह इसे पकड़ नहीं पाते हैं। अगर इस पर काम किया जाए तो ऐसी स्थिति को रोका जा सकता है। जरूरत है तो इच्छाशक्ति के साथ सचेत रहने की।

वीरन्द्र खटीक | ग्वालियर, मध्य प्रदेश

## प्रकृति का कहर

29 सितंबर के अंक में, 'विकास के नाम तबाही न बुलाइए' विकास की नई परिभाषा को बताता है। लेख में सही लिखा है कि 'विकास टिकाऊ और समावेशी होना चाहिए' लेकिन ऐसी बात सब समझते कहाँ हैं। यह सच है कि विकास पहाड़ों की अर्थव्यवस्था मजबूत करने के लिए किया जा रहा है लेकिन जब लोग ही नहीं रहेंगे, तो ऐसी अर्थव्यवस्था का क्या करेंगे। विकास के नाम पर लोगों की जान पर नहीं बन आनी चाहिए। अति संवेदनशील क्षेत्रों में पहले अध्ययन करना चाहिए फिर ही वहाँ कोई निर्माण कार्य होना चाहिए। यह समझदारी बरती जाएगी, तो न पहाड़ पर संकट आएगा, न पहाड़ पर रहने वालों पर। बाढ़ के बारे में एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि यह आपदा सिर्फ पहाड़ों पर नहीं आ रही, बल्कि शहरी क्षेत्र भी इसकी चपेट में आ रहे हैं। हर साल बड़े मैदानी इलाकों बाढ़ से प्रभावित होते हैं, सैकड़ों किसानों के खेत ढूब जाते हैं, फसलें बर्बाद होती हैं। लेकिन इससे न शहर वाले समझते हैं न ग्रामीण इलाकों में रहने वाले। आर्थिक नुकसान की तो क्या

कहें। जिस तरह दिल्ली और गुरुग्राम पानी-पानी हो गए, उससे ही समझ में आ जाता है कि शहरों में भी बाढ़ प्रबंधन बहुत खराब है। किसी को इसे ठीक करने की परवाह भी नहीं है। सबको सुविधा और मनोरंजन का साधन चाहिए। मॉल चाहिए, सुकून नहीं। बिल्डिंगों चाहिए खाली जमीन नहीं। जब हम ही खुद के लिए नहीं सोच रहे, तब प्रकृति पर दोष क्यों लगाएं।

नारायण स्वामी | मेरठ, उत्तर प्रदेश

## सदाबहार नगमे

गुरु दत्त निसंदेह अलग तरह के फिल्मकार थे। उनकी फिल्मों के गानों ने एक तरह का जादू जगाया। हर गाने के लिए वे अलग तरह की पृष्ठभूमि का उपयोग करते थे। 'ये लो मैं हारी पिया' का फिल्मांकन इतना खूबसूरत हुआ है कि इसके एक-एक शब्द पर मधुबाला की अदाएं देखने लायक होती हैं। जाहिर सी बात है, गीतकार साहिर लुधियानवी ने भी अपने शब्दों से जादू रचा, मगर गुरु दत्त की कल्पना ने इस गाने को अलग ही रूप दिया। लाइटिंग, तकनीक और कैमरा मूवमेंट हर बात बहुत संतुलित थी। यह काम गुरु दत्त ही कर सकते थे। आज इतने साल बाद भी 'वक्त ने किया क्या हसीन सिनत' गाना सुनने में जितना सुकून देता है, देखने में भी दिल पर छा जाता है। ('गीत जो बन गए मोती', 29 सितंबर)

परवीन चावला | बैंगलूरु, कर्नाटक

## बातचीत खत्म न हो

15 सितंबर के अंक में, 'नई धुरी की ताकतवर तिकड़ी' पढ़ा। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की 25वीं राष्ट्राध्यक्ष परिषद बैठक ऐतिहासिक साबित हुई है। इस बैठक में मंच से ट्रम्प को सीधा संदेश गया कि मोदी-पुतिन और जिनपिंग साथ आ रहे हैं। यह वैश्विक राजनीति में महत्वपूर्ण बदलाव की तरह है। चीन ने शायद महसूस कर लिया है कि भारत को अब नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह भारत की कूटनीतिक शक्ति की जीत है। हालांकि रूस ने हमेशा से ही भारत का साथ दिया है, चाहे मुद्दा कोई भी हो।

## आपकी यादों का शहर

आउटलुक पत्रिका के लोकप्रिय स्तंभ शहरनामा में अब आप भी अपने शहर, गांव या कस्बे की यादें अन्य पाठकों से साझा कर सकते हैं। ऐसा शहर जो आपके दिल के करीब हो, जहाँ की यादें आपको जीवंतता का एहसास देती हैं। लिख भेजिए हमें लगभग 900 शब्दों में वहाँ की संस्कृति, इतिहास, खान-पान और उस शहर के पीछे की नाम की कहानी। या ऐसा कुछ जो उस शहर की खास पहचान हो, जो अब बस स्मृतियों में बाकी हो।

रचनाएं यूनिकोड में टाइप की हों और सब-हेड के साथ लिखी गई हों। सब्जेक्ट लाइन में शहरनामा लिखना न भूलिएगा। शब्द सीमा में शहर की संस्कृति पर ही लिखें। लेख के साथ अपना छोटा परिचय, फोन नंबर और फोटो जरूर भेजें।

हमें मेल कीजिए [hindioutlook@outlookindia.com](mailto:hindioutlook@outlookindia.com)

## कितना बोझ सहेंगे

आउटलुक हमेशा से ही हर जरूरी मुद्दे पर लिखता रहा है। 29 सितंबर की आवरण कथा, 'बादल रौद्र राग' हर जगह आने वाली बाढ़ की त्रासदी को दिखाती है। विकास के नाम पर कच्चे पहाड़ों पर होटल, मकान बनाना किसी भी कीमत पर समझदारी नहीं कही जा सकती है। पिछले कुछ साल से पहाड़ों पर पर्यटन बढ़ा है और निश्चित तौर पर लोगों के आने का बोझ पहाड़ों पर पड़ रहा है। इसके साथ ही वहाँ संडकें बनाना, उन जगहों को हाइवे से जोड़ना भी स्थानीय लोगों के लिए मुश्किल सवित हो रहा है। हर साल बारिश में लाखों लोगों को बेघर होना पड़ता है। हर राज्य सरकार को चाहिए कि इस मामले का स्थानीय समाधान खोजा जाए। लोगों को अस्थायी रूप से किसी शेल्टर होम में रखना गलत है।

कृष्ण हरिहर | नासिक, महाराष्ट्र

अब आप अपने पत्र इस मेल पर भी भेज सकते हैं:

[hindioutlook@outlookindia.com](mailto:hindioutlook@outlookindia.com)

हालांकि आने वाले समय में हमें चीन का यह दोस्ताना व्यवहार पर रखना होगा। ऐसा नहीं है कि भारत और अमेरिका के रिश्ते समाप्त हो गए हैं, या उनमें सुधार नहीं हो सकता। भारत चीन के साथ भी सावधानी बरतनी चाहिए। हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि चीन हमेशा से व्यापार के मुद्दे को बॉर्डर मसलों से दूर रखना चाहता है। हमें अमेरिका के साथ बातचीत खत्म नहीं करना चाहिए और अन्य देशों के साथ भी ट्रेड डील करनी चाहिए ताकि हमारे नियांतकों के पास ज्यादा से ज्यादा विकल्प मौजूद रहें।

बाल गोविंद | नोएडा, उत्तर प्रदेश

## छुपा रुस्तम

15 सितंबर के अंक में, प्रथम दृष्टि के तहत 'बिहार का सवाल' में बहुत ही जरूरी बातें उठाई गई हैं। इस बार चुनाव में लग नहीं रहा कि किसी को भी स्पष्ट बहुमत आएगा। सभी को राहत और तेजस्वी पर भरोसा है, लेकिन इस स्तंभ में प्रशंसात किशोर की बात की गई है। सच तो यह है कि बाकई सभी लोग प्रशंसात किशोर को कमज़ोर खिलाड़ी समझ रहे हैं। लेकिन वे गेमचेंजर साबित हो सकते हैं। थोड़ा बहुत हुआ, तो तेजस्वी उनका मुकाबला कर पाएंगे, लेकिन राहुल से तो किसी तरह की उम्मीद नहीं है। वैसे भाजपा को अभी से प्रशंसात किशोर को साथ लेना चाहिए।

प्रेम उपाध्याय | बड़वाह, मध्य प्रदेश



**नई दोस्ती:** ए. सेंगोट्टैयन (बीच में) ने दिल्ली में सीतारमण और शाह से की मुलाकात

# फिर विरवरा शीराजा

अन्नाद्रमुक में बढ़ती कलह, भाजपा पर मिलीभगत के आरोप के बीच द्रमुक का इस मुद्दे से एंटी इनकम्बेंसी का डर दूर

एन.के. भूपेश

**त**मिलनाडु की प्रमुख विपक्षी पार्टी अन्नाद्रमुक की मुश्किलें लगातार बढ़ती जा रही हैं। वरिष्ठ नेता के.ए. सेंगोत्तैयन ने पार्टी के महासचिव एडप्पडी के पलानीसामी (ईपीएस) की कार्यशैली पर सीधे सवाल खड़े कर दिए हैं। सेंगोत्तैयन ने पार्टी से बाहर किए गए नेताओं की वापसी के लिए 10 दिन का अल्टीमेटम दिया है और चेतावनी दी है कि अगर उनकी मांगें नहीं मानी गईं तो वे अपने समर्थकों के साथ अलग मोर्चा बना सकते हैं। यह विवाद सेंगोत्तैयन की दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात के बाद तूल पकड़ता जा रहा है। ये अटकलें तेज हो गई हैं कि भाजपा तमिलनाडु की राजनीति में कुछ ज्यादा ही सचि ले रही है और हस्तक्षेप कर रही है। अन्नाद्रमुक नेतृत्व का मानना है कि पार्टी के असंुष्ट नेता से मिलना भाजपा की गलत नीति है और यह सहयोगी दलों के बीच विश्वासघात की तरह है।

अन्नाद्रमुक की यह कलह सत्तारूढ़ द्रमुक के लिए एकदम मुफीद समय पर बाहर आई है। प्रमुख

लेकिन अब उन्हें पार्टी के वरिष्ठ नेता के ए. सेंगोत्तैयन से नई चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। सेंगोत्तैयन ने पार्टी से बाहर किए गए नेताओं की वापसी की मांग की और मौजूदा नेतृत्व के खिलाफ खुलकर असंतोष जताकर संकेत दिया है कि पार्टी के भीतर सुलग रहा असंतोष अभी खत्म नहीं हुआ है।

नौ बार विधायक रहे सेंगोत्तैयन की खुली धमकी पर महासचिव पलानीसामी ने उन्हें संगठन सचिव और इरोड़ ग्रामीण पश्चिम जिले के सचिव के पदों से हटा दिया। सेंगोत्तैयन की मांग का समर्थन करने वाले छह अन्य नेताओं के खिलाफ भी कार्रवाई की गई। हालांकि अभी किसी को भी पार्टी से निष्कासित नहीं किया गया। शीर्ष नेतृत्व ने भले ही चुप्पी साध रखी हो लेकिन सेंगोत्तैयन को ओ. पनीरसेल्वम और वी. के. शशिकला जैसे नेताओं का समर्थन मिला है। दोनों लंबे समय से पलानीसामी के प्रभुत्व को चुनौती देने के लिए मौके की तलाश में हैं।

सेंगोत्तैयन 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के साथ गठबंधन न करने के लिए नेतृत्व की आलोचना कर चुके हैं। हाल में अमित शाह और

निर्मला सीतारमण के साथ उनकी बैठक से अटकलें लगाने लगी हैं कि भाजपा अन्नाद्रमुक के आंतरिक मुद्दों में खुलकर दखल दे रही है।

हालांकि पार्टी नेरुत्व ने भाजपा नेताओं के साथ सेंगोत्तैयन की बैठक पर आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी। लेकिन पलानीसामी के करीबी लोगों का कहना है कि आलाकमान की जानकारी में लाए बिना यह कदम पार्टी अनुशासन का उल्लंघन है। पार्टी में भाजपा के प्रति नाराजगी इसलिए भी बढ़ रही है कि उसके दो नेताओं ने एक असंतुष्ट नेता की मेजबानी की। कई लोग हैं, जो इसे पार्टी के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप के रूप में देख रहे हैं। इस प्रकरण से खबरों का बाजार गर्म है कि सेंगोत्तैयन की बगावत हाल ही में पटरी पर आए भाजपा-अन्नाद्रमुक गठबंधन में तनाव पैदा कर सकती है। पिछले विधानसभा चुनावों के बाद दोनों पार्टी ने अपसी संबंध तोड़ लिए थे। अभी बीते अप्रैल में ही दोनों दल फिर से साथ आए थे। अब इस नए घटनाक्रम से पुराने घाव के फिर हरा हो जाने का खतरा है।

राजनीतिक विश्लेषक बाबू जयकुमार का मानना है, “अन्नाद्रमुक कभी भी विचारधारा की पार्टी नहीं रही। वह हमेशा से नेताओं के ही ईर्दगिर्द खड़ी रही है, पहले एम.जी. रामचंद्रन, फिर जे. जयललिता। उनके बाद, उस कद का कोई नेता नहीं हुआ। पिछले कुछ साल से पलानीसामी ने अपनी स्थिति मजबूत की है। जहां तक सेंगोत्तैयन का सवाल है, वे उन्हें चुनौती देने के की स्थिति में नहीं हैं। उनके अचानक विद्रोह को भले ही ‘बाहरी ताकतों’ का समर्थन हो लेकिन फिलहाल पलानीसामी को अस्थिर करना मुमकिन नहीं है।”

नाम न छापने की शर्त पर एक अन्नाद्रमुक नेता आउटलुक से कहते हैं, कि उन्हें शक है कि पार्टी छोड़ने वाले वरिष्ठ नेताओं को बहाल करने के सेंगोत्तैयन के अल्टीमेटम के पीछे भाजपा का हाथ है। वे आगे कहते हैं, “सेंगोत्तैयन के कदम का ओ.पनीसेल्वम और वी.के.शशिकला ने तुरंत स्वागत किया। यह उसी ओर इशारा करता है।”

2026 का विधानसभा चुनाव अन्नाद्रमुक के लिए निर्णायक है, क्योंकि 2019 के बाद से पार्टी को हर बड़े चुनाव में हार का सामना करना पड़ा है। पार्टी के भीतर यह धारणा बढ़ती जा रही है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में एनडीए के साथ गठबंधन किया होता, तो शायद बेहतर परिणाम होते। हालांकि 2021 के विधानसभा चुनाव में पार्टी ने भाजपा के साथ गठबंधन किया था और फिर भी हार का सामना करना पड़ा था। पार्टी को यही दुविधा परेशान करती है और नेरुत्व का एक वर्ग विधानसभा की हार के लिए ने भाजपा के साथ गठबंधन को जिम्मेदार ठहराता है।

2024 के लोकसभा चुनाव में, अन्नाद्रमुक 23.3 प्रतिशत वोट शेयर हासिल करने के बावजूद एक भी

**बड़ा दांव:** जयललिता के बाद से शशिकला और पनीरसेल्वम (नीचे) हाशिये पर ही हैं

दोनों फोटो: पीटीआई



**तमिलनाडु में भाजपा की प्रमुख सहयोगी और राज्य की मुख्य विपक्षी पार्टी अन्नाद्रमुक जे. जयललिता की मृत्यु के बाद से ही बिखरी हुई है**

सीट नहीं जीत पाई थी। भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए ने अलग से चुनाव लड़कर 18 प्रतिशत वोट हासिल किए थे। यही बजह है कि अन्नाद्रमुक के भीतर असंतुष्ट नेता सेंगोत्तैयन के साथ कई लोग मानते हैं कि दोनों दल साथ मिलकर लड़ते तो नतीजे अलग होते।

द्रमुक प्रवक्ता प्रो. रवींद्रन आउटलुक से कहते हैं, “भाजपा अच्छी तरह जानती है कि वह तमिलनाडु में पैठ नहीं बना सकती। यहां लगभग 20 प्रतिशत मतदाता न द्रमुक का समर्थन करते हैं, न अन्नाद्रमुक का। अगर अन्नाद्रमुक फिर से टूटती है, तो भाजपा मुख्य विपक्ष की भूमिका में आने की सोच सकती है, लेकिन यह उसके लिए आसान नहीं है।” हालांकि द्रमुक अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी पार्टी के भीतर चल रही उथल-पुथल पर कड़ी नजर रखे हुए हैं। पार्टी से जुड़े लोगों का कहना है कि उन्हें ज्यादा चिंता नहीं है।

उनके अनुसार, भाजपा की रणनीति स्पष्ट है, राज्य में वैकल्पिक ताकत के रूप में उभरने के लिए अन्नाद्रमुक की अंदरूनी कलह का इस्तेमाल करना। रवींद्रन का तर्क है कि द्रविड़ दलों द्वारा दशकों से गढ़ी गई तमिलनाडु की राजनीतिक संस्कृति, किसी बाहरी व्यक्ति के लिए इस शून्य को भरने की बहुत कम गुंजाइश छोड़ती है। वे कहते हैं, “आर अन्नाद्रमुक और भी कमज़ोर हो जाती है, तब भी भाजपा उसका वोट आधार हासिल नहीं कर सकती।”

जानकारों के अनुसार, भाजपा को इसमें संदेह है कि पलानीसामी अकेले मुख्यमंत्री एम.के.स्टालिन का मुकाबला कर पाएंगे। इसलिए, वह पूर्व अन्नाद्रमुक नेताओं के पुनर्मिलन की व्यक्तिगत कर रही है। हालांकि, कई नेता पार्टी छोड़ चुके हैं और पलानीसामी को एनडीए के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पेश नहीं करना चाहते हैं।

पलानीसामी के करीबी लोगों को पूरा भरोसा है कि सेंगोत्तैयन के विरोध से काई फर्क नहीं पड़ने वाला है और पार्टी पर पलानीसामी अपनी पकड़ बनाए रख सकते हैं। वे बताते हैं कि पलानीसामी ने कई बड़ी चुनौतियों का सामना किया है और संगठन पर अपना नियंत्रण धीरे-धीरे मजबूत किया है। फिर भी, असंतुष्ट आवाजों को प्रोत्साहित करने या उन्हें जगह देने के भाजपा के इरादों को लेकर बेचैनी है। पार्टी के अंदरूनी सूत्रों के अनुसार, आलाकमान, ‘वेट ऐंड वॉच’ की रणनीति अपना रहा है। वह पूरे घटनाक्रम पर गहरी नजर रखे हुए है। देखना है कि 10 दिन की अंतिम चेतावनी समाप्त होने के बाद सेंगोत्तैयन का अगला कदम क्या होगा और क्या इससे नेताओं की व्यापक लाम्बंदी हो पाएगी।

लिहाजा, कई जानकारों का मानना है कि भाजपा कोई तीसरा या चौथा कोण खड़ा करके बोटों का बंटवारा करना चाहती है, जिससे उसे कुछ सीटों का फायदा मिल सके और राज्य में उसका खाता खुल सके। जो भी हो, अगले साल चुनावों के पहले उठा-पटक देखने को मिल सकती है।

**त्रिकोण:** शंघाई में एससीओ सम्मेलन में शी के साथ पुतिन और मोदी (बीच में)



# तिकड़ी से खुन्नस

मजबूरी में भारत का चीन और रूस की ओर हाथ बढ़ाना अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प की चिढ़ बढ़ा रहा, मगर दोनों के लिए शायद नए तरह से सोचना रणनीतिक हितों के खातिर जरूरी

## अपर्णा पांडे

**अ**ब तक का सबसे चर्चित शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) का शिखर सम्मेलन चीन के तियानजिन में हुआ। अमेरिका और भारत में उस पर अलग-अलग प्रतिक्रियाएं हुईं। अमेरिका में इसे तानाशाहों का शिखर सम्मेलन बताकर खारिज किया, जिसका कोई ठोस नतीजा नहीं निकला। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, “लगता है, हमने भारत और रूस को सबसे घने, सबसे अंधकारमय चीन के हाथों खो दिया है। ईश्वर करे कि उनका भविष्य लंबा और समृद्ध हो।” लेकिन असलियत इन दोनों प्रतिक्रियाओं के बीच कहीं है।

अमेरिका-भारत के बीच बढ़ती साझेदारी के साथ तीन दशक बाद भारत अपने मूल स्वरूप बहुपक्षीय अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर लौट आया है। भारत के लिए बहुध्वंशीय विश्व व्यवस्था ही आदर्श है क्योंकि उसी में उसकी अहम भूमिका हो सकती है।

मनमौजी अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प के अराजक

रुख से दुनिया में राजनैतिक और आर्थिक भूचाल से भारत-चीन संबंधों में नए बदलाव और ‘रूस-भारत-चीन’ तिकड़ी की चर्चाएं तेज हो गई हैं। अमेरिका के पश्चिमी और एशियाई सहयोगियों के बीच संबंध तो गहरे हैं, मगर पहले के गुटनिरपेक्ष खेमे के देशों ने रूस और चीन से रिश्ते बनाए रखे हैं। 2023 की गरिमियों में भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने द इकोनॉमिस्ट के इंटरव्यू में कहा था, “तीन बड़ी यूरोशियाई शक्तियों

रूस, चीन और भारत के बीच यह लेन-देन का मामला नहीं, बल्कि भू-राजनैतिक मामला है।”

पूर्वी लद्दाख की गलवन घाटी में 2020 में हुई झड़पों के बाद से भारत-चीन के बीच राजनयिक, आर्थिक और सुरक्षा रिश्ते तनावपूर्ण रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच आखिरी उच्चस्तरीय शिखर बैठक 2018 में हुई थी। दोनों ने किसी भी बहुपक्षीय सम्मेलन के दौरान मिलने से परहेज किया था। 2023 भारत में आयोजित जी20 शिखर सम्मेलन में शी नहीं आए थे।

दूसरे, वॉशिंगटन की नजरों से छिपा नहीं है कि दूसरी बार ट्रम्प के गद्दी संभालने के बाद चीन के साथ भारत के संबंधों में सुधार हुआ। पांच साल बाद दोनों देशों के बीच उड़ानें फिर शुरू हुईं, वीज दिया जाने लगा और चीन ने हिंदू धर्मिक तीर्थस्थल कैलाश मानसरोवर यात्रा के रास्ते फिर खोलने की घोषणा की।

इसके अलावा, कई साल तक द्विपक्षीय बैठकों से बचने के बाद मोदी एससीओ शिखर सम्मेलन में शी से मिले और द्विपक्षीय वाताएं हुईं। भारत की ओर से मोदी की शी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ इन बैठकों को खूब प्रचारित किया गया। द्विपक्षीय बैठकों में दोनों देशों ने एक-दूसरे को “प्रतिद्वंद्वी नहीं, विकास का साझेदार” बताया और “आपसी सम्पान, पारस्परिक हित और पारस्परिक संवेदनशीलता” की आवश्यकता पर जोर दिया।

कई वर्षों से, भारत दुनिया में चीन को अलग-थलग करने की अमेरिकी मुहिम का हिस्सा माना जाता रहा है। लेकिन ट्रम्प के आर्थिक दबाव के कारण चीन के साथ भारत के संबंधों में नरमी आई है। चीन भारत के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में एक है, लेकिन भारत का चीन के साथ भारी व्यापार घाटा है। असल में, भारत अपना औद्योगिक इनक्रास्ट्रक्चर बढ़ाना चाहता है, इसलिए वह कच्चे माल से लेकर स्पेयर पार्ट्स और औद्योगिक उपकरणों तक के लिए दुनिया के कारखाने यानी चीन पर निर्भर है।

गलवन घाटी की घटना के बाद भारत ने चीनी निवेशों पर कड़ी निगरानी और टिकटॉक सहित कई चीनी ऐप पर प्रतिबंध लगा दिया। चीन ने भी भारत में एप्पल के कारखानों में काम कर रहे चीनी इंजीनियरों को वापस बुला लिया और भारत को किसी भी औद्योगिक उपकरण और दूसरे औद्योगिक उत्पादों के नियांत पर रोक लगा दी। पांच वर्षों तक प्रतिबंधों के बाद चीन जुलाई 2025 में भारत के लिए

अहम उर्वरक, दुर्लभ अर्थ मेट्रियल, चुंबक, खनिज और सुरंग खादने वाली मशीनों के नियांत पर राजी हुआ। ट्रम्प प्रशासन की बेरुखी जारी रहती है, तो भारत अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए चीन से अधिक निवेश की राह खोल सकता है।

अमेरिकी दबाव बढ़ने की वजह से ही शायद भारत ने रूस के साथ रिश्ते और भी अच्छे कर लिए हैं। दिसंबर में पुतिन की भारत यात्रा की चर्चा है। रूस के साथ भारत के दशकों पुराने संबंध लंबे समय से अमेरिकी नेताओं को परेशान करते रहे हैं, लेकिन मौजूदा ट्रम्प प्रशासन के तहत, ये संबंध अमेरिका-भारत साझेदारी के मूल सूत्रों को और भी ढीला कर रहे हैं।

इसके अलावा, ट्रम्प प्रशासन की नजर में रूस एक ‘मृत अर्थव्यवस्था’ है और भारत की तेल और रक्षा खरीद यूक्रेन संघर्ष को बढ़ावा दे रही है। हालांकि, भारत के लिए रूस रणनीतिक कारणों से महत्वपूर्ण बना हुआ है। हर देश का भूगोल उसकी विदेश और

## ट्रम्प के आर्थिक दबाव के कारण चीन के साथ भारत के संबंधों में नरमी आई है। चीन भारत के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में एक है

सुरक्षा नीति तय करता है। 1966 में चीन का सोवियत संघ से नाता टूटने के बाद से रूस-चाहे सोवियत संघ या उसके बिखरने के बाद- एशियाई महाद्वीप में भारत को चीन के मुकाबले संतुलन बनाने हिस्से की तरह देखता रहा है।

इस तरह, भारत रूस से रक्षा उपकरण और ऊर्जा खरीदना जारी रखेगा। पिछले कुछ दशकों में भारत ने रक्षा सप्लाई के रिश्ते प्रांत, इज़ाएल और अमेरिका से तैयार किया है, लेकिन रूस तब भी सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता बना हुआ है। 2000 से, रूस ने भारत को लगभग 40 अरब डॉलर के हथियार बेचे हैं, जबकि अमेरिका ने 2008 से लगभग 24 अरब डॉलर के हथियार बेचे हैं।

भारत बहुपक्षीय और क्षेत्रीय, दोनों मंचों पर रूस के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखता है, जिसमें ब्रिस्स, एससीओ और जी20 शामिल हैं, ताकि चीनी प्रभुत्व को रोका जा सके और यह तय किया जा सके कि रूस इन बड़े गैर-पश्चिमी मंचों पर भारत के हितों का ध्यान रखे।

हालांकि, रूस अब सोवियत संघ की छाया मात्र है और चीन पर बहुत अधिक निर्भर है। भारत के लिए सबसे बुरा सप्ताह 1960 के दशक की शुरुआत जैसा चीन-सोवियत संबंध होगा। भारत रूस से सस्ते रक्षा उपकरण खरीद सकता है, लेकिन उसकी तुलना अत्याधुनिक अमेरिकी उपकरणों से नहीं की जा सकती। अलबत्ता, अमेरिका के साथ सामरिक संबंध खराब भी होते हैं, तो भी भारत रूसी उपकरणों पर दोगुना जोर देने के बजाय यूरोप और एशिया में फ्रांस और जापान जैसे अमेरिकी सहयोगियों की ओर रुख करेगा।

इसी तरह, भारत चीन के साथ अपने संबंधों को बेहतर बनाने का प्रयास कर रहा है। हालांकि, उत्तरी पड़ोसी भारत के लिए प्रमुख खतरा और प्रतिद्वंद्वी रहा है और बना हुआ है। भले ही अमेरिका के नेतृत्व वाली हिंद-प्रशांत रणनीति और चतुर्भुज समूह-क्वाड-खुद कमज़ोर पड़ जाए, भारत इस क्षेत्र में अपने मित्रों और साझेदारों के साथ काम करना जारी रखेगा क्योंकि अंततः यही भारत का ऐतिहासिक और भौगोलिक प्रभाव क्षेत्र है।

आखिरकार, दिल्ली और वॉशिंगटन दोनों ही समझते हैं कि भारत किसी पश्चिम-विरोधी (या अमेरिकी) समूह का नेतृत्व नहीं कर रहा है। भारत का हित अमेरिका के साथ घनिष्ठ रणनीतिक साझेदारी में निहित है, ठीक उसी तरह जैसे कोई भी अमेरिकी प्रशासन जो वैश्विक महत्वाकांक्षाओं को प्राप्त करना चाहता है, वह दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देश को नजरअंदाज नहीं कर सकता, जो महत्वपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र में स्थित है और जिसमें आर्थिक और सैन्य क्षमता है।

(वॉशिंगटन विथ हडसन इंस्टीट्यूट में भारत और दक्षिण एशिया पूर्व इनिशिएटिव की निदशक। विचार निजी हैं)



ए.पी.

# बड़े धोखे हैं इस राह में

डेटिंग स्कैम्स के जाल में फंस रहे युवा,  
धोखाधड़ी और लूट के नए तरीके

जिनित परमार

**मुं** बई की उमस भरी शुक्रवार की रात 32 वर्षीय आदित्य (बदला हुआ नाम) को लगा कि वह किसी खास से मिलने जा रहे हैं। उनकी डेट ने मुंबई के अंधेरी इलाके के एक खास रेस्तरां पर जोर दिया। वहां उसने बिना संकोच कॉकटेल, स्टार्टर, मेन कोर्स और डेजर्ट का ऑर्डर दिया। बिल 18,000 रुपये से ज्यादा का था। लड़की फोन सुनने के बहाने बाहर गई और फिर लौटकर नहीं आई। आदित्य समझ ही नहीं पा रहे थे कि वे इतने बड़े जाल में फंस कैसे गए।

एक हफ्ते बाद, ठाणे के 28 वर्षीय रोहन भी ठीक इसी तरह के जाल में फंस गए। एक लोकप्रिय डेटिंग ऐप पर मिली लड़की ने उन्हें गवर्डी इलाके के एक रूफटॉप लाउंज में बुलाया। उन्हें 22,000 रुपये का बिल भरने के लिए मजबूत किया गया। बाद में उनके एक दोस्त ने बताया कि उस रेस्तरां के लोग फर्जी डेट यानी लड़कियां मिलकर पुरुषों से बहुत सा पैसा खर्च कराके ठगते हैं।

सोशल मीडिया पर तेजी से बढ़ती ऐसी कहानियां संकेत हैं कि यह ट्रेंड का रूप ले चुका है। इससे पुरुषों को न सिर्फ अधिक तुकसान होता है बल्कि उन्हें गहरे भावनात्मक आवात भी झेलने पड़ते हैं।

जेनरेशन जेड और मिलेनियल्स के बीच लोकप्रिय डेटिंग ऐप्स ऐसी समस्याओं को देखते हुए जांच के दायरे में आ गए हैं। कई प्लेटफॉर्म सुरक्षा संबंधी एडवाइजरी भी जारी कर रहे हैं और नए फीचर भी ला रहे हैं, जिसमें स्कैम अलर्ट, फोन नंबर मास्किंग और सख्त वेरिफिकेशन प्रक्रिया लागू हैं।

कनाडाई-फ्रांसीसी ऑनलाइन डेटिंग ऐप और सोशल नेटवर्किंग ऐप एशले मेडिसन के मुख्य रणनीति अधिकारी पॉल कीवेल इस समस्या को स्वीकार करते हैं। वह कहते हैं, “हम भारत में रिपोर्ट की गई धोखाधड़ी सहित सभी प्रकार की ठगी को गंभीरता से



लेते हैं। हमने अपने सदस्यों का जोखिम कम करने के लिए अंदरूनी तौर पर मॉडरेशन, सभी सक्रिय खातों निगरानी और सामुदायिक रिपोर्टिंग टूल जैसे सुरक्षा उपाय लागू किए हैं।” ऐप पर फिर से विश्वास बहाल करने के लिए, एशले मेडिसन ने फर्जी प्रोफाइलों को हटाने के लिए सख्त सत्यापन प्रणाली, सेल्फी और सरकारी आइडी की जांच भी शुरू कर दी है।

कई अन्य प्लेटफॉर्म भी एआई आधारित तकनीक का उपयोग कर रहे हैं, ताकि यूजर को शिकार बनने से पहले ही चेतावनी दी जा सके। कीएबल ने कहा कि उनका ध्यान ज्यादा स्मार्ट निगरानी प्रणाली, मजबूत गोपनीयता सुरक्षा और ऐसे संसाधनों पर है, जो सदस्यों को डिजिटल डेटिंग की अक्सर अप्रत्याशित दुनिया में सुरक्षित महसूस करने में मदद करेगा।

आइल नेटवर्क की हेड चांदनी गांगलानी कहती हैं, “हमारे सदस्य विश्वास के साथ सार्थक संबंध बनाने पर ध्यान केंद्रित कर सकें यह निश्चित करने के लिए, हमने दो चरणों में व्यापक सत्यापन प्रणाली लागू की है। हमारी उनत एआई तकनीक में सेल्फी से सत्यापन का भी चरण है, जो पहले सभी प्रोफाइल फोटो का विश्लेषण करता है। एआई के जांचने-परखने के बाद

टीम भी समीक्षा करती है। दोहरी प्रक्रिया से केवल वास्तविक यूजर्स ही आ पाते हैं।”

एक और डेटिंग प्लेटफॉर्म, क्वैक क्वैक भी इस तरह की धोखाधड़ी से निपटने के लिए कई नए नियम और उपाय लागू कर रहा है। क्वैक क्वैक के सीईओ रवि मित्तल कहते हैं, “धोखाधड़ी से निपटने के लिए हम, सुरक्षा के कई स्तर जोड़ रहे हैं।” मित्तल आगे कहते हैं, “हम आगाह करते हैं कि अपना फोन नंबर और अन्य सोशल मीडिया जानकारी साझा न की जाए। हम फोन नंबर भी छिपाते हैं, जिनका इस्तेमाल अक्सर बातचीत में और प्रोफाइल बनाते समय किया जाता है। हमारे प्लेटफॉर्म पर नई प्रोफाइल बनाने के लिए इन नंबरों का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।”

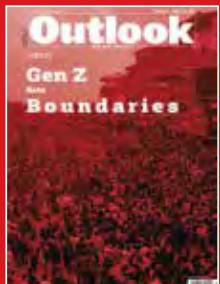
सुरक्षा उपाय बढ़ने के बावजूद बड़ी समस्या यह है कि ज्यादातर मामले सामने नहीं आ पाते। समाज में ऐप या इस तरह की डेटिंग को लेकर बनी धारणा के कारण कई पुरुष न तो पुलिस को शिकायत करते हैं न अपने दोस्तों को बताते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसी किसी धोखाधड़ी का शिकार हो गए पुरुष इस तरह की घटनाओं के बारे में खुलकर बोलने में संकोच होता है क्योंकि उन्हें मजाक बनने या लोग उनके बारे में क्या सोचेंगे का डर सताता है।

ठगी करने वाले इसी चुप्पी का फायदा उठाते हैं। पीड़ित सामने नहीं आते, तो अपराधियों को कोई सजा नहीं मिल पाती। कई पुरुष शर्मिंदगी से बचने के लिए चुपचाप तुकसान सह लेते हैं। वकील और मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि यह मौन अपराधियों के हौसले बढ़ाता है और समस्या की असली तस्वीर सामने ही नहीं आ पाती है, जिससे पुलिस के लिए कार्रवाई करना और मुश्किल हो जाता है।

# सच को समर्पित समाचार पत्रिका

Subscribe  
& Get  
**amazon**  
Shopping  
Voucher

## Outlook LIMITED PERIOD Offer



### Outlook India Magazine Exclusive Offer



### Minimum Purchase Value Offer Pick Any Magazine



मुझे आपकी पत्रिका का सब्सक्राइबर बनना है

MY MAGAZINE CHOICE(s)	OUTLOOK	OUTLOOK TRAVELLER	OUTLOOK MONEY	OUTLOOK BUSINESS	OUTLOOK HINDI
1 YEAR	<input type="checkbox"/> 36 Issues ₹3,600   ₹2,599	<input type="checkbox"/> 6 Issues ₹900   ₹750	<input type="checkbox"/> 12 Issues ₹960 ₹849	<input type="checkbox"/> 12 Issues ₹1,200 ₹999	<input type="checkbox"/> 26 Issues ₹3,900 ₹1,149
2 YEARS	<input type="checkbox"/> 72 Issues ₹7,200   ₹4,999	<input type="checkbox"/> 12 Issues ₹1,800   ₹1,500	<input type="checkbox"/> 24 Issues ₹1,920 ₹1,699	<input type="checkbox"/> 24 Issues ₹2,400 ₹1,999	<input type="checkbox"/> 52 Issues ₹2,600 ₹2,199
3 YEARS	<input type="checkbox"/> 108 Issues ₹10,800   ₹7,199	<input type="checkbox"/> 18 Issues ₹2,700   ₹2,250	<input type="checkbox"/> 36 Issues ₹2,880 ₹2,299	<input type="checkbox"/> 36 Issues ₹3,600 ₹2,799	<input type="checkbox"/> 78 Issues ₹3,900 ₹3,199

Name: Mr/Ms \_\_\_\_\_

Designation \_\_\_\_\_ Organization \_\_\_\_\_

Address: \_\_\_\_\_ PIN: [ ] Email: [ ] Mobile: [ ] Ph (Res): [ ]

Please find enclosed Cheque/DD No. [ ] Date: [ ] favouring **OUTLOOK PUBLISHING (INDIA) PVT. LTD.** For ₹ [ ]

Please fill in this Order Form and mail it with your remittance to : Subscription Deptt. Outlook Publishing India Pvt Ltd, Building No. 266, Okhla Phase III Okhla Industrial Estate, New Delhi, 110020

Date: \_\_\_\_\_ Signature: \_\_\_\_\_

YOU MAY ALSO SUBSCRIBE

Terms & Conditions  
apply, for more detail  
visit our website

**LOG ON TO**  
[www.subscriptions.outlookindia.com](http://www.subscriptions.outlookindia.com)

**CONTACT US**  
[yourhelpline@outlookindia.com](mailto:yourhelpline@outlookindia.com)  
9266855636 / 9266855837

**SCAN QR CODE**  
FOR SUBSCRIPTIONS





गांधी जयंती

विशेष

# हरिजन अखबार की कहानी

गांधी की आलोचना करने वाली जमात पढ़-समझकर, सही चीर-फाड़ कर गांधी की आलोचना करे और ठीक लगे, तो उनके बारे में अनर्गल बातें करना बंद करे, लेकिन इसके लिए अध्ययन जरूरी है



अरविन्द मोहन

(वरिष्ठ पत्रकार, गांधी अध्ययन और कई चर्चित किताबों के लेखक)



**द** क्षिण अफ्रीका की प्रसिद्ध विद्वान इजावेल हॉफमेयर की गांधी के अखबार इंडियन ओफिनियन का शानदार अध्ययन गांधीज प्रिंटिंग प्रेस नाम की किताब में छपा है। गांधी की पत्रकारिता और संचार कौशल की चर्चा में अक्सर इस किताब की याद आती है। इससे भी बढ़कर इस किताब की याद कुछ भिन्न संदर्भों में गांधी के छुआछूत विरोधी आंदोलन और हरिजन प्रेम की कहानी पर चर्चा के दौरान आती है। गांधी के सामाजिक आंदोलन के इस पक्ष को बारीकी से समझने और उनके आंदोलन की ताकत को जानने और तब के राष्ट्रीय आंदोलन में उसके महत्व का अनुमान लगाने का सबसे अच्छा माध्यम उनका हरिजन नाम का अखबार ही है। यह तीन भाषाओं में निकला और उनकी हत्या के बाद भी काफी समय तक निकलता रहा। गांधी खुद अंग्रेजी अखबार का संपादन करते रहे और उनके सबसे भरोसे के विद्वान लोग गुजराती हरिजन बंधु और हिंदी हरिजन सेवक का संपादन उनकी देखरेख में करते रहे।

इस अखबार को देखना-जानना कई कारणों से महत्वपूर्ण है, जिसमें जाहिर तौर पर अछूतोद्धार को लेकर गांधी की सोच और प्राथमिकता है। गांधी ने जिस तरह उसे निकालने के लिए यंग इंडिया और नवजीवन का प्रकाशन रोक दिया, वह उनके आत्मविश्वास को भी बताता है। नमक

सत्याग्रह की सफलता और अंग्रेज शासकों के व्यवहार से उनके मन में आजादी को लेकर कोई गलतफहमी नहीं रही। उन्हें लग गया कि अब आजादी मिल जाएगी लेकिन अंग्रेज जितनी शरारत करेंगे, उसको संभालना जरूरी है। उसमें उनको दलितों का सवाल सर्वाधिक महत्व का लगा। यह अखबार उसी का प्रमाण है। अंग्रेजों ने मुस्लिम लीग, रजवाड़ों, हिंदूवादी जमातों समेत हर उस समूह के बीच काम शुरू किया, जिससे कांग्रेस कमज़ोर हो सकती थी, राष्ट्रीय आंदोलन कमज़ोर हो सकता था।

गांधी ने अछूतोद्धार को महत्व दिया, यह एक और संदर्भ से साफ होता है। यंग इंडिया और नवजीवन में राष्ट्रीय आंदोलन के साथ खादी संबंधी आलेख और खबरें बड़ी संख्या में छपती थीं। सूत वाली प्रतियोगिताओं को भी काफी जगह दी जाती थी। धीरे-धीरे राष्ट्रीय आंदोलन की जगह खादी ही उनका सबसे प्रमुख विषय बन गया था। लेकिन नई पत्रिकाओं में खादी भुला-सी दी गई, तो उसका मतलब प्राथमिकता बदलना भर था, खादी से मन भरना या उपेक्षा नहीं। असल में यह तब तक काफी मजबूत हो चुके खादी आंदोलन पर भरोसा जाताना था, जैसा कि राष्ट्रीय आंदोलन और आजादी मिलने के मामले में।

यह अखबार या यह पूरा प्रयोग गांधी के अछूतोद्धार (जिस पर आज

**स्वच्छ भारत:**  
बरसों पहले गांधी  
ने खुद शौचालय  
साफ करने की  
शुरुआत की थी



उसे दूर करने की जगह उसके शास्त्रीय पक्ष को साफ करके लोगों का मन बदलना चाहते थे। गांधी ही नहीं, उनके सारे बड़े मित्र और तब के दिग्गज भी इन सवालों पर अखबार में नियमित लिखा करते थे।

लेकिन इस मुहिम के प्राण गांधी ही थे और अखबार उनका प्राण बन गया था। सविनय अवज्ञा आंदोलन में गांधी, प्रकाशक स्वामी आनंद और शंकरलाल बैंकर के जेल चले जाने पर यंग इंडिया और नवजीवन का प्रकाशन बंद हो गया था। उन्होंने अपने पुराने अखबारों को दोबारा शुरू भी नहीं किया, जो आजादी की लड़ाई में उनका बड़ा हथियार बन गए थे। उनके प्रकाशन से जुड़े सारे लोग जेलों में डाल दिए गए थे। लेकिन दूसरे गोलमेज सम्मेलन के अनुभव और अंग्रेजी सरकार के बड़ज़ंत्रकारी मन को जानने के बाद गांधी को अछूतोद्धार से बड़ा कोई कार्यक्रम नहीं लगता था। हिंदू-मुसलमान सवाल पर उनकी तत्परता से जो परिणाम मिला, उसकी तुलना में जाति व्यवस्था की कुरीतियों वाले सवाल पर ज्यादा सफलता मिली। उसमें दलित समाज का भी बड़ा योगदान था, जो अंग्रेजी शासन से सबसे पहले से और सबसे मजबूती से लड़ता रहा था।

सबसे ज्यादा दिलचस्प पक्ष यह है कि सिर्फ दलितों के सवाल और सामाजिक मुद्दों को उठाने के बावजूद गांधी का अखबार हरिजन उनके अखबारों में सबसे हिट साबित हुआ। ज्यादा दिन नहीं हुए जब इसने दस हजार की प्रसार संख्या हासिल कर ली। यह तेरह हजार तक गई, जो गांधी के किसी भी अखबार की सबसे बड़ी प्रसार संख्या है। वैसे, यह दिलचस्प है कि इतनी ही संख्या से गांधी किस तरह देश और दुनिया तक अपना संदेश पहुंचा पाते थे और आज तक इन अखबारों में छपी एक-एक पंक्ति और तथ्य को ब्रह्मवाक्य माना जाता है। असल में यह गांधी का जटू था और आंदोलन की ताकत थी। तब साक्षरता भी बहुत कम थी और सस्ता

होते-होते भी अखबार आज के हिसाब से काफी महांग था। लोग मिल बांटकर पढ़ते थे, सामूहिक पाठ होता था और पढ़ने के साथ मन बनाने और अमल करने का काम भी होता था।

गांधी का यह अखबार 11 फरवरी 1933 को पुणे से प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशक अनंत पटकर्ण थे और संपादक संस्कृत के विद्वान आर.वी. शास्त्री थे। पर अखबार गांधी का ही था क्योंकि नब्बे फीसदी से ज्यादा सामग्री उनके नाम से छपती थी। दो साल बाद महादेव देसाई संपादक बने तब भी ज्यादा बदलाव नहीं आया। हिंदी के संपादक प्रसिद्ध लेखक विद्योगी हरि थे, जिनके सहयोगी हरिभाऊ उपाध्याय थे। तीनों अखबारों के हर शब्द पर गांधी की छाप दिखती है। बहुत बाद में गांधी का दिमाग कहे जाने वाले उनके साथी किशोरलाल मशरुलाला को तीनों अखबारों का संपादक बनाया गया और आखिर में उन्होंने गुजरात विद्यापीठ को संभालने वाले गणित और दर्शन के जानकार मगनभाई देसाई को अखबार का जिम्मा सौंपा।

हरिजन के पहले अंक में सबसे ऊपर कविगुरु रवि बाबू की एक कविता थी और पहले पन्ने पर हरिजन सेवक संघ के सचिव ठक्कर बप्पा की रिपोर्ट थी कि कौन-कौन से मंदिरों के द्वारा अछूतों के लिए खुल गए हैं, कहां-कहां कुएं और तालाब सबके लिए उपलब्ध हैं, किस-किस जगह अछूतों के लिए स्कूल बने हैं (स्कूल हरिजन सेवक संघ ने बनवाए थे)। यह रिपोर्टिंग लगातार बाद के अंकों में भी चलती रही थी और बाद में जब विद्योगी हरि सचिव बने, तो उनके जिम्मे यह काम रहा। पहले अंक की सूचना के अनुसार सर्वेंट्स ऑफ अनटचेवल सोसायटी ने इसका प्रकाशन किया। अखबार आठ फुलस्केप पन्नों का



**गांधी के सामाजिक आंदोलन के पक्ष को समझने और आंदोलन की ताकत जानने और अनुमान लगाने का सबसे अच्छा माध्यम हरिजन अखबार ही है**

के सचेत दलित नाराजगी जताते हैं) कार्यक्रम को बताने का सबसे बड़ा माध्यम था लेकिन यह गांधी की पत्रकारिता का भी सबसे प्रभावी और बड़ा प्रयोग था। गांधी की भागीदारी उनके सभी अखबारों में भरपूर थी लेकिन इसमें शायद सबसे ज्यादा थी। बीच आजादी की लड़ाई में शुरू होने पर भी इसने राजनैतिक स्वर मद्दिम ही नहीं किया, बल्कि लगभग भुला दिया। उसके लिए छुआछूत, मंदिर प्रवेश, सार्वजनिक कुएं-तालाब तक अछूतों की पहुंच, दलित बच्चों की शिक्षा, रोजगार और मान-सम्मान ही एकमात्र प्राथमिकता रही। हर अंक में हरिजन सेवक संघ के सचिव ठक्कर बापा की रिपोर्ट हर क्षेत्र में होने वाली प्रगति की सूचना देने के साथ उसकी कमी-बेसी को भी रेखांकित करती थी। गांधी खुद शास्त्रों के अध्ययन और संस्कृत विद्वानों से चर्चा के बाद छुआछूत के हर पहलू पर लिखते थे और अपनी मूल धारणा को आगे बढ़ा रहे थे कि छुआछूत शास्त्रोक्त नहीं है। यह मामला धर्म और नैतिकता से जुड़ी था इसलिए गांधी का नून बनाने या सरकारी मदद से



गांधी जयंती

विशेष



**कविगुरु और  
महात्मा:  
शंतिनिकेतन में रवि  
बाबू के साथ गांधी  
और कल्पना बाबा**

था। अखबार सासाहिक था। हिंदी और गुजराती अखबारों की फ्रीक्वेंसी अलग-अलग थी, पर सबका स्वर एक था।

आज के हेसाब से पहले अंक की सबसे बड़ी सामग्री बाबा साहेब का बयान था। गांधी ने हरिजन के प्रकाशन के अवसर पर डॉ. आंबेडकर से संदेश मांगा था। बाबा साहेब का जबाब था कि वे खुद को कोई संदेश देने लायक (बड़ा) नहीं मानते। सो, उन्होंने जाति व्यवस्था की आलोचना और उसकी समासिकी की इच्छा वाला एक छोटा बयान दिया। गांधी ने उसे प्रमुखता से छापने के साथ ही जाति व्यवस्था को लेकर अपनी राय बताने वाला लंबा लेख जबाब के रूप में छापा। उसमें छुआछूत पर फोकस था और उसे पूरे हिंदू समाज के लिए अभिशाप बताया गया था। एक और लंबा लेख छुआछूत पर ही था।

लेकिन उस अंक में गांधी ने हरिजन नाम और अंग्रेजी में छापने की मजबूरी को लेकर जो सफाई दी, वह पर्याप्त महत्वपूर्ण है। आज बहुत सारे लोग हरिजन कहना और कहलाना पसंद नहीं करते। लेकिन गांधी के छुआछूत विरोधी और जाति-व्यवस्था की बुराइयों को दूर करने के आंदोलन में ज्यादातर समय यही पद इस्तेमाल हुआ है। यह पद

भक्त कवि नरसी मेहत के एक भजन से लिया गया। अब यह भी पता चला कि अस्सी के दशक से जो नया दलित आंदोलन उभरा है, उसे यह पसंद नहीं है। जब यह उन्हें ही नापसंद हो, तो दूसरों को कहने का अधिकार भी नहीं रहता। वैसे भी कानूनी जरूरत वाले स्थानों पर अनुसूचित जाति जैसा पद काफी पहले से चल रहा है। गांधी ने अहिंदी भाषी समाज तक बात पढ़ने वाले के तर्क पर उसके अंग्रेजी प्रकाशन को सही ठहराया था।

दूसरे अंक का फोकस मद्रास असेंबली में पेश कुआछूत संबंधी बिल की चर्चा था, जिसे जयकर ने पेश किया था। इस अंक में कलकत्ता की दलित बस्ती में काम की रिपोर्ट वसंत मोरारका ने दी थी। बप्पा की

सामान्य रिपोर्ट 'वीक टू वीक' भी इस पर थी। अंग्रेजी शासन की नीतियों पर अलग से आलोचना 'इज दिस ब्रदरलीनेस' शीर्षक से थी और गांधी के साथ पंडित मालवीय के पत्राचार को प्रकाशित किया गया था, जिसमें छुआछूत की शास्त्रीय वैधता न होने की बात प्रमुखता से थी। निष्कर्ष 'असहमति पर सहमति' शीर्षक से दिया गया था। गांधी के सवाल भी महत्वपूर्ण हैं। गांधी ने मंदिर प्रवेश और वर्णाश्रम नाम के आलेख में लिखा थी है। सामग्री के मापले में पहले अंक जैसा ही दबदबा बनाए रखे हुए था।

बाद के अंकों में लिखने वालों की बड़ी सूची थी, जिसमें रवींद्रनाथ ठाकुर, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जैसे बड़े लोग शामिल थे। यह गांधी के आग्रह का ही नतीजा होगा कि छुआछूत मुख्य वैचारिक चर्चा का केंद्र बन गया था। गांधी पर ऐसा भूत चढ़ा कि उन्होंने बिहार भूकंप को वहां के समाज द्वारा बरते जाने वाले छुआछूत से जोड़ दिया। इस कथन पर रवि बाबू भड़के थे और दोनों के बीच लंबा पत्राचार चला। लेखक सूची के दिलचस्प नामों में टुकड़े जी महाराज जैसे संन्यासी का भी आलेख है, जो गांधी के आश्रम में रहे, वहां की दिनचर्या को अपनाया और फिर अपने

भक्तों के बीच प्रचार किया। वे इतना बदले कि भूदान में उनके चलते हजारों एकड़ जमीन दान में मिली।

यह आलेख उस पत्रिका का व्यवस्थित अध्ययन नहीं है। यह सिर्फ एक परिचय है। उसके प्रभाव, विषय-वस्तु और यहां दिखी खुद गांधी की सौच को लेकर गांधी अध्ययन होना चाहिए। जाति-व्यवस्था और दलित सवालों पर गांधी की राय और उनके आंदोलन के सम्बन्ध मूल्यांकन के लिए यह न्यूनतम जरूरत है। जरूरी नहीं कि उसे अकादमिक जगत के लोग या गांधीवादी जमात के लोग ही करें। बेहतर हो कि गांधी की आलोचना करने वाली जमात पढ़-समझकर, सही चीर-फाड़ कर गांधी की आलोचना करे। ठीक लगे, तो उनके बारे में अनर्गत बातें बंद करें। लेकिन इसके लिए अध्ययन जरूरी है।

**हरिजन के पहले अंक  
में कविगुरु रवि बाबू की  
कविता थी और हरिजन  
सेवक संघ के सचिव  
ठक्कर बप्पा की रिपोर्ट  
थी कि कौन से मंदिर  
अछूतों के लिए खुल गए**



गांधी जयंती  
आनंद वन अमृत वर्ष

# पचहतर बरस के प्रयोग

बाबा आमटे और उनके परिवार ने आनंदवन में लिखी सेवा और श्रम की रामायण, गांधी के गांवों को आत्मनिर्भर बनाने के सपने को चंद्रपुर में साकार कर दिखाया



**सेवा व्रत:** बाबा आमटे, साधना ताई और उनके बेटे (फाइल फोटो)



**कृपाशंकर चौबे**

(महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,  
वर्धा में प्रोफेसर)

से दत्तपुर जाकर प्रशिक्षण पूरा किया। सेवाग्राम में भी कुष्ठ रोगियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था थी। बाबा आमटे ने वहाँ भी दो माह का प्रशिक्षण पूरा किया। पर कुष्ठ रोग संबंधी अपने ज्ञान से बाबा आमटे को संतोष नहीं था। इसलिए उन्होंने कलकत्ता के स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन में अल्पावधि डिप्लोमा में प्रवेश लिया। वहाँ उन्होंने खुद में कुष्ठ जीवाणुओं को इंजेक्ट कराया। उन पर दो परीक्षण किए गए। उनके शरीर में पहले मृत, उसके बाद जीवित कुष्ठ जीवाणु प्रविष्ट किए गए। खुशकिस्मती से दोनों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

बाबा आमटे ने 1949 में महारोगी सेवा समिति की स्थापना की और उसका पंजीकरण कराया। इसके बाद उन्होंने मध्यप्रांत सरकार से जमीन देने के लिए अर्जी दी। सरकार ने बरोरा से चार किलोमीटर दूर नागपुर-चंद्रपुर मार्ग पर पचास एकड़ जंगल की जमीन आवंटित कर दी। बाबा आमटे अपनी पत्नी साधना, दोनों बेटों, विकास और प्रकाश, छह कुष्ठ मुक्त रोगियों, एक लंगड़ी गाय और चौदह रुपये की कुल जमा पूँजी के साथ उस जंगल में पहुंचे। उसे नाम दिया आनंद वन। बाबा आमटे और उनके सहयोगियों ने कुछ खोदकर पीने-नहने आदि के लिए पानी की व्यवस्था की। कुएं के पास झोपड़ियां बनीं। खेती लायक जमीन तैयार की गई। जंगली जानवरों के प्रकोप से बचने के उपाय किए गए। बाबा आमटे रोगियों के साथ गांव के बाजार में जा बैठते ताकि उन्हें देखकर नए कुष्ठ रोगी आएं। बाबा आमटे ने तथ किया कि कुष्ठग्रस्तों के लिए काम करने के बजाय कुष्ठग्रस्तों के साथ वे काम करेंगे।

विनोबा भावे ने 21 जून, 1951 को आनंद वन आश्रम का उद्घाटन किया। इस नाते आनंद वन आश्रम का यह अमृत वर्ष है। उद्घाटन के अवसर पर विनोबा ने कहा था, “आनंद वन को देखकर मेरा जी जुड़ा

**बा**बा आमटे और उनके परिवार ने महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले के बरोरा स्थित आनंद वन आश्रम में कुष्ठ रोगियों, दिव्यांगों और बेसहारा लोगों की सेवा की मिसाल पेश की है। आनंद वन आश्रम की स्थापना के पीछे की कहानी बेहद मार्मिक है। बीसवीं शताब्दी में चालीस के दशक में बरोरा नगरपालिका का उपाध्यक्ष रहते हुए बाबा आमटे ने भूगियों की समस्या देखी, तो सातभर खुद सिर पर मैता ढोया। उन्हीं दिनों सङ्क पर तुलसीराम नाम के एक कुष्ठरोगी को तड़पते देख, उनका मन काप उठा। उसके न हाथ-पैर थे, न नाक-आंख। बाबा ने उसी क्षण अपना जीवन कोढ़ियों और बेसहारों की सेवा-सुश्रुता में लगाने का संकल्प किया और कुष्ठ रोग से संबंधित जानकारी एकत्र करना प्रारंभ कर दिया। उन्होंने कुष्ठ रोग से संबंधित किताबों का अध्ययन किया। बाबा आमटे ने दत्तपुर के कुष्ठ धाम में कुष्ठ सेवा के इच्छुक कार्यकर्ताओं के लिए उपलब्ध प्रशिक्षण की सुविधा का लाभ उठाया। बाबा आमटे ने सप्ताह में तीन दिन बरोरा से वर्धा और वर्धा



## गांधी जयंती

### आनंदवन अमृत वर्ष

गया। इसको दिया यह नाम पूरी तरह सार्थक है। रोगियों ने अपने परिश्रम से जीवन में आनंद निर्मित किया। उन्होंने भिक्षा पात्र के स्थान पर श्रम का महत्व समझा, श्रम में छिपे श्रीराम को पहचाना। यह महारोगियों का निवास केंद्र नहीं है। यहां परिश्रम और सेवा की रामायण लिखी जा रही है।'

धीरे-धीरे आनंद वन में कुष्ठ मुक्त रोगियों के श्रम से कुछ और झोपड़ियां खड़ी हो गईं, खेत में फसलें लहलहाते लगीं। आनंद वन में तजा सब्जियां और दूध, खपत के बाद भी बचने लगे। पर कुष्ठ के प्रति भय एवं घृणा के कारण लोगों ने दूध या सब्जी खरीदना तो दूर, छूने से भी इंकार कर दिया। फिर कुछ पढ़े-लिखे ग्राहकों ने फहल की। दूध और सब्जी की गुणवत्ता सबको ललचाती थी। देखा-देखी दूसरे भी लेने लगे। इस तरह मांग बढ़ने लगी। इससे कुष्ठ-मुक्तों का काम के प्रति उत्साह दोगुना हो गया। आनंद वन में बाबा आमटे ने पंजाब एवं हरियाणा से महंगी गाएं मंगड़ी। वे गाएं बहुत तगड़ी और ऊंची थीं। दूध भी बहुत देती थीं। महा रोगियों से ढुकने का काम नहीं लिया जा सकता था, दूध ढूने वाला कोई मिलता नहीं था। गायों के थन सूजकर कड़क होने लगे। किसी प्रकार उनके पैर बांधकर बाबा आमटे और साधना ताई ने उन्हें ढुना शुरू किया। साधना ताई ने कई बार गायों की लांते खाई। कभी-कभी गाएं दूध की बालटी लुढ़का देती। साधना ताई उन गायों के सामने बौनी लगती। उनके हाथों-कंधों में वैसे ही बहुत तकलीफ थी। आखिर स्कूल पर बैठकर वे यह काम करने लगीं। धीरे-धीरे बाजार में आनंद वन की गायों के दूध का वर्चस्व कायम हो गया।

सन 1954 से आनंद वन हर तरह से फलने-फूलने लगा। तेल के कोल्हू, डेयरी तथा खेती शुरू हुई। कुष्ठ रोगियों ने अपने श्रम से आनंद वन में 35 कुष्ठ खोदे। आनंद वन का कायाकल्प हो गया। हरे-भरे लहलहाते खेत, सब्जियों की घनी क्यारिया, फल-फूलों से लादे वृक्ष, कुष्ठ रोगियों के पुनर्वास के लिए मूलभूत सुविधाएं आनंद वन आश्रम में उपलब्ध हो गईं। आनंद वन ने कुष्ठ रोगियों को मेहनत करना सिखाकर उनके व्यक्तित्व को निखारा।

बाबा आमटे चंद्रपुर जिले के छोटे-छोटे गांवों में कुष्ठ रोगी तलाशते। उन्होंने 'ट्रेस एंड ट्रीट' पद्धति अपनाई। कुष्ठ रोगी को ढूँढ़-ढूँढ़कर उपचार करने की बाबा आमटे की पद्धति प्रभावी सिद्ध हुई। रोगियों को उनके घर पर ही बाबा आमटे इलाज के लिए प्रेरित करते। 1957 में आनंद वन के तीस मील के दायरे में बाबा आमटे ने कुष्ठरोगियों के 11 सासाहिक उपचार केंद्र स्थापित किए। बाबा हर रोज सुबह तीन बजे उठ जाते और चार बजे तैयार होकर टिफिन लेकर साइकिल से किसी एक केंद्र की ओर निकल जाते। केंद्र से लौटने पर बाबा आमटे आनंद वन में कुष्ठ रोगियों की ड्रेसिंग करते। आनंद वन में कुष्ठ ग्रस्त निरंतर आते, इलाज करते और ठीक हो जाने पर विभिन्न कार्यों में जुट जाते। बाबा आमटे ने कुष्ठ मुक्त लोगों को ही कुष्ठ रोगियों की सेवा करना सिखाया। धीरे-धीरे पुराने रोगी ठीक होते जाते और नए रोगियों की सेवा में जुट जाते। कुष्ठ रोगी के रूप में दाखिल हुआ व्यक्ति दो-तीन वर्षों बाद परिचारक बन कर काम करने लगता।

आनंद वन में कुष्ठ रोगियों का इलाज उसके स्थापना काल से ही चल रहा है। 1971 में बाबा आमटे के दोनों पुत्र विकास और प्रकाश ने एम्बीबीएस की पढ़ाई पूरी करने के बाद आनंद वन के कुष्ठ रोगियों के लिए बने अस्पताल की व्यवस्था संभाली। महारोगी सेवा समिति के इस अस्पताल में बाह्य रोगी विभाग (ओपीडी) में रोज सैकड़ों मरीज आते हैं। जो गंभीर रूप से अस्वस्थ हैं, उन्हें अस्पताल में भर्ती कर उनका इलाज किया जाता है। यहां पुरुष और स्त्री वार्ड अलग हैं। अस्पताल का नाम अब सीता रतन लोप्रेसी हॉस्पिटल है। आनंद वन में अब तक नौ लाख कुष्ठ रोगियों का मुफ्त इलाज हो चुका है।

1961 में आनंद वन में प्राथमिक विद्यालय की स्थापना हुई। उच्च



प्राथमिक विद्यालय भी खुला। 1966 में बाबा आमटे ने दृष्टिहीन बच्चों के लिए आनंद अंध विद्यालय स्थापित किया। उसे वे 'प्रकाश की शाला' कहते थे। आसपास के देहात के छह से चौदह वर्ष के बच्चों के लिए ब्रेल पद्धति से वहां शिक्षा देने की जैसे ही घोषणा हुई, आनंद वन में भीड़ जमा हो गई। इस स्कूल में सूत-कताई, बुनाई, संगीत आदि भी सिखाया जाने लगा। मूक बधिर विद्यालय भी खुला। आनंद वन में बाबा आमटे ने नेत्रहीन, मूक-बधिर छात्रों के लिए छात्रावास, विकलांगों के रहने के लिए आवास बनाया।

आनंद वन में माध्यमिक विद्यालय स्थापित हुआ। वरोरा के ग्रामीण क्षेत्र में कोई कॉलेज नहीं था। आगे की पढ़ाई के लिए चंद्रपुर या नागपुर जाने के सिवा यहां के छात्रों के पास कोई उपाय नहीं था। बाबा आमटे ने कुष्ठ मुक्त हुए रोगियों के श्रम से कॉलेज का निर्माण कराया। 1964 के शिक्षा-सत्र के लिए आनंद निकेतन महाविद्यालय में कला, वाणिज्य एवं विज्ञान की पढ़ाई शुरू हुई। कॉलेज तो शुरू हो गया लेकिन अध्यापकों के रहने-खाने की कोई सुविधा नहीं थी। आनंद वन में साधना ताई ने सबका इंतजाम किया। एक महीने बाद रसोइया मिला। तब तक ताई को ही अन्पूर्णी की भूमिका निभानी पड़ी। 1965 में आनंद वन में कृषि महाविद्यालय की स्थापना हुई। महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए बड़ा सा खेल का मैदान बना।



**असहाय सेवा:** आनंद वन में चिकित्सालय, वृद्धाश्रम और दिव्यांगों की पाठशाला

एक दिन आनंद वन में कोई दो दिन का अनाथ शिशु ले आया। बाबा आमटे तथा साधना ताई ने इस चुनौती को स्वीकार किया। ताई ने बच्ची का नाम धरती रखा। धरती से आनंद वन और भी खिल उठा। इस प्रकार आनंद वन में बच्चों का गोकुल बस गया। बेसहारा वृद्ध महारोगियों के रहने के लिए स्नेह छाया बना। स्नेह छाया में लगभग 200 लोग रहते हैं। 1979 में वयस्क रोगियों के लिए उत्तरायण की स्थापना हुई। अकेले रहने वाली महिलाओं, विधवाओं के लिए आपुलकी बना। अभी वहाँ 450 महिलाएं रहती हैं। साधना ताई ने कुष्ट-मुक्तों की शादी की कल्पना की। 1968 में विवाहित रोगियों के लिए सुख सदन बना। तुकड़ोजी महाराज के हाथों 17 नवंबर 1962 को मुक्ति सदन का उद्घाटन हुआ। 1970 में दिव्यांगों के पुनर्वास के प्रशिक्षण के लिए संधि निकेतन बना। 1976 में मुक्तांगन का निर्माण हो गया, जहाँ आनंद वन वासियों के सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। 1981 में विवाहित तथा अविवाहित रोगियों के लिए कृषि निकेतन बना।

आनंद वन आश्रम में अभी लगभग पांच हजार लोग रहते हैं। वे एक साथ भोजन करते हैं। रसोई की व्यवस्था महिलाएं संभालती हैं। बर्तन मांजने, धोने में सभी सहयोग करते हैं। अतिथियों के लिए भोजन की अलग व्यवस्था की जाती है। आनंद वन के संधि निकेतन में दृष्टिहीन, मूक-बधिर, विकलांग, मंदबुद्धि, दुर्घटनाग्रस्त, पोलियो पीड़ित सभी तरह के लोग मिलजुल कर काम करते हैं। आनंद वन में जाति, धर्म की दीवार ढह जाती है। सभी परिवार की तरह रहते हैं।

आनंद वन में स्वावलंबन का सिद्धांत व्यवहार में बरता जाता है। आनंद वन 450 एकड़ में फैला हुआ है। यहाँ कई योजनाएं चल रही हैं। कुष्ट मुक्त हुए रोगी और विकलांग श्रम के बदले हजारों रुपयों की कमाई करते हैं। खेती-बाड़ी, कपड़ों की बुनाई, शुभकामना कार्ड तैयार करना, विविध कलात्मक वस्तुएं उनकी कमाई का जरिया है। गो-पालन, कृषि विकास महत्वपूर्ण आधार है। बिना गोवर खाद के भूमि की उर्वरता बनाए रखना असंभव है। इसलिए डेयरी का विकास किया गया है। इस डेयरी के कारण ही सैकड़ों लोगों के भोजन बनाने के लिए आवश्यक बायोगैस प्लॉट बनाना संभव हो पाया है। आनंद वन गो रक्षा के संबंध में भी आगे है। आनंद वन में जिस प्रकार कुष्ट रोगी, विकलांग, दृष्टिहीनों को प्रेम से स्वीकार किया जाता है, उतने ही प्रेम से दान की बूढ़ी, विकलांग गायों को भी स्वीकार किया जाता है।

बाबा आमटे की महारोगी सेवा समिति ने आनंद वन से बाहर भी केंद्र खोलने शुरू किए हैं। 1957 में बाबा आमटे ने कुष्ट रोगियों के पुनर्वास के लिए नागपुर के पास 70 एकड़ क्षेत्र में अशोक वन की स्थापना की।

अशोक वन 102 एकड़ क्षेत्र में फैला है, जहाँ खेती, डेयरी की व्यवस्था में कुष्ट रोगी सहयोग करते हैं। बाबा आमटे ने 1967 में 1325 एकड़ क्षेत्र में श्रमदान का महत्व सिखाने के लिए चंद्रपुर जिले के तडोबा जंगल में सोमनाथ आश्रम की स्थापना की। यहाँ कुष्ट मुक्त हो चुके लोग खेती आदि में श्रमदान कर गरिमापूर्ण जीवन जी रहे हैं। 1973 में गढ़निरौली जिले के हेमलकसा में लोक बिरादरी प्रकल्प शुरू हुआ, जहाँ बाबा आमटे के छोटे पुत्र प्रकाश और उनकी पत्नी मंदा ने कुष्ट रोगियों, गरीब आदिवासियों के अलावा अस्वस्थ जंगली जानवरों की चिकित्सा शुरू की। 1976 में वहाँ आदिवासी बच्चों की शिक्षा के लिए लोक बिरादरी प्रकल्प ने स्कूल की स्थापना की। मानसून में बाढ़ के कारण हेमलकसा आना कठिन हो जाता था, इसलिए नागेपल्ली गांव से तीन किलोमीटर दूर 20 एकड़ जमीन लेकर वहाँ खेती और पशु पालन शुरू किया गया। नागेपल्ली आश्रम पूरी तरह आत्मनिर्भर है, जो हेमलकसा आश्रम के सहयोगी की भूमिका निभाता है। आनंद वन आश्रम के 28 उप केंद्र हैं।

आज भी आनंद वन में विकास आमटे वहाँ रहकर चौबीस घंटे काम करते हैं। रोगी इलाज के लिए टालमटोल करते हैं, उनका उत्साह बनाए रखने और रोगमुक्त होने के बाद दूसरे काम में शामिल करने के उपाय किए जाते हैं। सेवा के साथ ही वहाँ का सांस्कृतिक चेतना पर भी ध्यान दिया जाता है। विकास आमटे ने आनंद वन आश्रम में रहने वाले लोगों के भीतर छिपी संगीत प्रतिभा निखारने के लिए 2002 में स्वरांनंद वन नाम से ऑक्सेस्ट्रा की स्थापना की। इस ऑक्सेस्ट्रा में आश्रम के कलाकार अपनी संगीत प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। 2009 में आनंद वन में संगीत विद्यालय की स्थापना हुई।

आनंद वन बहिष्कृत लोगों का आसारा भर नहीं है, बल्कि यह कुष्ट रोगियों, विकलांगों, मंदबुद्धि लोगों, बूढ़ों और बेसहारा बच्चों के लिए घर है। आनंद वन बताता है कि वंचितों के लिए काम कैसे होना चाहिए। और पीड़ितों को मनुष्य समझा जाना चाहिए। बाबा आमटे की उपलब्धि सिर्फ कुष्ट रोगियों की सेवा नहीं है, बल्कि समाज से तिरस्कृत लोगों को श्रमदान सिखाना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है।

यहाँ रहने वाले हजारों लोग अपनी जरूरतों के लिए बाहरी दुनिया पर आक्षित नहीं हैं। ये लोग अपने श्रम से बाहर की दुनिया की जरूरतों की पूर्ति करते हैं। जिन्हें देखकर सभ्य समाज बिदकता है, उन कुष्ट रोगियों ने खेती, राजगीरी, कर्ताई-बुनाई समेत कई काम में योगदान देकर परस्थिति जंगल को खुबसूरत जगह में बदल दिया है। यहाँ पर बाबा आमटे, साधना ताई और शीतल की समाधि है, जिसे श्रद्ध वन कहा जाता है। साथ ही उन लोगों के भी स्मारक हैं, जिनसे बाबा आमटे प्रभावित रहे। इनमें ईसा मसीह, महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ ठाकुर, भगत सिंह, राजगुरु और विनोबा भावे हैं।

गांधीजी ने गांवों को आत्मनिर्भर बनाने का जो सपना देखा था, उसे चंद्रपुर में बाबा आमटे ने साकार कर दिखाया। बाबा आमटे के काम से गरीबों-असहायों के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदला है। इस तरह के समाज की रचना के लिए साधना करनी पड़ती है। अंग्रेज सिपाहियों से एक भारतीय लड़की की रक्षा करने पर महात्मा गांधी ने उन्हें निर्भय साधक की संज्ञा दी थी।

बाबा को रीढ़ की हड्डी की पुरानी बीमारी थी। वे बैठ नहीं सकते थे। या तो लेटे रह सकते थे या खड़े। यह शारीरिक व्याधि कभी उनकी देश के नवनिर्माण की सक्रियता को क्षीण नहीं कर पाई। उसी अवस्था में उन्होंने दो बार युवा शक्ति को रचनात्मक मोड़ देने के उद्देश्य से 'भारत जोड़ो' यात्रा की थी। 1981-82 में यह यात्रा कन्याकुमारी से कश्मीर और 1988-89 में इटानगर से ओखा तक हुई थी। बाबा आमटे और साधना ताई के सेवा कार्यों को उनके पुत्रों विकास और प्रकाश आमटे ने विस्तार दिया और विनोबा भावे के उस कथन को सच साबित किया है कि यहाँ सेवा और श्रम की रामायण लिखी जा रही है।

# तरप्तापलट का जवां तेवर

ताजा-ताजा नेपाल और इसके पहले के वर्षों में बांग्लादेश और श्रीलंका में समूचे सत्ता प्रतिष्ठान के खिलाफ नवयुवा वर्ग या जेन जी में बगावत और उसमें सोशल मीडिया की महती भूमिका आंदोलनों की नई बानगी



**रोष का चेहरा:**  
नेपाल के काठमांडू  
में जेन जी ने झाँड़ा  
किया बुलंद



## G हरिमोहन मिश्र

**आ**धी सदी पीछे मुड़िए, तो कवि धर्मवीर भारती की 'मुनादी' याद आएगी "खल्क खुदा का, मुल्क बादशाह का...बहतर बरस का एक बूढ़ा सड़कों पर सच बोलता घूम रहा है..." वह बूढ़ा यानी लोकनायक जयप्रकाश नारायण 1973 में सरकारी तंत्र की निरंकुशता, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, शिक्षा की दुर्दशा, महंगाई से लोगों को पस्त देख 'यूथ फॉर डेमोक्रेसी या लोकतंत्र के लिए युवा' पर्चा निकालते हैं और उससे पहले गुजरात और फिर बिहार के छात्र और युवा

इस कदर उद्दीपित होते हैं कि पूरे देश में नई बयार बहने लगती है और आखिर में बाकई सत्ता पलट जाती है। मिसालें और भी हैं। आज फिर समूचे दक्षिण पूर्व एशिया में उन्हीं युवाओं या 18-25 वर्ष उम्र की पीढ़ी बगावती तेकर के लिए सुखियों में हैं, जिन्हें आज जेन जी कहा जाने लगा है, खासकर इसलिए कि वह नए दौर के आजाद सोशल मीडिया के हुनर के साथ ही पली-बढ़ी है। वही उसका संवाद, जुटान, बगावत सबका अन्वय बन गया है। इसलिए हाल में नेपाल का तखापलट उसके उग्र जोर से हुआ, तो हर जगह उसकी ओर विपक्ष उम्मीद से और सत्तारूढ़ खौफ की नज़रों से देखता लगने लगा है।

अभी एकदम ताजा-ताजा अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने 50 फीसद टैरिफ के अलावा वहां आप्रवासियों के लिए एचबी वीजा पर शुल्क सालाना 6,000 डॉलर से बढ़ाकर 1,00,000 डॉलर कर दिया और सऊदी अरब तथा पाकिस्तान के बीच रक्षा समझौता हुआ, तो प्रधानमंत्री नेंद्र मोदी ने 21 सितंबर की शाम, ऐन नवरात्रि के पहले राष्ट्र को संबोधित किया। उनके संबोधन में ज्यादा जिक्र मध्यवर्ग और नव मध्यवर्ग के युवाओं की ओर ही था, मानो वे उन्हें निराश-हताश न होने का ढांचा बना रहे हों। उसके पहले 18 सितंबर को लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता, कांग्रेस के राहुल गांधी कर्नाटक की आलंद विधानसभा क्षेत्र में 2023 के चुनावों

में वोट कटवाने के किसी केंद्रीय तंत्र के इस्तेमाल का आरोप लगाने के बाद जेन जी से अधील करते हैं। उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया, 'देश के युवा, देश के छात्र, देश के जेन जी संविधान बचाएंगे। लोकतंत्र की रक्षा करेंगे और वोट चोरी को रोकेंगे। मैं उनके साथ हमेशा खड़ा हूं।' इस जिक्र से सत्तारूढ़ भाजपा में तीखी प्रतिक्रिया हुई।

दरअसल, नेपाल में जिस तरह जेन जी ने समूची व्यवस्था का सिरे से तखापलट कर दिया, वह हैरान करने वाला है। फिर, जिस तरह युवाओं ने सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया, वह बीते कई वैश्विक आंदोलनों में सोशल मीडिया के इस्तेमाल से दो कदम आगे का था। ऐसे में अब यह बहस आम है कि क्या आने वाले वक्त में सोशल मीडिया सत्ता बनाने या गिराने का अमोघ अस्त्र बन सकता है? इधर कुछ चुनावों, खासकर अमेरिका में उसकी विवादस्पद भूमिका पहले ही चर्चा में है।

### बढ़ता सिलसिला

लेकिन दक्षिण पूर्व एशिया, खासकर भारतीय उपमहाद्वीप में तो ऐसा लगता है कि नौजवानों ने अधबीच में संसदीय प्रणाली की निर्वाचित सरकारें पलटने का एक अजीब ताकतवर सिलसिला ढूँढ़ निकाला है, जो चुनावी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर नए सवाल खड़ा करता है। ऐसा नहीं है कि इतिहास में इसकी मिसालें नहीं हैं,



### सोशल मीडिया से जुड़े प्रमुख आंदोलन



#### 2009: ईरान, ग्रीन मूवमेंट

एक्स और फेसबुक के जरिए चुनावी धांधली के खिलाफ युवाओं का विरोध संगठित हुआ

#### 2010: ट्यूनीशिया, जैस्मीन क्रांति

फेसबुक-एक्स पर भ्रष्टाचार और बेरोजगारी के खिलाफ जनआंदोलन भड़का

#### 2011: मिस्र, तहरी चौक आंदोलन

फेसबुक पेज 'वी आर ऑल खालिद सैद' ने युवाओं को जोड़ा, सरकार गिर गई और नई व्यवस्था कायम हुई

#### 2011: स्पेन, इंडिगानाडोस मूवमेंट [15-एम]

ट्वीटर पर पोस्ट और ब्लॉग्स से बेरोजगारी और अर्थिक असमानता के खिलाफ विरोध फैला और जोरदार हो उठा

#### उखाड़ फैक्ट:

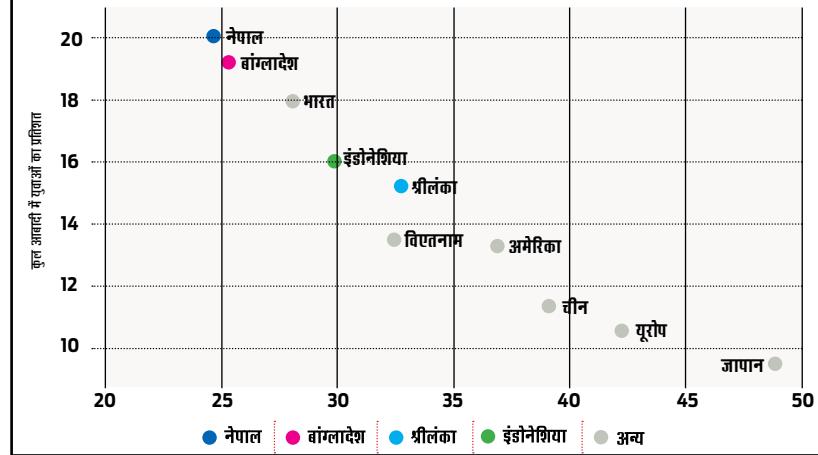
विद्रोह की आग  
ऐसी फैली की  
सत्ता हिल गई





## कुछ अहम देशों की आबादी में युवा का अनुपात

नवयुवा यानी 15-24 वर्ष आयु वर्ग की कुल आबादी में हिस्सेदारी का मोटा आकलन, यही आबादी सोशल मीडिया के अभियानों से जुड़ती है और सरकारों के खिलाफ गुरुसे को सङ्क पर उतार रही है



स्रोत: 2023 की आबादी के आधार पर संयुक्त राष्ट्र विश्व जनसंख्या आकलन (2024), संयुक्त राष्ट्र 15-24 वर्ष की आयु को युवा मिनता है

मगर आज की ये मिसालें और उनका लगभग सालाना सिलसिला नई कहानी कहती लगती हैं। गौर करें:

**जुलाई 2022:** श्रीलंका में भारी आर्थिक संकट और पेट्रोल, डीजल, बिजली, दवाई, खाद्य वस्तुओं की तंगी चरम पर पहुंची, तो नौजवान नई टेक्नोलॉजी की भाषा पिंग जुटान से अरागालय (संघर्ष) के लिए सड़कों पर उत्तर आए। उनका हुजूम सत्ता-केंद्रों गश्टपति तथा प्रधानमंत्री के सचिवालयों की ओर बढ़ा और धावा बोल दिया। सत्तारूढ़ राजपक्षे परिवार देश छोड़ भागने पर मजबूर हुआ और अंतरिम सरकार बनी।

**अगस्त 2024:** बांग्लादेश में चिंगारी तो सरकारी नौकरी में वहां सतर के दशक के स्वतंत्रता संग्राम के

सेनानियों के लिए आरक्षण बढ़ाए जाने की घटना बनी। यह धारणा बनी कि आरक्षण अमूमन सत्तारूढ़ शेख हसीना की आबादी लोग से जुड़े लोगों के लिए है। इससे बेरोजगारी से पस्त विश्वविद्यालय छात्र संघ अंदोलन पर उत्तर आए। पहले से चुनावी धांधली के आरोपों में विरी सरकार की ढाका पुलिस ने युवाओं के जलूस पर अंधारुध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसमें 100 से ज्यादा हताहत हुए। फिर नौजवानों का गुस्सा सत्ता-ठिकानों, संसद भवन, चुनाव आयोग पर फूटा। प्रधानमंत्री शेख हसीना को फटाफट फौजी विमान से भारत भागना पड़ा।

**सितंबर 2025:** नेपाल में प्रधानमंत्री खड़ग प्रसाद शर्मा ओली की सरकार ने फेसबुक, इंस्टाग्राम व गैरैह सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रतिविधि का ऐलान किया तो



### संगठित और लोकेशन साझा की गई

#### 2020: अमेरिका, लैंक लाइस मैटर

एक्स हैशटैग # ब्लैकलाइव्स मैटर और इंस्टाग्राम पोस्ट से अंदोलन विश्वव्यापी

#### 2022: श्रीलंका, आरगालय प्रोटेस्ट

फेसबुक, एक्स, यूट्यूब पर भ्रष्टाचार और आर्थिक संकट के खिलाफ अंदोलन खड़ा हुआ

के खिलाफ विद्रोह किया। आखिर में तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना को देश छोड़कर भागना पड़ा।

#### 2025: नेपाल, “हामी नेपाल” अंदोलन

डिस्कॉर्ड और इंस्टाग्राम से युवाओं ने नेता चुना और सरकार गिरा दी

#### 2013: तुर्की, गेजी पार्क प्रोटेस्ट

एक्स और इंस्टाग्राम पर पर्यावरण अंदोलन

#### 2014: हांगकांग, अंड्रॉला मूर्मेंट

फेसबुक-व्हॉट्सएप के जरिए लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए युवाओं ने प्रदर्शन किए।

#### 2015: नेपाल, भूकंप राहत नेटवर्क

एक्स और फेसबुक से स्वयंसेवकों का विशाल नेटवर्क खड़ा हुआ।

#### 2019: हांगकांग, एंटी-एक्सट्राइशन प्रोटेस्ट

टेलीग्राम और रैडिट का इस्तेमाल कर भीड़

नौजवान जेन जी जुटान के तहत 7 सितंबर को राजधानी काठमांडू में सड़कों पर उत्तर आए। जुलूस में, 'कैपी चौर, गद्दी छोड़' के नारे गूंज रहे थे। जुलूस पर पुलिस की गोलीबारी में 20 नौजवान मारे गए। अगले दिन आग भड़क उठी। उस आग में संसद, राष्ट्रपति भवन, प्रधानमंत्री आवास सब धू-धूकर जल उठे। राष्ट्रपति रामचंद्र पाउडेल और प्रधानमंत्री ओली को सुरक्षित ठिकाने तलाशने पड़े। कथित तौर पर फौज ने ओली से इस्तीफा लिखवा लिया या वे इस्तीफा देकर सेना की सुरक्षा में पहुंचे।

यह सिलसिला बताता है कि अब चुनावी संसदीय प्रणाली, देशों के सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग के राजकाज से समस्याओं से पस्त नवयुवा अब बर्दाशत के मूड में नहीं हैं। फटाफट जुटान के लिए सोशल मीडिया उनका अमोघ अस्त्र बन रहा है। हालांकि उसकी राजनैतिक धारा स्पष्ट नहीं है। इसलिए इन सभी देशों की घटनाओं पर साजिश के इलाज भी उठ रहे हैं और अमेरिका, चीन या ऐसी ही दूसरी बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप की अटकलें भी हवा में हैं। इसके लिए हाल में बांग्लादेश के चत्तगंग में अंतर्रकी सेना की बढ़ती पैठ की मिसाल भी दी जा रही है। नेपाल में भी जिस तरह बाद में पुलिस और सेना आगजनी और राजनैतिक नेताओं की पिराई वगैरह की घटनाओं के दौरान दो दिनों तक मूक दर्शक बनी रही, उससे भी सवाल उठ रहे हैं। फिर, 73 वर्षीय पूर्व प्रधान न्यायाधीश सुशीला कार्की की अगुआई में अंतरिम सरकार बनाई गई। हालांकि नवयुवाओं में सबसे लोकप्रिय, काठमांडू के मेयर रैपर बालेन शाह पर जोर आए।

### सोशल मीडिया की पिंग

खैर, नेपाल में सरकार की नीतियों और राजनैतिक अभिजात वर्ग को लेकर गहरा असंतोष सुलग रहा था, और इस असंतोष को सोशल मीडिया के जरिए लगातार धार मिल रही थी। फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हॉट्सेप्प, यूट्यूब, एक्स और ऐसे कुछ दूसरे प्लेटफार्म पर विरोध के लगातार वीडियो, मीम, रिसर्च, पोल और छोटी टिप्पणियों के माध्यम से फैल रहे थे। "नेपोकिड्स" या "नेपोबेबिज" जैसे हैशटॉप के जरिए नेताओं के संतानों की विलासिता और उनकी जीवनशैली की पोल खोली जा रही थी। टिकटॉक, स्नैपचैट और इंस्टाग्राम रीलें खूब वायरल हुईं। रेडिट पर युवा चर्चा कर रहे थे कि कैसे ऑनलाइन आक्रोश को सड़क के विरोध प्रदर्शन में बदला जाए?

सरकार भी सोशल मीडिया पर उभरते आक्रोश को समझ रही थी तिहाजा नेपाल सरकार ने गलत सूचना रोकने और जवाबदेही तय करने के नाम पर 26 सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर प्रतिबंध लगा दिया, जिसे 1.43 करोड़ लोग जुड़े हुए थे। दिलचस्प यह है कि सोशल मीडिया बैन और इंटरनेट पर प्रतिबंध लगाने के बावजूद नेपाल की आधी से ज्यादा आबादी ऑनलाइन थी। इसके लिए प्रदर्शनकारियों ने वीपीएन की मदद ली। 7 सितंबर को स्विस कंपनी प्रोटोन एजी ने बताया कि नेपाल से प्रोटोन वीपीएन कनेक्शन 3 दिन में 6000 प्रतिशत तक



**सुलगते सवाल:** ढाका में छात्रों का प्रदर्शन, श्रीलंका में सचिवालय के बाहर विरोध (नीचे)

की ताकत को महसूस किया था (विस्तार के लिए साथ की रिपोर्ट और नजरिया देखें)।

### नई व्यवस्था के अवस

अलबत्ता, नेपाल की यह आग सिर्फ सत्ता के ठिकाने तक ही सीमित नहीं रही। नौजवानों ने तमाम मुख्यधारा के राजनैतिक दलों के नेताओं को भी निशाना बनाया, खासकर पूर्व प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा और झालानाथ खनल। खनल की पल्ली राज्यलक्ष्मी चिक्रिकार ने घर में लगी आग में ज्ञालसकर दम तोड़ दिया। आक्रोश की आग सुप्रीम कोर्ट और काठमांडू के मध्य में स्थित एक पांच सितारा होटल को भी ज्ञालसा गई। मतलब यह कि गुस्सा राजनैतिक प्रतिष्ठान से आगे पहुंच गया। दूसरे शहरों और कस्बों में भी सरकार की तानाशाही के खिलाफ ज्वालाएं उठीं। आखिरकार नेपाली सेना के प्रमुख जनरल अशोक राज सिंगडेल ने हिंसा रोकने की अपील की और सैनिकों को शहर में गश्त के लिए उतारा, तो शांति लौटी।

नेपाल के इस तखापलट में सेना की महत्वाकांक्षा नहीं दिखी। सेना प्रमुख सिंगडेल ने जेन जी और तमाम लोगों से बातचीत करके हल निकाला, लेकिन सेना ने आगे अने की कोई मंशा जाहिर नहीं की है। नेपाल में पाकिस्तान या बांग्लादेश के उल्ट सेना ने कभी भी राजनैतिक सत्ता में दखलांदाजी नहीं की। इसलिए सुशीला कार्की की अगुआई में कुछ प्रोफेशनल, नौकरशाह, अर्थशास्त्री और न्यायिक विशेषज्ञों की अंतरिम सरकार बनाई गई है। जेन जी के जोर देने पर संसद भंग की गई और अगले छह महीने में चुनाव करने का बाद किया गया है। हालांकि, सिंगडेल को इस पर रजामंदी बनाने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। दरअसल जेन जी

कोई एकरूप संगठन नहीं, बल्कि अलग-अलग समूह हैं और सबके अपने-अपने एजेंडे हैं। इनमें कुछ समूह बालेंद्र शाह के हिमायती हैं। 35 वर्षीय शाह ऐपर हैं, जो युवाओं में काफी लोकप्रिय हैं और जिन्होंने अपने गीतों के जरिए सत्ता प्रतिष्ठान को बदलने की मुहिम चलाई थी। एक दूसरे दावेदार नेपाल विद्युत प्रधिकरण के पूर्व प्रबंध निदेशक 54 वर्षीय कुलमन घिसिन थे, जिन्हें देश में बिजली ग्रिड सुधारने का श्रेय दिया जाता है। वे अब कार्की की अगुआई वाली सरकार में हैं।

## संप्रांत अच्छाई और आर्थिक संकट

इस बगावत की फौरी वजह तो 26 प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लगाई गई बंदिश थी। ओली सरकार ने स्थानीय पंजीकरण, शिकायत अधिकारियों की नियुक्ति और संपर्क सूत्र स्थापित करने की हफ्ते भर की मोहल्लत खत्म होने पर यह बंदिश लगाई, जैसा कि भारत में दो साल पहले किया गया था। लेकिन लाखों नेपालियों-खासकर नौजवानों के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म विलासिता की नहीं, बल्कि रोजगार, संपर्क-संचार और विदेश में परिवारों तथा अवसरों से जुड़ने का अहम साधन है। असल में, नेपाल दक्षिण एशिया में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के सबसे अधिक इस्तेमाल करने वाले देशों में है। फिर, लोग अपनी तंगहाली के मुकाबले राजनैतिक परिवारों के वारिसों के ऐशोआरम की जिंदगी से ईर्ष्या की आंच में सुलग रहे थे, जो इंस्टाग्राम पोस्ट पर अपनी रोलेक्स घड़ियां और गुच्छी बैग दिखाते उन्हें चिढ़ा रहे थे।

दूसरी ओर, आम नेपालियों के लिए देश में घटते रोजगार के अवसरों के महेनजर बाहरी देशों की ओर रुख करना ही इकलौता रास्ता है। गांव खाली हो रहे हैं, मां-बाप बच्चों से दूर हैं, बच्चों के भेजे पैसे से तो काम चल रहा है लेकिन देश में रोजगार के मौके नहीं बन रहे हैं।

इस तरह नेपाल में जेन जी की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी से बढ़ती आर्थिक तंगी है। एक के बाद एक लगातार सरकारें इस ओर ध्यान देने में नाकाम रही हैं।

कोविड महामारी ने बेरोजगारी के आंकड़ों को और बढ़ा दिया और उसके बाद से अर्थव्यवस्था सुधर नहीं पाई। दूसरे देशों में पलायन की रफतार बढ़ी और खासकर 30 वर्ष से कम उम्र के नौजवानों को इसका दंश सबसे अधिक भुगतना पड़ा, जिन्हें रोजगार की सबसे ज्यादा दरकार होती है। ये युवा देश की कुल 2.96 करोड़ की आबादी में तकरीबन 56 प्रतिशत हैं। 2024 में नेपाल की मौजूदा बेरोजगारी दर 10.8 फीसदी थी, लेकिन 15-24 वर्ष के युवाओं के मामले में यह 20.8 फीसदी या लगभग दोगुनी थी। रोजगार के अवसरों की कमी से अनुमानित 45 लाख लोग भारत, खाड़ी देशों और सुदूर पूर्व जैसे देशों की ओर गए। विश्व बैंक के मुताबिक, विदेशों में काम कर रहे नेपालियों की भेजी गई रकम ही दरअसल घेरेलू अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जो सकल घेरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 33 फीसदी है। 2024 में विदेश से भेजी गई रकम करीब 14 अरब डॉलर थी और करीब 76 प्रतिशत परिवार उसी पर पल रहे हैं।

## सामाजिक पक्ष

आर्थिक और राजनैतिक समस्याएं नेपाल के भूगोल और सामाजिक बनावट से भी जटिल हो जाती हैं। यह तीन प्रमुख जनसंख्या समूहों में बंटा हुआ है, जो एक-दूसरे से बेमेल हैं। पहाड़ियाँ (पहाड़ी मूल के जाति समूह) में प्रमुख बाहुन (ब्राह्मण), छोत्री (क्षत्रिय) और ठाकुरी समूदाय हैं, जो कुल आबादी का लगभग 31 प्रतिशत बताया जाता है और ज्यादातर राजनैतिक अधिगत वर्ग उसी समुदाय का है। राजशाही से लेकर नेपाली कांग्रेस, विभिन्न कम्युनिस्ट और माओवादी पार्टीयों के जितने

नेताओं के नाम याद कर सकते हैं, सभी इसी समुदाय से हैं। दूसरे हैं जनजाति (आदिवासी या मूलवासी) जो पहाड़ों और मैदानी में फैले हुए हैं। उनकी संख्या भी 31 प्रतिशत बताई जाती है और यह वहां सबसे बंचित समूह है। इसके अलावा मधेसी (तराइ या मैदानी मूल के लोग) लगभग 28 प्रतिशत हैं। ये भारत की सीमा से लगे जिलों में हैं। उनके अलावा बाकी दलित जातियों के लोग हैं। इन समुदायों के बीच लगातार सत्ता संघर्ष चलता रहा है।

मौजूदा युवा विद्रोह की खास बात यह है कि उसके भूचाल का केंद्र काठमांडू था, जिसे ताकतवर पहाड़ी समुदायों का गढ़ माना जाता है। ज्यादातर मुखर लड़के-लड़कियाँ इसी प्रभावशाली समुदाय से हैं। यह इससे भी समझा जा सकता है कि सड़कों पर नाराजगी मुख्यधारा के राजनैतिक दलों के नेताओं के घरों पर भी टूटी। यानी उन तमाम प्रतीकों पर जिनसे उन्हें नाकामी हाथ लगी।

## राजनीति की उल्टबांसी

इधर कुछ दशकों में नेपाली राजनीति बारी-बारी सत्ता का खेल बनकर रह गई थी। सत्ता का सिंहासन तीन प्रमुख राजनैतिक दलों के नेताओं की पुरानी तिकड़ी के बीच बारी-बारी से बदलता रहा है। राजशाही के दौर को भी जोड़ लें, तो नेपाली कांग्रेस के शेर बहादुर देबबा पांच बार प्रधानमंत्री रहे; नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी-माओवादी केंद्र या सीपीएन (एमपी) के पुष्प कुमार दहल उर्फ प्रचंड चार बार प्रधानमंत्री रहे और नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी-एकीकृत माक्सवादी लनिनवादी (सीपीएन-यूएमएल) के के.पी. शर्मा ओली मौजूदा आग उठने से पहले चौथा कार्यकाल पूरा कर रहे थे। यह बिरादरी सत्ता के केंद्र में थी, लेकिन युवाओं के बीच उसकी लोकप्रियता भी घटती जा रही थी, क्योंकि वे उनकी आकांक्षाओं पर खो नहीं उतर रहे थे।

इसके अलावा, 2008 में राजशाही के खामे और 2015 में नए संविधान के लागू होने के बाद से नेपाल में राजनैतिक अस्थिरता जारी रही है। पिछले 15 साल में 10 बार सरकार बदली है। लगातार अस्थिरता की एक वजह नेपाल की मिश्रित चुनाव प्रणाली है, जिसमें आसानी से पूर्ण बहुमत हासिल नहीं हो पाता। निचले सदन की 275 सीटों में 165 भारत की तरह पहले नंबर यानी सबसे ज्यादा संख्या में वोट की प्रणाली के तहत और 110 सीटें पार्टी की वोट हिस्सेदारी के आधार पर आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के तहत भरी जाती हैं। इसके बावजूद, कोई भी प्रमुख राजनैतिक दल 138 सीटों के साधारण बहुमत से अगे बढ़कर अकेले सरकार नहीं बना पाया है। लिहाजा, गठबंधन सरकारों का सिलसिला चलता रहा है।

बहरहाल, नेपाल की घटनाएं गवाह हैं कि लोगों के मुद्दों को दरकिनार करने और अर्थव्यवस्था को लोगों के हक में दुरुस्त नहीं करने और सत्ता के लिए हर तरह के समझौते करने की प्रवृत्ति सोशल मीडिया के दौर में छुपाई नहीं जा सकती। गौर से देखें, तो भारत में भी वे सभी स्थितियाँ मौजूद हैं। शायद इसीलिए उस पर चर्चाएं भी जारी हैं। आगर ये घटनाएं अहिस्सक हों और लोकतंत्र को सुधार की ओर ले जाएं तो स्वागत योग्य हैं।



ए.पी.



# कोकण के सुनहरे किनारे: महाराष्ट्र के अनछुए सागर तटों की सैर

अलिबाग और गणपतिपुळे की भीड़भाड़ से दूर, चलते हैं कोकण किनारे, रेत पर शांत  
चहलकदमी करने, स्थानीय संस्कृति को जीने और अनदेखे नजारों को निहारने

वेळणेश्वर: महाराष्ट्र  
का एक शांत, सुरम्य  
समुद्र तट



भोगवे: कॉकण का एक सुन्दर और एकांतिक तट

**अ**रब सागर के किनारे, महाराष्ट्र का ८७८ कि.मी लम्बा कॉकण तट भारत का सबसे समुद्र तटीय क्षेत्र है। यहाँ अलीबाग, गणपतिपुळे, काशीद, आदि जाने माने स्थानों के अतिरिक्त कुछ अनदेखे तट भी छिपे हैं जो एकांत-प्रेमी पर्यटकों के लिए किसी खजाने से कम नहीं हैं। इन सुरम्य, एकाकी किनारों पर आपको न केवल शांति और सुन्दर सूर्यास्त दिखेगा बल्कि राज्य की अद्वितीय तटीय विरासत भी मिलेगी। आइये, इन आठ छिपे रत्नों को खोजते हैं:

### गुहागर किनारा

महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में स्थित यह किनारा गुहागर से असगोली के मध्य ६ कि.मी. में फैला है। सुरु के पेड़ों और पहाड़ों की पृष्ठभूमि वाला यह सागर तट सुनहरी रेत पर शांत चहलकदमी करने के लिए एक आदर्श स्थान है। व्याडेश्वर मंदिर और चंडिका मंदिर पास ही मौजूद सांस्कृतिक स्थल हैं। निकटवर्ती अंजावेल और गोपालगढ़ किले आपकी यात्रा को और यादगार बना देंगे।

### भोगवे किनारा

सिंधुदुर्ग जिले में स्थित भोगवे कॉकण क्षेत्र

का सबसे सुन्दर और एकाकी समुद्र तट है। चांदी सी चमचमाती रेत और निकटवर्ती किलों के लिए प्रसिद्ध यह स्थान डॉल्फिन मछलियों और ढलते सूरज के नजारों के लिए भी जाना जाता है। जलक्रिडा पर्यटन के लिए प्रसिद्ध तारकलीं के पास स्थित यह समुद्र तट, निवती किले के भी नजदीक है। देवबाग के मोबारा पॉइंट से आप कर्ली नदी और अरब सागर का संगम भी देख सकते हैं।

### वेळणेश्वर किनारा

शिला-रहित शांत तटरेखा के लिए प्रसिद्ध यह सुरम्य किनारा रत्नागिरी जिले में है। नारियल वृक्ष के झुण्ड एक पोस्टकार्ड जैसा सुन्दर चित्र बनाते हैं। पास ही में स्थित सदियों पुराना वेळणेश्वर शिव मंदिर भी इसके आकर्षण में चार-चाँद लगाता है। इनके अतिरिक्त यहाँ देखने के लिए और कई स्थान हैं जैसे हेडवी का दशभुजा गणेश मंदिर, शाक्ती नदी, और अन्य कई किले और मंदिर।

### कुणकेश्वर किनारा

महाराष्ट्र के सबसे सुन्दर सफ्रेद रेत वाले समुद्र तटों में से एक कुणकेश्वर तट सिंधुदुर्ग जिले के देवगढ़ से मात्र १६



कि.मी. दूर है। ताड़ वृक्षों और कोमल रेत के ढेरों से आच्छादित यह लम्बा किनारा तैराकी और धूप सेकने के लिए आदर्श है। कुणकेश्वर शिव मंदिर से समुद्र का नजारा देखते ही बनता है और पास ही स्थित देवगढ़ और विजयगढ़ किले आपकी यात्रा में ऐतिहासिक अनुभव जोड़ते हैं।

### **सातपाटी किनारा**

शीरगांव से १३ कि.मी. की दूरी पर स्थित सातपाटी राज्य के सबसे बड़े और स्वच्छ समुद्र तटों में से एक है। मछली पकड़ने के लिए विख्यात यह क्षेत्र तटीय गाँवों से धिरा हुआ है। पास ही में शीरगांव किला और सातपाटी लाइटहाउस देखने योग्य हैं। यदि आप एक शांत तट के साथ समुद्र



सिंधुदुर्ग का कुणकेश्वर किनारा



दापोली के निकट स्थित अंजर्ले महाराष्ट्र का स्वच्छ समुद्र तट है

किनारे रहने का जीवन अनुभव करना चाहते हैं तो यहाँ अवश्य आयें।

### अंजर्ले किनारा

दापोली के निकट स्थित अंजर्ले महाराष्ट्र का एक सबसे साफ़ समुद्र तट माना जाता है। इस तट के एक ओर नारियल वृक्षों के सघन कुंज हैं तो दूसरी ओर सैलानी पैरासैलिंग, स्नॉर्किंग और विडसर्फिंग का रोमांच अनुभव कर सकते हैं। यह किनारा ओलिव रिडले कछुओं की प्रजनन प्रक्रिया के लिए है जहाँ आप अंडों से निकले नन्हे कछुओं के सागर



आरे वारे एक भौगोलिक आश्चर्य है

### ध्यान रखें

- नवंबर से फरवरी के मध्य मौसम सुहाना रहता है
- समुद्र तटों के निकट स्थित महाराष्ट्र पर्यटन विकास महामंडल रिजॉर्ट ठहरने के उत्तम स्थान हैं, पर भीड़ से बचने के लिए अग्रिम बुकिंग करायें
- मालवणी भोजन में सीफूड(मछली, झींगा आदि) भी परोसा जाता है और इसमें खट्टे कोकम का स्वाद होता है
- कार इन सुदूर तटों तक आने का सबसे सुगम जरिया है
- अपने साथ कुछ नकदी रखें क्योंकि यहाँ ए.टी.एम. कम हैं और फोन नेटवर्क भी कमज़ोर हो सकता है

### संपर्क सूत्र

- अधिक जानकारी के लिए [maharashtratourism.gov.in](http://maharashtratourism.gov.in) पर जायें
- [mahabooking.com](http://mahabooking.com) पर यात्रा योजना बनायें
- शीघ्र सहायता हेतु चैटबोट के माध्यम से +91 94038 78864 पर संपर्क करें

की ओर सफर का विलक्षण दृश्य भी देख सकते हैं। पास ही पहाड़ी पर दर्शनीय कदयावर्चा गणपति मंदिर स्थित है।

### आरे वारे किनारा

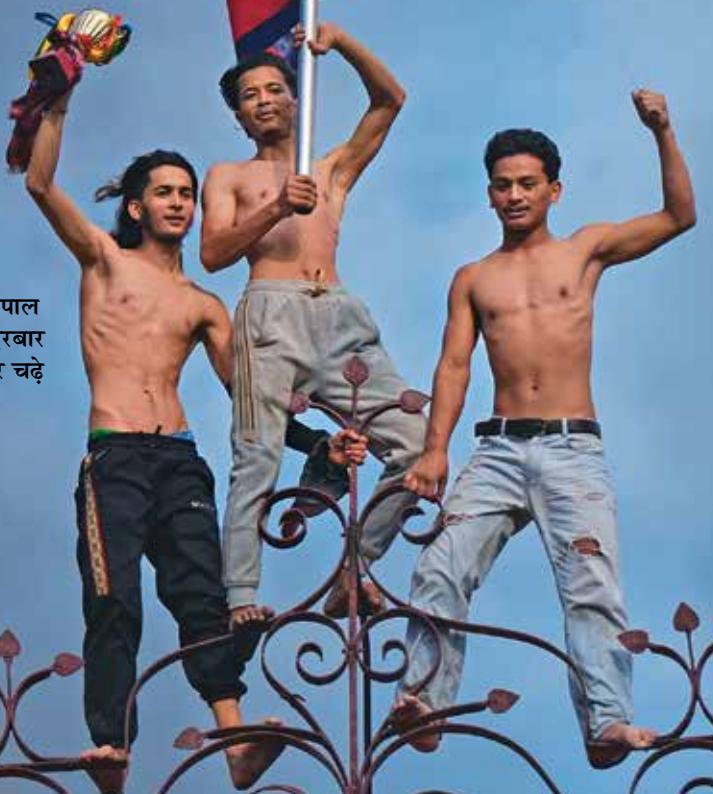
रत्नागिरी में पर्वत-सागर मिलन से बना ये एक भौगोलिक आश्चर्य है जहाँ आपको जुङवे समुद्र-तट दिखते हैं। शाम के समय सुनहरी रेत और नीले सागर की लहरें एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। आप आरे वारे पहाड़ी से इस तट का विहंगम स्वरूप देख सकते हैं। विख्यात गणपतिपुळे मंदिर यहाँ से मात्र १० कि.मी. दूर है जिससे इन दोनों स्थानों पर एक साथ आना आसान हो जाता है।

### भंडारपुळे किनारा

गणपतिपुळे से केवल २ कि.मी. दूर भंडारपुळे, दो पहाड़ियों के मध्य स्थित एक शांत समुद्र तट है जिसके एक ओर सुरु पेड़ों की सुंदर कतार है। यहाँ की एक पहाड़ी से आप भंडारपुळे और गणपतिपुळे, दोनों समुद्र तटों का संपूर्ण नजारा देख सकते हैं। यहाँ सागर के जल में नील-हरित वर्ण की एक विचित्र आभा है। निकटवर्ती गणपतिपुळे मंदिर में साल भर तीर्थ यात्रियों का आना जाना रहता है। इसके अतिरिक्त आरे वारे, और संगमेश्वर का मार्लेश्वर मंदिर भी पास ही हैं।

# इंकलाब का नया औजार

असहमति को अंजाम देने का युवा पीढ़ी का नया तरीका है शैटैग, डिजिटल विद्रोह सत्ता के लिए बन रही चुनौती



विद्रोह: नेपाल के सिंह दरबार के गेट पर चढ़े युवा

■ राजीव नयन चतुर्वदी

प्रतिबंध विद्रोह पैदा करते हैं, इसका इतिहास तो सदियों पुराना है, और बड़े आंदोलनों तथा उससे सत्ता-परिवर्तन की मिसालें भी अनेकानेक हैं। लेकिन सोशल मीडिया के प्रसार, उसकी पहुंच, उसकी विविधता इतनी व्यापक है कि उसके कुछ प्लेटफॉर्म पर बंदिश लगाए तो दूसरे मंच भी उतनी ही तेजी से प्रभावी हो जाते हैं और उसकी पिंग (रफ्तार या उछाल) इतनी जबरदस्त है कि फटाफट जुटान और बगावत की चिंगारी को आग में बदलने में बिजली की रफ्तार भी छोटी पड़ जाए। इसी मायने में नेपाल की कहानी एक नई मिसाल पेश करती है और सोशल मीडिया के इस्तेमाल के नवाचार से चौंकती है।

सोशल मीडिया हाल के वर्षों में बांग्लादेश, श्रीलंका, ईडोनेशिया, ईरान और उसके पहले 'अरब वसंत' में अरब जगत के देशों में बड़े तख्तापलट या सरकारों की चूलें हिलाने में भरपूर इस्तेमाल हुआ था। लेकिन मोटे तौर पर इन सबमें एसएमएस (जैसे अन्ना आंदोलन) या फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हॉट्सएप या इसी तरह के पारंपरिक या ज्यादा प्रचलित-प्रसारित प्लेटफॉर्म का ही इस्तेमाल हुआ

ए.पी.

था। सो, नेपाल की के.पी. शर्मा ओली की सरकार को शायद लगा कि इन प्लेटफॉर्म पर बंदिश लगाकर वह नौजानों में पनप रहे असंतोष को कुछ हट देना लेगी। सो, 5 सितंबर को “राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक सञ्चार बिगड़ने” का हवाला देकर 26 लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर रोक लगा दी गई। फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स, यूट्यूब सब रुक गए। लेकिन युवा सरकार से ज्यादा स्मार्ट निकले। सोशल मीडिया ने उन्हें फौरन विकल्प मुहैया करा दिया। वे गेमर्स के बर्नुअल कम्युनिटी हब डिस्कॉर्ड पर जुटे और विरोध की रूपरेखा तय की। यही सोशल मीडिया की ताकत और व्यापकता है, जिसका असर नेपाल की 15-30 वर्ष की युवा पीढ़ी ने दिखाया और यही नेपाल की कहानी को अनोखा बनाता है।

इस तरह जिन रणनीतियों को धरातल पर उतारने में कभी बरसों, महीनों या हफ्तों लगते थे, जनरेशन जी ने कुछ घंटों में यह कर दिखाया। देखते ही देखते ‘नो बैन इन नेपाल’, ‘वॉइस ऑफ जेन जी, इंटरनेट राइट’ जैसे हैशटैग पूरे देश और दुनिया में ट्रैंड करने लगे। हजारों युवा सरकारी इमारतों पर पथराव करने लगे और राजधानी काठमांडू समेत कई शहरों में पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच भिंडंत की खबरें आने लगीं। काठमांडू की सड़कें युद्धक्षेत्र में बदल गईं। ओली और तमाम मुख्यधारा की पार्टियों के नेताओं को सुरक्षित ठिकाने तलाशने पड़े।

नेपाल का यह विद्रोह अकेला नहीं है। हाल के वर्षों में दक्षिण पूर्व एशिया के कई देश युवाओं के डिजिटल इस्टेमाल वाले विरोधों से हिल चुके हैं। 2024 में बांग्लादेश में आरक्षण निति और बेरोजगारी को लेकर विश्वविद्यालय छात्रों ने आंदोलन छेड़ा। ढाका यूनिवर्सिटी से शुरू हुई यह लहर कुछ ही दिनों में लाखों युवाओं को जोड़ लाई। ‘नो कोटा, जॉब फॉर यूथ’ जैसे हैशटैग ने आंदोलन को दिखा दी। केवल ढाका यूनिवर्सिटी से लगभग 50 हजार छात्र सड़क पर उतर गए। शेष हसीना को देश छोड़कर भागना पड़ा और अंतरिम सरकार का गठन हुआ।

श्रीलंका में भी 2022 का आर्थिक संकट युवाओं और छात्रों के डिजिटल आहान से सियासी विस्फोट में तब्दील हो गया। ‘गोटा गो होम’ जैसे हैशटैग ट्रैंड ने पूरे देश के गुस्से को एक नारा दे दिया। वॉट्सप्प और टेलीग्राम के ग्रुपों ने मिनटों में हजारों लोगों को संगठित कर दिया। विरोध इतना व्यापक हुआ कि राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे को भी देश छोड़ना पड़ा। पिछले चार साल में भारत के तीन पड़ोसी देशों में युवाओं के विरोध को सोशल मीडिया ने अंजाम तक पहुंचाया है। इन सभी देशों में आंदोलन को धार देने का काम सोशल मीडिया ने किया।

वर्ल्ड वैल्यू सर्वें की एक रिपोर्ट के मुताबिक, “पिछले दो दशकों में आम नागरिक बड़ी संख्या में सड़क पर उतरे हैं, जिनमें सबसे आगे छात्र और



## सोशल मीडिया आंदोलन

■ 2020-21 में भारत में भी किसान आंदोलन के दौरान सोशल मीडिया की भूमिका अहम रही

■ नागरिक संशोधन कानून के खिलाफ एटी-सीएए आंदोलन में ट्रीटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम पर चले अभियान ने भी जुटाई

■ श्रीलंका में भी 2022 का आर्थिक संकट युवाओं और छात्रों के डिजिटल आहान से सियासी विस्फोट में बदल गया

■ 2024 में बांग्लादेश में विश्वविद्यालय छात्रों के आंदोलन में ‘नो कोटा’, ‘जॉब फॉर यूथ’ हैशटैग खूब चले

■ सबसे पहले अरब स्लिंग ने सावित किया था कि फेसबुक पेज और एक्स थ्रेड्स सरकार का तरज्जुपाल करा सकते हैं

युवा रहे हैं। युवाओं में प्रदर्शनों में भाग लेने की इच्छा 1990 के दशक के बाद से अब तक के सबसे उच्च स्तर पर पहुंच गई है और इस दौरान विरोध प्रदर्शनों की संख्या भी बढ़ी है।

काठमांडू यूनिवर्सिटी के मास मीडिया डिपार्टमेंट के हेड निर्मल मणि अधिकारी आउटलुक से कहते हैं, “नेपाल में पहले भी विरोध प्रदर्शन हुए हैं, जैसे-जनआंदोलन या मधेस आंदोलन। लेकिन उसमें पुराने तौर-तरीकों को अपनाया गया। उसकी गति धीमी थी। सूचना का प्रसार अखबारों, टीवी चैनलों या मुंह जबानी होता था, जिसमें हफ्तों लग जाते थे। इस बार स्थिति अलग थी। सिर्फ 24 से 48 घंटों के भीतर आंदोलन चरम पर पहुंच गया, क्योंकि सोशल मीडिया ने तुरंत सूचना दी। जब सरकार ने युवाओं

पर दमन किया, तो खबर पलक झपकते बायरल हो गई, जिससे प्रदर्शनकारियों की संख्या तेजी से बढ़ी।”

हालिया वर्षों में भारत में भी डिजिटल असहमति की शक्ति बार-बार देखी गई है। 2020-21 का किसान आंदोलन इसका उदाहरण रहा। दिल्ली की सीमा पर हो रही बेराब और पुलिस टकराव को प्रदर्शनकारियों ने लाइवस्ट्रीम किया, तस्वीरें और वीडियो ट्रिवटर और फेसबुक पर बायरल हुए और देखते ही देखते हैशटैग फार्मर प्रोटेस्ट ग्लोबल ट्रैंड बन गया। पॉप सिंगर रिहाना जैसी अभिनेत्रियों ने भी इस मुद्दे पर ट्रीटी किया।

इसी तरह, नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ हुआ एटी-सीएए आंदोलन सिर्फ शाहीन बाग के धरने पर निर्भर नहीं रहा। ट्रिवटर अभियानों, बायरल इंस्टाग्राम गील्स और फेसबुक पोस्ट ने ऐसा माहौल गढ़ा कि यह सीधे संविधान बचाने की लडाई की तरह दिखने लगा। हैशटैग ‘मी टू इंडिया’ आंदोलन ने असहमति को बिल्कुल नए रूप में सामने रखा। यह किसी शहर की सड़क या मैदान में नहीं हुआ, बल्कि पूरी तरह ऑनलाइन था, जिसमें हजारों महिलाओं ने अपने साथ हुए दुर्व्यवहार के अनुभव साझा किए। उसने राजनैतिक दलों, विश्वविद्यालयों और कंपनियों को कार्रवाई करने के लिए बाध्य कर दिया।

वैश्विक स्तर पर भी यही पैटर्न दिखाई देता है। दस साल पहले अरब स्लिंग ने सावित किया था कि फेसबुक पेज और ट्रिवटर थ्रेड्स तख्तापालट भी करा सकते हैं। 2019 के हांगकांग विरोध प्रदर्शनों में युवाओं ने तकनीक को हथियार बना लिया। टेलीग्राम ग्रुप और एन्क्रिप्टेड चैट का इस्तेमाल करके उन्होंने पुलिस की रणनीतियों को चकमा दिया। लाखों की संख्या में भीड़ सड़क पर उतर आई। यह आंदोलन चीन समर्थित हांगकांग सरकार के एक्सट्राडिशन विल के खिलाफ था, जिसके तहत हांगकांग के लोगों को मुख्यभूमि चीन में मुकदमों का सामना करने के लिए भेजा जा सकता था। बाद में, सरकार को इस बिल को वापस लेना पड़ा। अमेरिका में भी ब्लैक लाइव्स मैटर आंदोलन पुलिस बर्बरता और नस्लीय भेदभाव के खिलाफ शुरू हुआ था। लाखों ट्रीटी और इंस्टाग्राम पोस्ट के चलते यह अमेरिका के इतिहास के सबसे बड़े आंदोलनों में एक बना।

अमेरिका स्थित यूएसआइपी की 2023 की रिपोर्ट कहती है कि 2015 से 2019 के बीच हुए प्रदर्शनों में युवाओं की भागीदारी 50 प्रतिशत तक पहुंच गई थी। रिपोर्ट में कहा गया है कि युवाओं को अपने आंदोलनों में सफलता भी मिल रही है, क्योंकि युवा मुख्यधारा की राजनीति की बजाय अनापचारिक राजनीति को प्राथमिकता देते हैं। युवा प्रदर्शनकारियों ने डिजिटल प्लेटफॉर्म और तकनीकों का इस्तेमाल कर विरोध के तरीकों को बदल दिया है। इससे जुलूस-जलसे का खर्च कम हुआ, भागीदारी बढ़ी

और आंदोलन ज्यादा शक्तिशाली साबित हुआ।

डिजिटल मंचों की असली ताकत रफ्तार और पहुंच है। आज हर जगह इंटरनेट है और सभी के हाथों में स्मार्टफोन है। स्टेटिस्टा की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में 1.2 अरब लोगों के पास इंटरनेट कनेक्शन और करीब 70 करोड़ लोगों के पास स्मार्टफोन हैं। पीयूर रिसर्च की एक रिपोर्ट के मुताबिक, विश्व स्तर पर, 15-24 वर्ष की आयु-वर्ग के लगभग 80 फीसदी से अधिक लोग इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं जबकि उच्च-आय वाले देशों में यह लगभग 95-99 प्रतिशत है।

स्मार्टफोन और इंटरनेट ने आंदोलन की बाधाओं को लगभग खत्म कर दिया है। कोई भी किसी पोस्ट को शेयर करके या अपना हैशटैग बना कर आंदोलन का हिस्सा बन सकता है। भारत-नेपाल संबंधों के विशेषज्ञ और राजनीतिक समाजसाक्षी उद्घव प्याकुरेल आउटलुक से कहते हैं, “‘पहले विरोध के अगुआ आम तौर पर कुछ लोग होते थे। लेकिन अब नेतृत्व विकेंद्रित हो चुका है; कोई एक करिश्माई आंदोलन का चेहरा नहीं होता, बल्कि हजारों छोटे आयोजक अपने-अपने ग्रुप, चैट और नेटवर्क में इसे आगे बढ़ा रहे होते हैं।’” वे आगे कहते हैं, “‘पहले पुलिस पोस्टर फाड़ सकती थी या गिरफ्तार कर सकती थी, पर आज कोई वीडियो इतनी बार रीशेयर हो जाता है कि किसी एक की जवाबदेही तय करना मुश्किल होता है।’”

हालांकि डिजिटल आंदोलनों में अफवाह का खतरा भी लगातार बना रहता है। बांग्लादेश में एक दूसरी अफवाहों ने अनावश्यक हिंसा भड़का दी थी। वर्ही, 2021 में वॉशिंगटन डीसी में कैपिटल हिल पर हुआ हमला भी सोशल मीडिया पर फैली फेक न्यूज़ और भ्रामक सूचनाओं के कारण भड़का था। डिजिटल मंच एक ओर लोकतांत्रिक असहमति और नागरिक भागीदारी को मजबूत करने की क्षमता रखता है, तो वर्ही दूसरी ओर उतनी ही ताकत से उर्ध्वे अधिकारी भी कर सकता है।

सोशल मीडिया के साथ एक और बात है, जो उसके नकारात्मक पक्ष को दिखाती है। कई बार जितनी तेजी से कोई हैशटैग चलता है, वह उतनी ही तेजी से ठंडा भी पड़ जाता है। इसे “स्लैक्ट्रिविज्म” भी कहा जाता है, जहां लोग सिर्फ़ अपनी प्रोफाइल तस्वीर बदलकर या एक नारा पोस्ट करके समझ लेते हैं कि उन्होंने संघर्ष में योगदान दिया।

इसका एक और पहलू है। यूनिसेफ के मुताबिक, “डिजिटल असहमति की उपलब्धियां अक्सर लंबे समय तक ठोस बदलाव में नहीं बदल पातीं। प्रदर्शन तत्काल सरकार गिरा सकते हैं, लेकिन रोजगार, शिक्षा, स्त्री-पुरुष समानता या सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों पर ठोस सुधार अक्सर लंबित होते हैं।”

सूडान का आंदोलन इसका उदाहरण है। सूडान में 2019 में मूल रूप से लोकतंत्र की बहाली, सैन्य



**बावाल के बाद:** काठमांडू में विद्रोही युवाओं के थाने को जला देने के बाद सफाई करते लोग

शासन की समाप्ति और नागरिक सरकार की स्थापना की मांग पर केंद्रित आंदोलन हुआ। लंबे संघर्ष के बाद राष्ट्रपति उमर अल-बशीर को हटाया गया और अस्थायी नागरिक-सैन्य साझा सरकार बनी। लेकिन युवाओं की सबसे अहम मांगें- स्थायी लोकतांत्रिक ढांचा, रोजगार, शिक्षा और स्त्री-पुरुष समानता- समग्रता में पूरी ही नहीं हुईं। नई सत्ता संरचनाओं में युवाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर रखा गया और 2021 में सैन्य तख्तापलट ने इन उम्मीदों को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया।

बांग्लादेश में 2024 के छात्र आंदोलनों की मुख्य मांगें, सरकारी नौकरियों में आरक्षण नीति का सुधार और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाना था। लेकिन इनमें किसी भी पर कोई ठोस बदलाव नहीं किया गया।

भारत जैसे बड़े लोकतांत्रिक देशों के लिए यह परिघटना अवसर और खतरे दोनों लेकर आती है। एक तरफ स्मार्टफोन से लैस युवा आबादी किसी भी मसले को राष्ट्रीय विमर्श का मुद्दा बना सकती है। जलवायु संकट, दलित अधिकार या स्त्री-पुरुष न्याय जैसे आंदोलन अब स्थानीय अखबारों या

## डिजिटल युग ने क्रांति की पूरी परिभाषा बदल कर रख दी है।

**आज डिजिटल असहमतियों की प्रभावशीलता पहले से कई गुना बढ़ गई है**

टीवी डिबेट पर निर्भर नहीं हैं, एक्स और इंस्टाग्राम सीधे उर्वर्ण राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचा देते हैं। महामारी के दौरान ऑक्सीजन और अस्पतालों के घोर अभाव को लिए बने स्वयंसेवी नेटवर्क ने दिखाया कि डिजिटल टेक्नोलॉजी से व्यवस्था विरोध और राहत कायं दानां में तेजी लाई जा सकती है।

नेपाल के हैशटैग अपने आप में कानून नहीं बदल सकते, मगर वही हैशटैग नेताओं को पीछे हटाने, अदालतों का ध्यान आकर्षित करने और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को हस्तक्षेप के लिए मजबूर कर सकते हैं। अब असहमति केवल इस पर निर्भर नहीं करती कि कौन सङ्करण पर मार्च कर रहा है, बल्कि इस पर भी करती है कि कौन क्या पोस्ट कर रहा है, क्या शेयर कर रहा है असहमति और सत्ता के बीच की जंग डिजिटल स्पेस में भी उतनी ही है, जितनी जमीन पर।

यानी सोशल मीडिया ने विरोध प्रदर्शनों के लिए घर-घर जाकर पर्चे बांटने, छात्र हॉस्टलों के कमरों में बैठक कर जोखिम भरी गुप बैठकें करने की जरूरत तकरीबन खत्म कर दी है, न रात काली कर नारों से दीवारें रंगनी हैं। डिजिटल युग ने क्रांति की पूरी परिभाषा बदल कर रख दी। हालांकि डिजिटल मंचों ने राजनीति की धार को तेज भी किया और भोथरा भी। मसलन, नेताओं ने जिस माध्यम से अपनी छवि चमकाई, चुनाव जीते, मतदाताओं को रिझाया उसी माध्यम पर ही उनकी पोल खोली गईं और वर्ही वे बे-आबरू हुए। समाज ने इसकी ताकत समझी और सत्ता की संरचना को पूरी तरह बदल दिया है। यह संरचना इतनी बदली कि कई देशों की सत्ता की नींव हिला दी।

भारतीय डाक



India Post

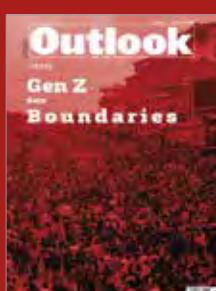
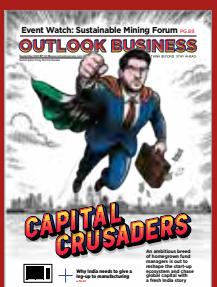
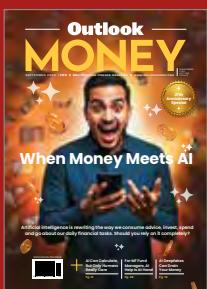
**Outlook**  
group

समय पर और प्रभावी  
लाइव ट्रैकिंग उपलब्ध

95% सटीक



अपनी पसंदीदा आउटलुक ग्रुप पत्रिका की सदस्यता  
आज ही लें और डाक से पत्रिका की निश्चित डिलीवरी पाएं

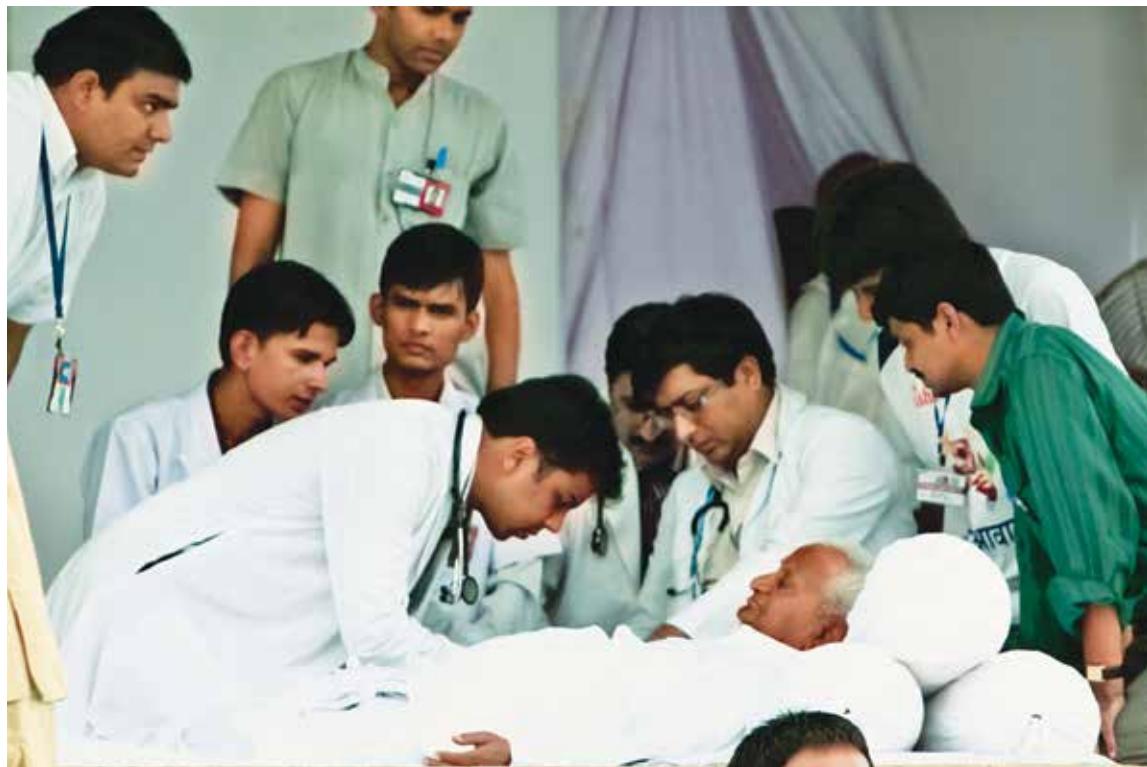


Contact:

[yourhelpline@outlookindia.com](mailto:yourhelpline@outlookindia.com) or  
call at 9266855636 / 9266855837

▶ Scan QR code for  
instant booking





**पहले-पहल:**  
अन्ना हजारे के  
आमरण अनशन  
की खबर सोशल  
मीडिया पर खूब  
फैली थी

# सोशल मीडिया 'क्रांति' अख्त

नेपाल में 20 से 25 वर्ष के युवाओं ने सोशल मीडिया के मंचों का इस्तेमाल कर जिस तरह सत्ता बदली, उसके बाद चर्चा है क्या इसके जरिए आने वाले वर्षों में सत्ता बनाई या गिराई जाएगी?



पीयूष पांडे

ने पाल में सरकार की नीतियों और राजनैतिक अभिजात वर्ग को लेकर लोगों में गहरा असंतोष उभर रहा था। उस असंतोष को सोशल मीडिया ने लगातार धार दी। खास बात यह कि सोशल मीडिया बैन और इंटरनेट पर प्रतिबंध लगाने के बावजूद नेपाल की आधी से ज्यादा आबादी ऑनलाइन थी। इसके लिए प्रदर्शनकारियों ने वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क यानी वीपीएन की मदद ली। इसके अलावा, नेपाल के जेन जी ने डिस्कॉर्ड, जो गेमर्स का वर्चुअल कम्युनिटी हब है, उसका भी अनूठा इस्तेमाल किया। इस प्लेटफार्म के जरिए प्रदर्शन आयोजित करने से लेकर अंतरिम प्रधानमंत्री चुनने तक कई कार्य हुए। डिस्कॉर्ड का ऐसा इस्तेमाल पहले कभी नहीं हुआ था।

सोशल मीडिया की यह ताकत कोई नई नहीं है। 2009–2011 के बीच 'अरब स्लिंग' ने दिखाया कि सोशल मीडिया किस तरह राजनैतिक परिवर्तन का हथियार बन सकता है। ट्यूनीशिया, मिस्र, लीबिया, बहरीन और सीरिया जैसे देशों में युवाओं और कार्यकर्ताओं ने फेसबुक, ट्विटर और यूट्यूब को आंदोलन के मंच के रूप में इस्तेमाल किया। ट्यूनीशिया में मोहम्मद बुआज़ीज़ी की आत्मदाह की खबर सबसे पहले फेसबुक और यूट्यूब पर वीडियो और फोटो के जरिए फैली। देखते ही देखते यह गुप्ता डिजिटल लहर में बदल गया। फेसबुक पेज "वी आर ऑल खालिद सेंद" (हम सभी खालिद सेंद) मिस्र में सबसे मशहूर हुआ, जिसे एक युवा कार्यकर्ता ने बनाया था। यह पेज पुलिस की ज्यादती और भ्रष्टाचार की कहानियों का केंद्र बन गया। इसी

के जरिए हजारों लोग काहिरा के तहरीर चौक में जुटे। ट्रिवटर पर 'जनवरी25' और 'अरबस्ट्रिंग' जैसे हैशटैग चलने लगे, जिसने अंतरराष्ट्रीय मीडिया का ध्यान खींचा। यूट्यूब पर अपलोड किए गए विरोध प्रदर्शनों और पुलिस दमन के वीडियो ने पूरी दुनिया में सहानुभूति और दबाव बनाया। इन देशों में परंपरागत मीडिया सरकार के नियंत्रण में था, इसलिए सोशल मीडिया ही वह जगह बनी, जहां लोग अपनी बात खुलकर रख सके। यह पहला बड़ा उदाहरण था, जब ऑनलाइन पेज, वायरल वीडियो और हैशटैग्स ने वास्तविक सड़कों पर लाखों लोगों को आंदोलन के लिए संगठित कर दिया था।

अरब क्रांति के बाद दुनिया के युवाओं को समझ आया कि सोशल मीडिया के तमाम मंच मनोरंजन से कहीं आगे की बात हैं। 2011 के दौरान भारत में कॉमनवेल्थ घोटाले की सरागर्मी शुरू हुई, तो कुछ युवाओं ने सोशल मीडिया पर एक कैपेन चलाया 'कॉमनवेल्थ झेल।' उसे खूब पसंद किया गया। उसके बाद, अरविंद केजरीवाल की सलाह पर इंडिया अंगेस्टकरप्शन पेज की शुरूआत की गई, जिसके शुरूआती दो तीन दिनों में ही करीब तीन लाख सदस्य बन गए। जिमीनी स्टर पर आंदोलन ने जोर पकड़ना शुरू किया तो साइबर दुनिया में भी उसका असर दिखना शुरू हो गया। फेसबुक पर हजारों पेज बने तो ट्रिवटर पर हैशटैग 'अन्ना हजारे' और 'इंडिया अंगेस्ट करप्शन' देश-विदेश में ट्रेंड करने लगे। इससे आंदोलन पर अंतरराष्ट्रीय ध्यान गया। युवाओं ने यूट्यूब पर भाषण और वीडियो साझा किए, जिससे आंदोलन देशभर में फैल गया। अन्ना के प्रदर्शन की तस्वीरें और लाइव अपडेट लगातार शेयर होते रहे। उस वक्त मोबाइल एसएमएस कैपेन के जरिए भीड़ जुटाई गई और लोगों को तारीख, जगह और वक्त की जानकारी लगातार एसएमएस पर भेजी गई। आइटी सेक्टर और कॉलेजों के छात्र खास तौर पर ऑनलाइन सक्रिय थे तो उन्होंने पोस्टर, नारे और पीपां बनाकर आंदोलन को सोशल मीडिया पर "वायरल" कर दिया।

अन्ना आंदोलन के बाद 2012 में निर्भया कांड के वक्त सोशल मीडिया ने देश, खासकर राजधानी दिल्ली में जनाक्रोश को संगठित करने और आवाज राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने में बड़ी भूमिका निभाई। फेसबुक पर "जस्टिस फॉर निर्भया", "दिल्ली फॉर बुमेन सेपर्टी", "स्टॉप रेप नाड़" जैसे पेज बने, जिन पर हजारों लोग जुड़े और लगातार अपडेट, फोटो, नारे और विरोध-प्रदर्शन की जानकारी साझा होती रही। इसी तरह, ट्रिवटर पर निर्भया, दिल्ली गैंग रेप, जस्टिस फॉर हैशटैग ट्रेंड होने लगे। चेंजडॉटओराजी और आवाज जैसी साइट्स पर याचिकाएं शुरू हुई, जिन पर लाखों हस्ताक्षर हुए और सोशल मीडिया पर एकजुट लोगों ने अपने आप में एक दबाव समूह का काम किया।

दरअसल, भारत में अन्ना आंदोलन सोशल मीडिया के इस्तेमाल के संदर्भ में टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ। इस आंदोलन को सफल बनाने में सोशल मीडिया की भूमिका ने लोगों की राय बदल दी। मुख्यधारा के मीडियो में भी इन मंचों को जबरदस्त जगह मिली। हालांकि, मुंबई में 26/11 हमले के वक्त भी सोशल मीडिया की ताकत का अहसास देश के लोगों को हुआ था, लेकिन उसका केंद्र मुंबई था और उसका असर चंद दिनों तक था।

अन्ना आंदोलन के बाद सोशल मीडिया से जुड़े लोगों,

खासकर युवाओं के व्यवहार में आए बदलाव से जाहिर हुआ कि ये मंच सिर्फ मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं। संवैधानिक अधिकारों को लेकर संबंधित विभागों के कान खींचने से लेकर उपभोक्ता मामलों की शिकायत को लेकर कंपनियों को सीधे-सीधे चुनौती देने का काम इन्हीं मंचों से किए जाने की शुरूआत हुई। सोशल मीडिया के जरिए कई प्रोजेक्ट की 'क्राउडफंडिंग' हुई।

सोशल मीडिया की सबसे बड़ी ताकत है 'शेयरिंग और लाइकिंग'। यानी मोबाइल पर एक पल में लिखे-कहे को अपने समूह में बांटना। सोशल मीडिया के मंचों पर कम शब्दों में बात कहना सहज-सरल है। इसके अलावा, लिखे-कहे को फौरी प्रतिक्रियाएं मिल जाती हैं, और यह लोगों का उत्साह दोगुना करता है।

युवाओं को इस शक्ति का भान अधिक है, क्योंकि तकनीकी रूप से पिछली पीढ़ी से वे न केवल अधिक उन्नत हैं, बल्कि मोबाइल फोन के हर फीचर की उनमें ज्यादा समझ है और मोबाइल पर तेजी से दौड़ती उनकी उंगलियां हर नए मंच को और ज्यादा समझना चाहती हैं। जेन जी की इन मंचों पर शब्दावली भी अलग है, और इस शब्दावली को युवा ही समझ पाते हैं।

वैसे, यह भी सच है कि नेपाल, बाग्लादेश और श्रीलंका जैसे देशों में सोशल मीडिया की ताकत इसलिए भी अधिक दिखी क्योंकि उनका भौगोलिक क्षेत्र बहुत विस्तृत नहीं है। इन देशों में सोशल मीडिया के मंचों पर जंगल में आग की तरह फैलती सूचनाओं ने बहुत कम समय में युवाओं को अपनी जद में लिया और वे एक साथ अपने लक्ष्य पर अमल कर सके। हालांकि, भारत में वॉट्सऐप के करीब 55 करोड़, फेसबुक के करीब 42 करोड़ और ट्रिवटर के 23 करोड़ से ज्यादा यूजर्स हैं लेकिन भारत में इन सभी लोगों को एक साथ एक मकसद के लिए जोड़ना आसान नहीं है। इसकी वजह कई हैं। मसलन, अलग-अलग भाषाएं, संवेदना का अलग स्तर, अलग भौगोलिक परिस्थितियां और सरकार की शक्तियां। हालांकि सोशल मीडिया पर संचालित छोटे-छोटे कैपेन सीमित सफलता हासिल करते रहते हैं, लेकिन बड़े आंदोलन की सफलता तभी संभव है, जब कोई मुद्दा जमीन पर भी उतना ही प्रभावी हो।

निश्चित रूप से सोशल मीडिया ने आम लोगों को ताकत दी है, लेकिन इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि सोशल मीडिया के जरिए अफवाहों को पंख लगे हैं। ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं, जहां सोशल मीडिया पर फैलती अफवाहों की वजह से हिंसा फैली। सोशल मीडिया पर वायरल कंटेंट जंगल में आग की तरह फैलता है, और यही उसकी ताकत भी है और कमजोरी भी।

दूसरी तरफ, पारंपरिक मीडिया की विश्वसनीयता ही इसलिए है क्योंकि वहां गलत सूचनाएं एक हद तक छन जाती हैं। सोशल मीडिया में अमूमन ऐसा नहीं है। सरकारों के लिए यह बात अपने बचाव का मजबूत आधार भी है, जिसके जरिए वह सोशल मीडिया पर अंकुश की वकालत करती हैं। हाल में भारपा सांसद निशिकांत दुबे की अध्यक्षता वाली संसदीय संचार और सूचना-प्रौद्योगिकी प्रवर समिति ने कहा कि देश में कुछ प्रभावशाली लोग और इनफ्लुएंसर सोशल मीडिया पर राष्ट्रहित के खिलाफ काम कर रहे हैं। अब राष्ट्रहित के खिलाफ क्या है, यह बहुत जटिल बहस का मामला है।

(लेखक आज तक के पूर्व एजेंसीकूटिव एडिटर और सोशल मीडिया के जानकार हैं)

**सोशल मीडिया की सबसे बड़ी ताकत है 'शेयरिंग और लाइकिंग'**  
**युवाओं को इस शक्ति का भान अधिक है।**  
**मोबाइल फोन के हर फीचर की उनमें ज्यादा समझ है।**

ए.पी.



# डिजिटल क्रांतिवीर

अब क्रांति के लिए तबीयत से एक पत्थर उछालने की नहीं, सही प्लेटफॉर्म पर वायरल करने की तरकीब जरूरी



डॉ. उद्धव प्याकुरेल

**ने** पाल और दक्षिण एशिया के संदर्भ में लोकतांत्रिक विरोध की परंपरा पुरानी है। समय-समय पर यहां जनता सड़कों पर उत्तरती ही है। इसने लोकतंत्र की दिशा तय करने में अहम भूमिका निभाई है। मेरे अपने अनुभव और अवलोकन में यह साफ दिखता है कि हमारे समाज में लोकतांत्रिक चेतना अपेक्षाकृत मजबूत रही है। यही कारण है कि बार-बार हम यहां आंदोलनों और जनविरोध की आवाज देखते हैं।

नेपाल के आंदोलनों की शूरुखला को देखें, तो हर दशक में युवाओं की सक्रिय भागीदारी नजर आती है। 1990 का आंदोलन शांति पर आधारित था और उसे राजनैतिक दलों ने मिलकर आगे बढ़ाया। समाजवादी और वामपंथी धारा एक साथ आई और उसने लोकतंत्र को नई दिशा दी। 1996 से शुरू हुआ माओवादी आंदोलन हिस्क था, लेकिन उसका भी असर अंततः 2006 के जनआंदोलन द्वितीय तक पहुंचा। वह आंदोलन भी राजनैतिक दलों की अगुआई में हुआ और उसने नेपाल की राजनीति को बदल दिया। इन दो आंदोलनों के बीच का अंतर यही था कि पहला अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण था और दूसरे ने हिस्क दौर को समाप्त करते हुए लोकतंत्र को स्थिरता की ओर ले जाया।

1979 में जब पाकिस्तान में जुल्फिकार अली भुटो की हत्या हुई, तब नेपाल में भी युवाओं ने सड़कों पर उत्तरकर विरोध दर्ज किया। यह विरोध हिस्क भी हुआ क्योंकि उस समय की सत्ता ने उसे कठोरता से दबाने की कोशिश की। उसके नतीजे में तत्कालीन पंचायती शासन को यह विकल्प देना पड़ा कि या तो यह व्यवस्था जारी रहे या बहुदलीय लोकतंत्र लागू हो। उसके बाद, जनमत संग्रह हुआ लेकिन लोकतंत्र को हारा हुआ घोषित किया गया और एक दशक तक वही व्यवस्था जारी रही।

यहां यह स्पष्ट है कि युवाओं ने बिना किसी राजनैतिक दल की सक्रिय लाम्बंदी के साथ स्वतः स्फूर्त होकर सड़क पर उत्तरने की ताकत दिखाई। यह आंदोलन पूरी तरह युवाओं ने शुरू हुआ। इसमें अलग-अलग तरह की चिंताएं, शिकायतें, असंतोष और गुस्सा शामिल थे। विविध मुद्दों ने मिलकर एक साझा आवाज तैयार की। यही विविधता उसकी ताकत बनी। युवाओं ने उसे गति दी और देखते ही देखते यह प्रेरणा में फैल गया।

अब सवाल यह है कि डिजिटल युग में इन आंदोलनों की प्रकृति कैसी ही गई है। पहले जब हम विरोध करते थे, तो सूचना फैलाने के साधन सीमित थे। आज तकनीक ने स्थिति बदल दी है। अब सोशल मीडिया पर एक हैशटैग या एक वायरल वीडियो पूरे समाज को तुरंत जोड़ देती है। युवाओं के लिए सोशल मीडिया ऐसा मंच बन चुका है जहां वे अपनी नाराजी और गुस्से को तुरंत साझा कर सकते हैं। पुराने दौर में आंदोलन को आकार लेने में समय लगता था।

तकनीक के कारण एक और बदलाव आया है। डिजिटल माध्यमों ने नेताओं की जिंदगी को पारदर्शी बना दिया है। नेता चुनाव के समय कहते हैं कि वे जनता की सेवा के लिए हैं, लेकिन जनता तुरंत देख लेती है कि उनके बच्चे किन स्कूलों में पढ़ते हैं, कौन-सी गाड़ी चलती है, कौन-से बैग लेकर चलते हैं।

युवा इन तस्वीरों की अपनी सामाजिक-आर्थिक हकीकत से तुलना करते हैं। वे देखते हैं कि एक ओर देश में गरीबी और बेरोजगारी है, वहीं नेता ऐशो-आराम का जीवन जी रहे हैं। इस पारदर्शिता और सामाजिक असमानता के बीच का विरोधाभास युवाओं के गुस्से को और भड़काता है। नेपाल में यही हुआ।

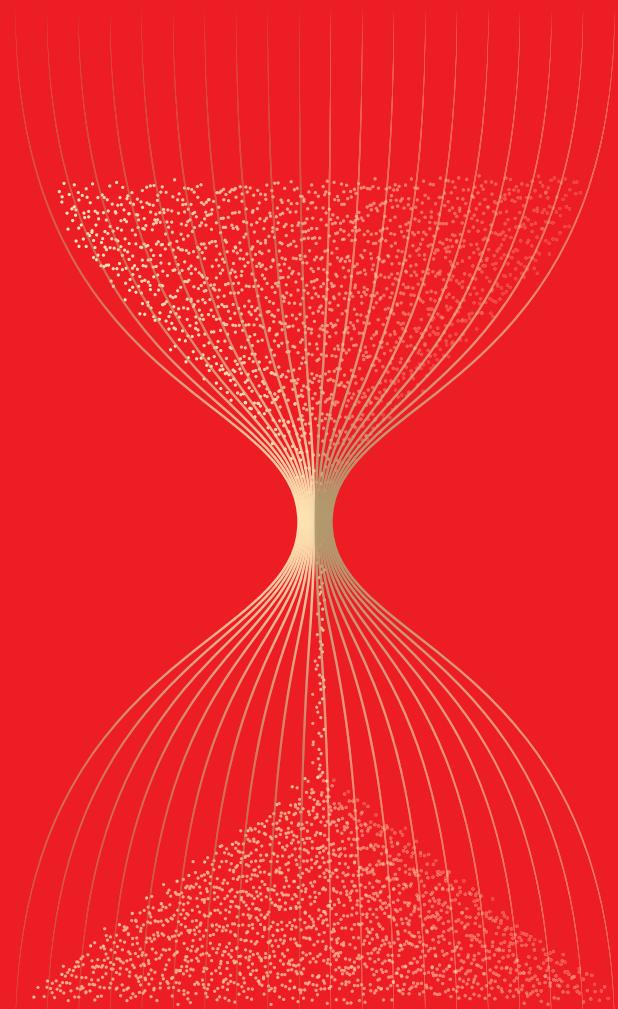
दक्षिण एशिया की बात करें, तो यहां अब भी सामंती मानसिकता मौजूद है। बड़ी गाड़ियां, सुरक्षाकर्मी और आलीशान मकान सत्ता का प्रतीक माने जाते हैं। लेकिन नई पीढ़ी इस मानसिकता से परिचित नहीं है। वे परिचर्मी समाजों से तुलना करते हैं, जहां सामंतवाद इतिहास बन चुका है। इसीलिए उनका गुस्सा और बढ़ जाता है। फिर भी, डिजिटल संदर्भ को केवल साधन भर मानना चाहिए। आंदोलन की आत्मा वही रहती है, सिर्फ उसे व्यक्त करने के माध्यम बदलते जाते हैं। 1990 के दशक में आंदोलन में शामिल युवाओं की बेचैनी और आज के युवाओं की बेचैनी अलग नहीं है। फक्त सिर्फ यह है कि आज उनके हाथों में तकनीक है। नेपाल में युवाओं के विरोध का चरित्र दिखाता है कि वे केवल राजनैतिक दलों पर निर्भर नहीं हैं। जब वे असंतुष्ट होते हैं तो खुद सड़क पर उत्तर आते हैं। यही उनकी ताकत है।

युवाओं का विरोध अक्सर ज्यादा तीव्र और कभी-कभी हिस्क भी हो जाता है। इसका कारण उनका गुस्सा और अधीरता होती है। वे बदलाव तुरंत चाहते हैं और जब सत्ता उन्हें दबाने की कोशिश करती है तो प्रतिक्रिया और भी उग्र हो जाती है। यही ऊर्जा अंततः राजनैतिक परिवर्तन का कारण बनती है।

नेपाल की लोकतांत्रिक यात्रा इस बात का प्रमाण है कि युवाओं की शक्ति को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। वे हर दौर में विरोध और बदलाव के केंद्र में रहे हैं। आने वाले समय में भी जब तक असंतोष और शिकायतें रहेंगी, तब तक यह परंपरा जारी रहेगी। बस माध्यम बदलते रहेंगे, लेकिन युवाओं की आवाज और ऊर्जा हमेशा समाज को हिलाने की क्षमता रखेगी।

(लेखक भारत-नेपाल संबंधों के विशेषज्ञ और राजनीतिक समाजशास्त्री हैं। विचार निजी हैं।)

**YOU'LL SPEND  
25+YEARS IN RETIREMENT**



**WILL YOUR SAVINGS  
LAST THAT LONG?**

# प्रतिबंध बनी चिंगारी

नेपाल की क्रांति ने बता दिया है कि युवाओं की अनसुनी, सत्ता पर भारी पड़ सकती है, संचादहीनता की खाई कम करना ही उपाय



निर्मल मणि अधिकारी

**ने** पाल में हुए ऐतिहासिक विरोध प्रदर्शनों ने न सिर्फ राजनीति को हिलाकर रख दिया, बल्कि संचार के क्षेत्र में भी नई बहस शुरू कर दी। विरोध प्रदर्शन डिस्कॉर्ड एप के जरिए संगठित किए गए, जो साबित करता है कि आज का युवा पुराने तौर-तरीके छोड़कर डिजिटल मंचों का सहारा ले रहा है। मैंने इन घटनाओं का गहराई से अध्ययन किया। मेरा मानना है कि यह सिर्फ संचार की नाकामी नहीं, बल्कि बड़ा पीढ़ीगत बदलाव है। नेताओं और युवाओं के बीच संचार की खाई गहरी हो गई है।

नेता, जैसे कार्यनिष्ठ पार्टी ऑफ नेपाल (यूएमएल) के केपी शर्मा ओली, शेर बहादुर देउबा और पुष्प कमल दहल प्रचंड, जो सत्ता के केंद्र में थे, पूरी तरह समाचार चैनलों, अखबारों, फेसबुक और एक्स पर निर्भर थे। वे युवाओं के असंतोष को भाप नहीं पाए, क्योंकि वे डिस्कॉर्ड जैसे मंचों से अनजान थे। डिस्कॉर्ड, युवाओं में कम से कम दो साल से लोकप्रिय था। जिस पर क्रांतिकारी युवा नए प्रधानमंत्री का चयन कर रहे थे और राष्ट्रपति के साथ बातचीत के लिए मुद्दे तय कर रहे थे। वहीं सत्ताधारी वर्ग इससे बेखबर था।

संचार का मतलब दो पक्षों के बीच सूचना का आदान-प्रदान है, लेकिन जब संचार के माध्यम अलग हों, तो रुकावटें आती हैं। नेता युवाओं को अपना श्रोता ही नहीं मानते थे। देश भ्रष्टाचार, महंगाई, बरोजगारी और युवाओं के विदेश पलायन से जूझ रहा था, लेकिन नेता सत्ता के खेल में डलझे थे। नतीजा? युवाओं का गुस्सा फूट पड़ा और डिजिटल मंचों ने इसे आवाज दी।

ए.पी.

जीत: भीड़ ने  
सिंह दरबार में भी  
आग लगाई



पुराने संचार माध्यमों में समाचार चैनल और अखबार एकतरफा थे, वहाँ जवाब देने का मौका कम था। नेपाल के ज्यादातर लोग पहली बार सोशल मीडिया पर एकजुट हुए, तो यह नई संचार क्रांति का प्रतीक था। सोशल मीडिया ने सूचनाओं को तुरंत और सभी के लिए सुलभ बना दिया। अब कोई भी व्यक्ति अपनी बात रख सकता है, एक पोस्ट, एक वीडियो या एक मजेदार मीम से हजारों लोग जुड़ सकते हैं। यह लोकतंत्र का नया रूप है, क्योंकि यह समय, मेहनत और संसाधन बचाता है।

नेपाल में, युवाओं ने सोशल मीडिया पर अपने गुरुसे को व्यक्त किया, जहाँ छह महीने पहले से ही 200 से ज्यादा समूह बने थे। ये समूह भ्रष्टाचार और सत्ताधारी नेताओं के खिलाफ थे। जब प्रधानमंत्री ने इन मंचों पर रोक लगाने की कोशिश की, तो यह आग में थी डालने जैसा हुआ।

पुराने विरोध, जैसे जनआंदोलन या मधेस आंदोलन में संचार धीमा था। तब समाचार चैनलों या मुंह-जुबानी प्रचार पर निर्भरता थी, जिसमें हफ्तों लग जाते थे। इस बार, 24 घंटे में ही विरोध चरम पर पहुंच गया क्योंकि सोशल मीडिया ने तुरंत सूचनाएं दीं। सरकार ने युवाओं पर जुल्म किए, तो खबर फैरैन फैली और प्रदर्शनकारियों की संख्या बढ़ गई। काठमांडू से लेकर छोटे कस्बों तक गुस्सा फैल गया। एक नया दृष्टिकोण जोड़ते हुए कहूं तो, विरोध अब सिर्फ सड़कों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह 'रील्प्र क्रांति' बन गया है। सोचिए, जहाँ पहले दीवारों पर नारे लिखे जाते थे, वहाँ अब हैशटैग और मीम ने जगह ले ली है।

एक मीम, जो भ्रष्ट नेताओं का मजाक उड़ाता है, वायरल होकर लाखों को जोड़ देता है। यह बदलाव ताकतवर है। यह सिर्फ विरोध नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विद्रोह है। युवा अपनी भाषा और शैली में बदलाव ला रहे हैं। रील्स में नारे और हैशटैग में मुद्दे, यह नई पीढ़ी की रचनात्मकता है। डिजिटल सहायता के बिना छोटे कस्बों तक पहुंचना नामुमकिन था।

जेन जेड पर पुरानी पीढ़ी का इल्जाम है कि वे रील्स देखने और सोशल मीडिया पर स्कॉल करने में डूबे रहते हैं और राजनीति से दूर हैं। लेकिन नेपाल, बांगलादेश और भारत के उदाहरण इसके उल्लंघन हैं। युवा राजनीतिक बातचीत में सक्रिय हैं, लेकिन अपने तरीके से। वे पुराने ढर्ने पर नहीं, बल्कि अपनी बात और अपने मंचों से जुड़ते हैं।

वैश्विक नजरिए से देखें तो भारत का किसान आंदोलन, बनैक लाइव्स मैटर या ब्रिटेन में हाल का आप्रवासन विरोध, सभी में तकनीक-प्रेमी युवा डिजिटल मंचों का इस्तेमाल कर रहे हैं। ये युवा शोध में कुशल और अपनी बात कहने में माहिर हैं। इससे दिक्षिण एशियाई सरकारें क्या सीखेंगी? अगर वे चाहें, तो सीख सकती हैं। राजनीतिक संचार में कुछ रुक्षान हैं, कारणों का विश्लेषण कर तैयारी की जा सकती है। लेकिन सीखने का मतलब सख्त नियंत्रण नहीं, बल्कि लोगों को शांतिपूर्वक अपनी बात कहने का मौका देना है। अगर गुस्से को दबाया गया, तो हिंसा बढ़ेगी। सरकारों को नई पीढ़ी की उम्मीदों का जवाब देना होगा। ये उम्मीदें पुरानी नहीं, बल्कि डिजिटल युग की हैं। पुराने ढर्ने की बातों से संतुष्टि नहीं मिलेगी। अगर नेता युवाओं को अपना श्रोता मानें और उनके मंचों पर उतरें, तो संचार की नाकामी टाली जा सकती है। वरना, यह पीढ़ीगत बदलाव और तेज होगा।

(लेखक काठमांडू यूनिवर्सिटी में जनसंचार विभाग के अध्यक्ष हैं। विचार निजी हैं।)



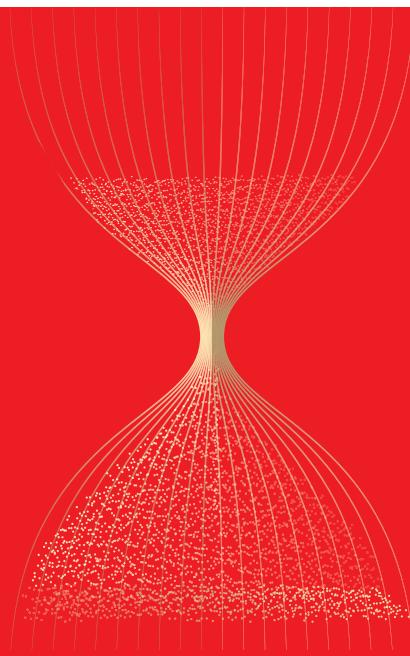
PRESENTS



## BUILD YOUR FUTURE FUND



**India's Biggest Retirement  
And Financial Planning Expo**



**20th - 21st February, 2026**

**Jio World Convention Centre, BKC, Mumbai**

For more information, visit  
[retirement.outlookindia.com/forty-after-forty](http://retirement.outlookindia.com/forty-after-forty)



**Register Now**

# हाथ मिलाते रहिए

एशिया कप में भारत पाकिस्तान के बीच मुकाबले में जो हुआ वह दोनों ही मुल्कों के लिए बद से बदतर हो रहे रिश्तों की ओर इशारा



दूरी से ही: टॉस के दौरान सूर्यकुमार यादव और सलमान आगा के साथ मैच रैफरी पाइक्रॉफ्ट

## मंथन रस्तोगी

**ब**हुत साल पहले, उस्ताद शायर निदा फाजली कह गए हैं, “‘दुश्मनी लाख सही, खत्म न कीजे रिश्ता, दिल मिले या न मिले हाथ मिलाते रहिए।’” लेकिन लगता है, भारत-पाकिस्तान की क्रिकेट टीमों के कसानों या उनके हुक्मरानों को शायद यह शेर याद नहीं या फिर वे इससे इत्तेफाक नहीं रखते। इस बार एशिया कप 2025 में भारत पाकिस्तान के बीच क्रिकेट मुकाबले में जो हुआ वह दोनों ही मुल्कों के लिए बद हो रहे रिश्तों के बदतर हो जाने की ओर इशारा करता है। खेल पर तो इसका असर हुआ ही, राजनीति को भी इसमें घुसने का बिना मांगा मौका मिल गया।

भारत और पाकिस्तान का बच्चा-बच्चा जानता है कि पहलगाम हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर नाम से हुई भारतीय सेना की कार्रवाई से दोनों देशों के बीच रिश्तों में चली आ रही कड़वाहट कुछ ज्यादा ही बढ़ गई थी। इसका असर खींचकर क्रिकेट के मैदान तक ले जाया गया और यह साफ दिखाई भी दिया। एशिया कप टूर्नामेंट के दौरान ‘हैंडशेक विवाद’ इतना बड़ा हो गया कि इससे खेल भावना तो आहत हुई ही, प्रशासनिक दृष्टि से भी दोनों देशों के खेल रिश्तों पर तनाव की मोटी सतह छा गई। यह विवाद केवल मैदान तक सीमित रहता तब भी कोई

बात नहीं होती, लेकिन यह मैदान से निकल कर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद तक पहुंच गया।

हुआ यूं कि 14 सिंतंबर को दुर्बाइ में खेले गए भारत-पाकिस्तान मुकाबले से माहौल पहले ही तनावपूर्ण था। भारत की तरफ से पहले ही तय कर लिया गया था कि टीम औपचारिक रूप से किसी भी पाकिस्तानी खिलाड़ी से हाथ नहीं मिलाएंगी। इस बारे में मैच रेफरी एंडी पाइक्रॉफ्ट को टॉस से पहले ही सूचित किया गया था। तय रणनीति के तहत टॉस के बाद सूर्य कुमार पाकिस्तानी कसान से हाथ मिलाए बिना आगे बढ़ गए। फिर भी मैच हुआ और भारत ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पाकिस्तान को सात विकेट से हराया। मैच में युवा खिलाड़ियों का आत्मविश्वास



**भारत पाकिस्तान का मुकाबला अब पहले जैसा प्रतिद्वंद्विता भरा नहीं रहा। हमारी टीम केवल क्रिकेट पर ध्यान केंद्रित कर रही है सूर्यकुमार यादव टी20 टीम के कसान**

और गेंदबाजों की धार स्पष्ट दिखी। पाकिस्तान की पारी में लगातार विकेट गिरते रहे और भारत ने लक्ष्य आसानी से हासिल किया। तीन विकेट लेकर कुलदीप यादव इस मुकाबले के हीरो बने।

जीत के बाद जब भारतीय खिलाड़ी पाकिस्तान की टीम से हाथ मिलाए बौरे मैदान से सीधे ड्रेसिंग रूम चले गए तब पाकिस्तान ने भी प्रतिक्रिया दी और टीम मैच के बाद होने वाले प्रेजेंटेशन समारोह में शामिल नहीं हुई। उनसे जब हाथ न मिलाने पर सवाल किया गया, तब उन्होंने कहा कि जीवन में कुछ चीजें खेल भावना से बड़ी होती हैं। पाकिस्तान बोर्ड ने इस हरकत पर भारतीय टीम को आड़े हाथों लिया और कहा कि भारतीय क्षण और टीम का व्यवहार अस्वीकार्य है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने एशियन क्रिकेट काउंसिल और आइसीसी से औपचारिक शिकायत दर्ज कराई। पीसीबी ने रेफरी पाइक्रॉफ्ट को भी इस मैसले में घसीटा और कहा कि उन्होंने मामले को “गंभीरता” से नहीं लिया और “परंपरा” की रक्षा के लिए कोशिश नहीं की। उन्होंने मांग की कि पाइक्रॉफ्ट को टूर्नामेंट से हटाया जाए। पाकिस्तान ने संकेत दिया कि यदि उनकी बात नहीं मानी गई तो वे एशिया कप से हट सकते हैं।

आइसीसी ने इसका संज्ञान लेकर जांच शुरू की और पाया कि पाइक्रॉफ्ट पर कोई आरोप साबित नहीं होता। उन्होंने वही किया जिसकी उन्हें सूचना मिली थी। इसलिए नियम का उल्लंघन नहीं हुआ और उन्हें

हटाने का सवाल ही नहीं उठता। आइसीसी ने किसी भी प्रकार के दबाव में छुकने से साफ इनकार कर दिया। अगले दिन पाकिस्तान-यूएई के मुकाबले से पहले स्थिति और जटिल हो गई। पाकिस्तान टीम मैदान पर निर्धारित समय से बहुत देर से पहुंची, जिससे मैच लगभग एक घंटे देरी से शुरू हुआ। पाकिस्तानी टीम मैनेजरमेंट ने रेफरी एंडी पाइक्रॉफ्ट से सीधे चर्चा हुई। पाइक्रॉफ्ट ने स्पष्ट किया कि जो हुआ उसमें केवल संवाद की कमी रही और किसी प्रकार के नियम का उल्लंघन नहीं हुआ। पाकिस्तान की टीम ने इस बातचीत का वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड तो किया लेकिन इसमें अॅडियो यानी आवाज नहीं थी। इस वीडियो के बारे में पाकिस्तानी टीम ने बताया कि पाइक्रॉफ्ट ने माफी मांगी है। आइसीसी ने इस पर भी आपत्ति जताई और स्पष्ट किया कि नियमों का उल्लंघन न होने पर किसी को हटाने का सवाल ही नहीं उठता। गतिरोध टूटा और मैच शुरू हुआ लेकिन विवाद की छाया बनी रही।

पाकिस्तान मुकाबला जीतकर टूर्नामेंट के अगले चरण में प्रवेश कर गया। लेकिन, आइसीसी ने सुपर 4 के मुकाबले के लिए भी पाइक्रॉफ्ट को ही रेफरी नियुक्त किया। इस बार भारत और पाकिस्तान जब आमने-सामने आए तो एक बार फिर वही दृश्य दोहराया गया। टॉप के समय हाथ नहीं मिलाया गया। पहले बल्लेबाजी करने उत्तरी पाकिस्तान की टीम इस बार सकारात्मक दिखी लेकिन मैच में 10

ओवर के बाद भारत की वापसी ने यह सुनिश्चित किया कि वे 20 ओवर में 171 रन ही बना सकें। भारत की ओर से शिवम दुबे ने 4 ओवर में 33 रन देकर 2 विकेट झटके। लक्ष्य का पीछा करने उत्तरी भारतीय टीम ने दमदार शुरूआत की। शुभमन गिल (28 गेंदों पर 47 रन) और अभिषेक शर्मा (39 गेंदों पर 74 रन) ने पहले विकेट के लिए धुआंधार साझेदारी (105 रन) की। भले ही बीच में कुछ विकेट गिरे लेकिन लक्ष्य कपी मुश्किल नहीं लगा। भारत ने 7 गेंद शेष रहते मुकाबला 6 विकेट से जीत लिया। अभिषेक शर्मा को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। हालांकि इस मुकाबले में पाकिस्तानी खिलाड़ी कई भौंकों पर टीम इंडिया के खिलाड़ियों से उलझते दिखे। पाकिस्तान के लिए यह हार और भी भारी रही क्योंकि विवाद और तनाव के बीच उनकी टीम का मनोबल प्रभावित होता दिखा।

सूर्यकुमार यादव ने बाद में कहा कि भारत पाकिस्तान का मुकाबला अब पहले जैसा प्रतिद्वंद्विता भरा नहीं रहा। उन्होंने कहा कि हमारी टीम केवल क्रिकेट पर ध्यान केंद्रित कर रही है और और और उन लोगों ने बाहरी माहौल से दूरी बनाए रखने की कोशिश की है। उन्होंने यह भी कहा कि इस पूरे विवाद के दौरान खिलाड़ियों ने फोन बंद रखे और शोरगुल से बचने की कोशिश की ताकि ध्यान केवल खेल पर बना रहे। पाकिस्तान ने इस घटना को क्रिकेट की परंपराओं और आपसी सम्मान पर चोट बताया। मैंडिया और सोशल मीडिया पर इस विवाद ने बड़ा स्थान लिया। भारतीय और पाकिस्तानी दर्शकों के बीच बहस चली। कुछ ने कहा कि खेल भावना की अनदेखी हुई है जबकि कुछ ने माना कि राजनीतिक परिस्थितियों में यह कदम उचित था।

विवाद ने यह भी दिखाया कि अंतर्राष्ट्रीय खेल संस्थाएं किस तरह दबाव में आती हैं और कैसे अपने फैसले पर कायम रहना पड़ता है। आइसीसी ने अगर पाइक्रॉफ्ट को हटाया होता तो यह संस्था की साथ पर प्रश्नविवर होता। विशेषज्ञों ने आइसीसी के इस कदम को उसकी मजबूती के तौर पर देखा।

पूरा घटनाक्रम बताता है कि क्रिकेट केवल रन और विकेट का खेल नहीं है। यह परंपराओं, भावनाओं और देशों के रिश्तों से जुड़ा हुआ है। हाथ न मिलाने की साधारण घटना इतना बड़ा विवाद खड़ा कर सकती है कि टूर्नामेंट की दिशा बदल जाए। कई लोगों ने इसे पहलगाम हमले और अॉपरेशन सिंदूर के प्रतीक के रूप में देखा। एशिया कप 2025 का यह अध्याय लंबे समय तक याद किया जाएगा। इससे लगता है कि खेल और राजनीति को पूरी तरह अलग करना आसान नहीं है। खिलाड़ियों और अधिकारियों को ऐसे संवेदनशील हालात में संतुलन बनाए रखने के लिए और सतर्क रहना पड़ता है। क्रिकेट केवल मैदान पर नहीं खेला जाता यह लोगों के दिलों में भी चलता है।



**खेल विवाद:** जोड़ीदार बने शुभमन और अभिषेक, हारिस रक्फ के साथ विवाद (इनसेट में)



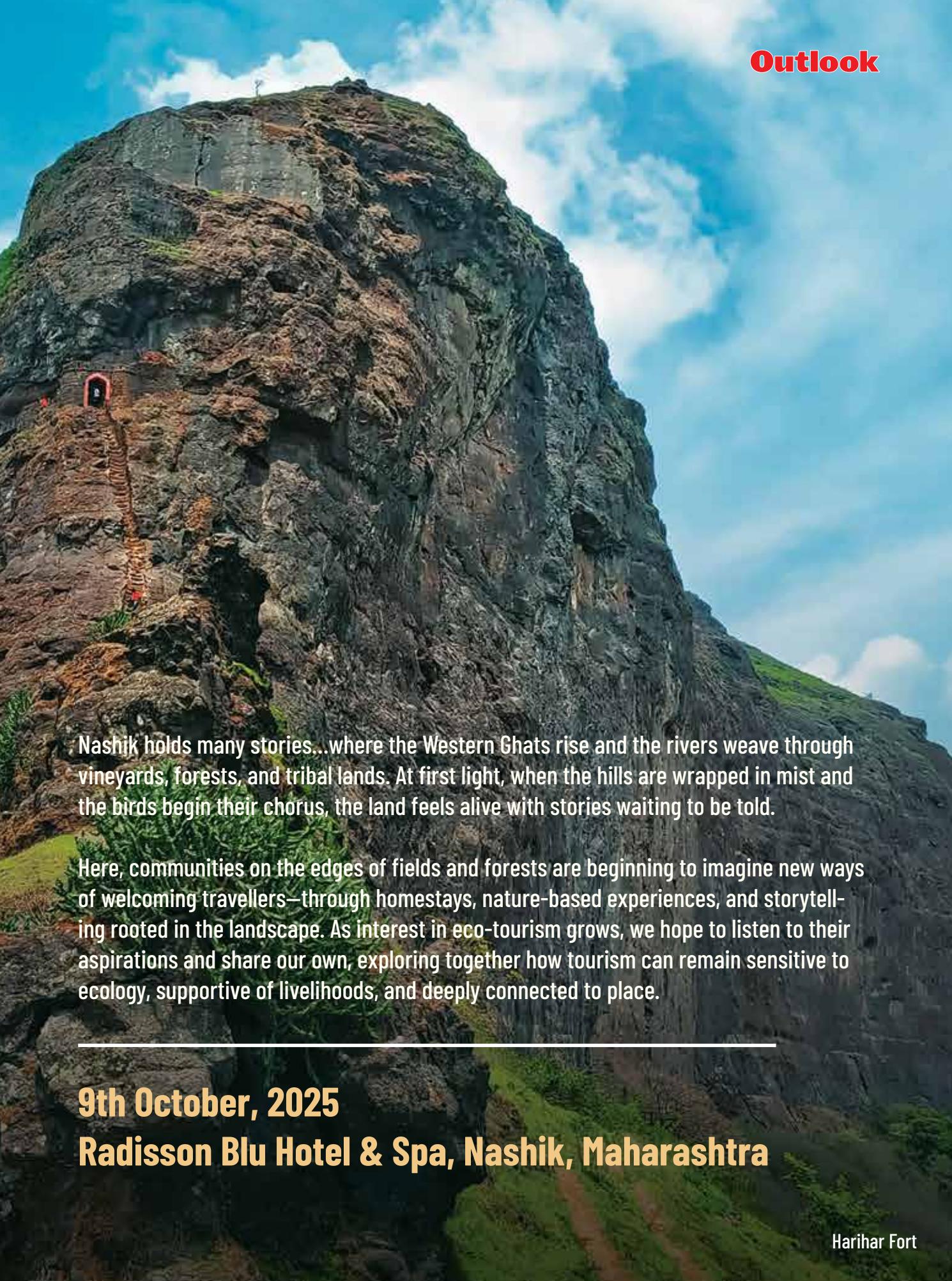
# Nature-First Tourism Workshop

Building Sustainable Businesses Rooted  
in Ecology & Community

**Registrations Open**



Scan this Code  
to attend the workshop



Nashik holds many stories...where the Western Ghats rise and the rivers weave through vineyards, forests, and tribal lands. At first light, when the hills are wrapped in mist and the birds begin their chorus, the land feels alive with stories waiting to be told.

Here, communities on the edges of fields and forests are beginning to imagine new ways of welcoming travellers—through homestays, nature-based experiences, and storytelling rooted in the landscape. As interest in eco-tourism grows, we hope to listen to their aspirations and share our own, exploring together how tourism can remain sensitive to ecology, supportive of livelihoods, and deeply connected to place.

---

**9th October, 2025**

**Radisson Blu Hotel & Spa, Nashik, Maharashtra**



जगदीप छोकर [1944-2025]

# लोकतंत्र का पहरा

कुमार प्रशांत

**ज**गदीप छोकर नहीं रहे, खबर चुपचाप गुजर नहीं जाती, थरथराती हुई, संग चलती है। एक आदमी की मौत और जुनून की मौत में फर्क होता है न! जगदीप छोकर की मौत ऐसे ही जुनून की मौत है। उन्होंने दिलोजान से लोकतांत्रिक चुनाव प्रणाली के संरक्षण और सुधार के उपाय सोचे ब किए।

नाम और काम की विरूपता को लेकर काका हाथरसी ने कई हास्य कविताएं लिखी थीं। लेकिन ऐसा उन्होंने भी नहीं सोचा होगा कि एक ही नाम के दो व्यक्तिविरूपित भूमिकाओं में हो सकते हैं। मैं ऐसी तुलना कभी सोचता लेकिन लापता लेडीज वाले अंदाज में पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ 53 दिनों बाद जिस रोज प्रकट हुए, उसी रोज जगदीप छोकर विदा हुए। तब ख्याल आया कि एक ही नाम के दो व्यक्तिओं में कितना गहरा फर्क है। जगदीप छोकर ने जाते-जाते भी जैसे रीढ़विहीन सत्ता-पिपासा के खिलाफ अपना बयान दर्ज करा दिया।

जगदीप छोकर दरबार के आदमी नहीं थे। कभी अहमदाबाद के आइआइएम में प्रोफेसर रहे छोकर

साहब ने वहां से निवृति के बाद कुछ सहमना लोगों के साथ जुड़कर एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफर्म या एडीआर नाम का संगठन बनाया और उसी के होकर रह गए। संसदीय लोकतंत्र में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव की अपनी जगह होती है। ऐसी जगह जो न बदली जा सकती है, न चुराई जा सकती है, न छीनी जा सकती है, न उसे किसी की जेब में छोड़ा जा सकता है। ऐसा कुछ भी हुआ तो संभव है कि लोकतंत्र का तंत्र बना रहे लेकिन उसकी आत्मा दम तोड़ देती है। यह बुनियादी बात है। (उनके और एडीआर के प्रयासों से ही चुनाव में उम्मीदवार संपत्ति से लेकर मुकदमों की जानकारी देते हैं, हर उम्मीदवार और पार्टी चुनावी खर्चों का हिसाब देने को मजबूर है। एडीआर के जरिए ही हम जानते हैं कि हमारी संसद और विधानसभाओं में कितने आपराधिक मुकदमों वाले हैं। एडीआर ने ही बिहार के विशेष सघन पुनरीक्षण को चुनौती दी।)

जब देश में संसदीय लोकतंत्र आया-ही-आया था, संसदीय प्रणाली से अपने स्तर पर एक किस्म की अरुचि रखने वाले गांधी भी चुनाव की इस भूमिका को समझ रहे थे और इसे लेकर सावधान भी थे। वे अलग-अलग शब्दों में यह बात कहते रहे कि

चुनाव की मजबूत निगरानी जरूरी होगी, क्योंकि यहां से लोकतंत्र को धोखा देने का प्रारंभ हो सकता है। इसलिए गोली खाने से पहले बाली रात, अपने जीवन का आखिरी दस्तावेज उन्होंने लिखा ताकि कंप्रेस उस पर विचार करे। उसमें दूसरी कई सारी बातों के साथ-साथ यह भी दर्ज किया कि मतदाता सूची में नाम जोड़ने-काटने-हटाने का काम विकेंद्रित हो और ग्राम-स्तर पर लोकसेवकों द्वारा किया जाए। चुनाव आयोग जैसे भारी-भरकम सफेद हाथी को पालने की बात उन्हें कभी रास नहीं आई। गांधी को दरअसल गोली मारी ही इसलिए गई कि वे लगातार खतरनाक विकल्पों की तरफ देश को ले जाने में लगे थे।

आजादी के बाद और गांधी के बाद लोकतंत्र के संवर्धन की तरफ सबसे ज्यादा ध्यान किसी ने दिया और काम किया, तो वे जयप्रकाश नारायण थे। देश मन ही मन उन्हें जवाहरलाल का विकल्प मानता था। लेकिन चुनाव में पराजय के बाद, उनके ऐसे प्रयासों को पराजित विपक्ष का रुदन भी माना गया। आजादी के बाद वे जयप्रकाश ही थे जिन्होंने चुनाव सुधार के लिए समिति का गठन किया। यह भी लोकतंत्र के संदर्भ में नया प्रयोग था कि केवल सरकारी नहीं, नागरिक समितियां भी बनाई जाएं, जांच आयोग गठित किए जाएं। जब हम गुलाम थे, तब भी गांधी की पहल से जालियांबाला बाग हत्याकांड की जांच के लिए नागरिक समिति बनी थी, जिसके गांधी भी सदस्य थे। जयप्रकाश ने ऐसे अनेक आयोग का गठन किया, प्रशासनिक सुधार पर भी, शिक्षा-व्यवस्था पर भी। बाद में तो लोकतंत्र का सबाल उन्होंने इतना अहम बना दिया कि संपूर्ण क्रांति का पूरा आंदोलन और दर्शन खड़ा कर दिया।

कई मौकों पर इस तरह की बात छोकर साहब से हुई। चुनाव प्रणाली का केंद्रीकरण बना रहे और सत्ता उसका दुरुपयोग न करे, यह सोचना नादानी है और फलहीन भी। वे दो-एक बार मुझसे उलझे भी फिर यह कह कर बात खत्म की कि मैं नया कुछ बनाने जैसी बात कहने की योग्यता नहीं रखता और मेरी कोशिश जो चल रहा है, उसमें पैबंद लगाने की है।

यह दर्जींगिरी भी खासे महत्व की है। संसदीय लोकतंत्र को बनाने का काम जितना चुनौतीपूर्ण है, उतना ही चुनौतीपूर्ण है उसे लोकतांत्रिक बनाए रखने का काम। सत्ता को उतना ही लोकतंत्र चाहिए होता है, जितने से उसकी सत्ता सुचारू चलती रहे। लोकतंत्र चाहने वालों को विकासशील लोकतंत्र से कम कुछ नहीं पचता। लोकतंत्र का आसमान लगातार बड़ा करते चलने की जरूरत है, क्योंकि जो नागरिक के पक्ष में विकसित न हो, वह लोकतंत्र नहीं है। जगदीप छोकर ऐसे विकासशील लोकतंत्र के सिपाही थे। वे अब नहीं रहे। लोकतंत्र रहा क्या? लोकतंत्र रहे होगा क्या? यह सबाल और चुनौती हमें सौंप कर छोकर साहब जहां गए हैं, वहां भी वे लोकतंत्र की लड़ाई लड़ते ही मिलेंगे।

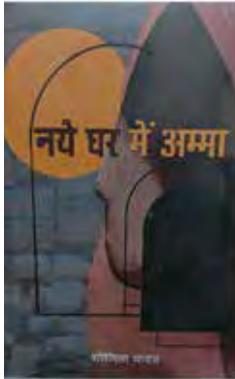
# हाशिये की आवाज

दिवाकर

**यो**

गिता यादव के कहानी संग्रह नये घर में अम्मा की कहानी 'तस्कीन' पढ़ते हुए मुझे अपने भी बहुत से अनुभवों की याद आती रही। उनकी कहानी में एक संवाद ही आज के समाज में पल-बढ़ रहीं स्थितियों को दिखाने के लिए काफी है, "जाली टोपी वाले, लंबी दाढ़ी वालों से सामान लेना तो उहाँने पहले ही छोड़ दिया था। अब डिजिटल पेमेंट ने बिना दाढ़ी, बिना टोपी के भी उहाँ धरचानना आसान कर दिया।" फिल्म केरला स्टरो का नाम लिए बगैर उसके लिए बनाई गई हाप की चर्चा में यह डायलॉग उस वक्त, बल्कि अब भी होने वाली बातचीत को बिल्कुल सामने ला देता है, "हम मगन हैं अपनी दाल-रोटी में, ये हर मुहल्ले को सीरिया बना देंगे। अब जाकर तो लोगों में बोलने की हिम्मत आई है। फिल्में भी बनने लगी हैं। वरना आज से दस साल पहले कहां सभव था ऐसी फिल्में बनाना और उसे पर्दे पर दिखाना! हर बहन-बेटी वाले को देखनी चाहिए यह फिल्म।"

इस संग्रह में वेरायटी है और यही उसकी अच्छी बात है। योगिता ने किसी कहानी में खुद को रिपीट नहीं किया है। दूसरी अच्छी बात यह है कि क्राफ्ट आसान रखा है— क्राफ्ट और भाषा के जरिये 'बौद्धिक आतंक' पैदा करने की कोशिश नहीं की है।



## नये घर में अम्मा

योगिता यादव

प्रकाशक | सेतु

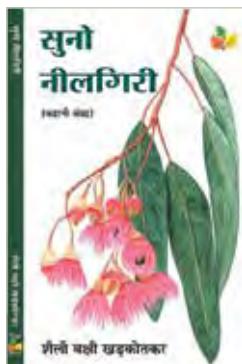
कीमत: 225 रु.

पृष्ठ: 125

जैसे भाप कहानी। हिंदी पढ़ी जाति के भेदभाव के लिए खासी बदनाम है लेकिन उसे मुद्दा बनाकर खारिज कर देने की प्रवृत्ति पूरे भारत में है। लेकिन भाप में ऐसा का कोई आवरण नहीं है। समाज को जाति से परहेज नहीं है, अगर आपके परिवार का रसूख हो। "गली और मोहल्ले में अब सब उहाँ धाणियां मैडम कहकर पुकारने लगे थे। दूर-दूर तक यह बात मशहूर हो गई थी कि धाणियां मैडम ने तीनों बेटों को खुद पढ़ाया और आज वे आइएप्स हैं। किनने ही लोग चाहते हैं कि वे उनके बच्चों को ट्यूशून पढ़ा दें।" कहानी का अंतिम वाक्य मारक है, "पर अब भी कभी-कभी कोई पीठ पीछे पूछ ही लेता था, 'धाणियां कौन होते हैं? धीवर? नहीं चूड़े, और नहीं शायद चमार।'

नये घर में अम्मा भी ऐसी ही कहानी है, जो बिल्कुल दमित, शोषित, हाशिये के वर्ग के किसी व्यक्ति में किंचित भी आर्थिक, सामाजिक प्रतिष्ठा मिल जाने पर पैदा होने वाले आत्मविश्वास को सामने लाती है। ऐसे व्यक्ति को ऐसी स्थिति तब ही प्राप्त होती है, जब लगभग संयोगवश सरकारी पहुंच वाला कोई सहदय व्यक्ति मिल जाता है। वरना, सरकारी योजनाएं भी कहां बिल्कुल निचले स्तर के जरूरतमंद तक पहुंच पाती हैं।

हर लड़की, हर महिला जानती है कि शोषण की शुरुआत परिवार से ही होती है। ताऊ जी कितने अच्छे हैं पढ़ते हुए यह समझा जा सकता है कि छोटी बच्ची भी कैसे मानसिक संताप से गुजरती है। शहद का छत्ता और गंध उन स्थितियों को सामने लाती हैं जिससे आज की कामकाजी लड़कियां रू-ब-रू हैं। आर्थिक-सामाजिक विकास के साथ समाज नए दौर से गुजर रहा है। योगिता ने इस दौर को समझा और पकड़ा है।



## सुनो नीलगिरी

शैली बक्षी खड़कोतकर

प्रकाशक | शिवना

कीमत: 124 रु.

पृष्ठ: 200

# सहज और प्रभावी कहानियां

## आशुतोष दुबे

मेरा हमेशा से मानना रहा है कि मनुष्यता और उसमें समाहित तमाम सकारात्मकताएं पाठक के लिए किसी भी अनुभूत या ओढ़ी हुई पीड़ा, घुटन और संत्रास से अधिक नहीं, तो वैसी ही हृदयस्पर्शी हो सकती हैं। आत्मीयता, करुणा, प्रेम, उपकार, आभार, उत्तरदायित्व और अपराध बोध, मानवीय अनुभव संसार के ऐसे क्षेत्र हैं, जो हमारी आस्था को दृढ़ करते हैं। 'सुनो नीलगिरी' शैली बक्षी खड़कोतकर का ऐसा ही कहानी संग्रह है, जो आसपास बिखरे इन अनुभव क्षणों को बहुत सहजता और रोचकता से दर्ज करता है। 'सुनो' वाले शीर्षक बहुत घिस गए हैं और ताजगी के प्रति संदिग्ध बना देते हैं। लेकिन आशंकाओं के विपरीत इस कथा संग्रह को पढ़ना सुखद विस्मय में जाना है। शैली में कल्पनाशीलता के साथ आसपास बिखरी हुई कहानियों को दिलचस्प ढंग से कहने का सलीका है। वे इन दिनों की 'चर्चित' विषय और विमर्श सूची से अलग, अतिपरिचित के अलक्षित को देखती-दिखाती हैं। उन्हें पढ़कर कहा जा सकता है कि वे हिंदी कहानी में मालती जोशी की परंपरा को आगे ले जाने वाली अगली पीढ़ी की कथाकार हैं। बदलते सामाजिक,

परिवारिक संदर्भ भी उनके यहाँ हैं, वंचित वर्ग पर कोरोना की मार के साथ जो आर्थिक महामार पड़ी, उसे भी उहाँने दर्ज किया है, बच्चे की नजर से स्कूल को भी देखा है, बचपन की वे कस्टर्वाई दोस्तियां, जो ट्रांसफर के साथ ही आकस्मिक अंत की ओर चली जाती हैं, वह बेटा जो मां से बहुत प्यार करने के बावजूद महानगरीय नौकरी की आपाधापी में उसे समय नहीं दे सकता, घर में अकेले बुजुर्ग से घड़ी की अदावत— ऐसे कई क्षण शैली ने अपनी बहुत रोचक शैली में कहानियों में गूंथ हैं। उनका नैरेशन शोखी, शारात, संघर्ष, अकेलेपन, कृतज्ञता, सब कुछ को सहज और प्रभावी रोचकता से व्यक्त करता है। एक मजेदार कहानी में तो स्कूली ही नैरेटर है, जो अपनी अनाड़ी मालकिन की ड्राइविंग की कॉमिकल, रोमांचक कहानी कहती है। लेकिन इस एडवेंचर में एक गृहिणी की 'मुक्ति' और 'उपलब्धि' का बोध वह तत्व है, जो इस कहानी को अर्थ के अलग ही स्तर पर ले जाता है। शैली स्वभावतः कुटुंब की ओर नहीं जाती। दुख से परहेज नहीं करती, उसे समझने की कोशिश करती है, लेकिन उनकी कहानियों में प्रायः जीवन के शुभ की, उसकी सकारात्मकता की प्रतिष्ठा है। उनके पास कथा को सरस ढंग से कहने का कौशल भी है।

बहुत थोड़ा ही सही मगर भारतीय सिनेमा में भोजन और कहानियों का रिश्ता बेहद आत्मीय और बहुरंगी रहा है, कभी यह रिश्तों को जोड़ने वाला माध्यम बनता है, तो कभी जीवन की जटिलताओं और संवेदनाओं को समझाने का जरिया

# खाना, सिनेमा और संस्कृति

अवशेष चौहान

**ह**र साल भारत में बनने वाली हजारों फिल्मों में भोजन में संस्कृति पर केंद्रित फिल्में न के बराबर हैं। हिंदी सिनेमा में रेस्तरां, ढाबों और पांच सितारा होटलों की उपस्थिति तो दिखाई देती है, लेकिन वहां भोजन सिर्फ परिदृश्य के रूप में इस्तेमाल होता है, संस्कृति के वाहक के रूप में नहीं। मसलन, अक्टूबर में नायक का रेस्तरां खोलने का सपना कथा का एक भाग भर है, प्रमुख कथानक प्रेम कहानी है। इसी तरह, 26/11 के आतंकवादी हमलों पर आधारित फिल्म होटल मुंबई विषय की वजह से होटल को केंद्र में तो रखती है, पर भोजन संस्कृति से उसका कोई प्रत्यक्ष संबंध स्थापित नहीं होता। यह संकेत है कि भारतीय सिनेमा में भोजन को सांस्कृतिक विमर्श का विषय बनाने की परंपरा अब भी विकसित नहीं हो सकी है। खैर, बालीवुड में भोजन संस्कृति को चिह्नित करने वाली कुछ फिल्में और वेब सीरीज हैं। जैसे खाने की खुशबू से सजी नेटफिल्म्स की सीरीज किलर सूप अच्छी मर्डर मिस्ट्री है, लेकिन इसके भीतर रेस्टोरे के सपनों और संघर्ष की आंच भी पकती रहती है, जिसे कॉंकणा सेन और मनोज बाजपेयी ने बखूबी निभाया है। ऋषि कपूर के अभिनय वाली अंतिम फिल्म शर्माजी नमकीन बुर्जुग पिटा के जीवन को नया अर्थ देती है। रिटायरमेंट के बाद वह रसोई की दुनिया में अपनी पहचान ढूँढ़ लेता है। शेफ में सैफ अली खान का किरदार अपने बेटे और परिवार से टूटी हुई डोर को जोड़ने के लिए खाना पकाने और फूड ट्रक की संस्कृति को अपारा है। भोजन की विरासत को याद करती फिल्म लव शबनम ते चिकन खुराना पंजाबी स्वाद की महक के साथ दादा की खोई हुई रेसिपी तलाशने की कहानी कहती है। स्टेनली का डब्बा मासूम बच्चे की भूख, स्कूल और रिश्तों की नमी को पेश करती है, तो चीनी क्रम में अमिताभ बच्चन और तब्बू की अनोखी प्रेमकथा हैदराबादी पुलाव की खुशबू से शुरू होकर पीढ़ियों की दूरी को पारती है।

इंग्लिश विंगिलश साधारण गृहिणी की आत्म-सम्मान यात्रा है, जहां अंग्रेजी सीखने के साथ-साथ लड्डू और मिठाइयां भी उसके व्यक्तित्व का हिस्सा बनते हैं। तुम्बाड अनाज और भोजन को लालच का प्रतीक बनाकर लोककथा और सांस्कृतिक



भायावहता का अनूठा रूप रचती है। अगर कुछ और पीछे जाएं, तो ऋषिकेश मुखर्जी की बावर्ची भोजन को परिवार की बिखरी हुई डोर जोड़ने का सूत्र बना देती है। बहुत थोड़ा ही सही मार भारतीय सिनेमा में भोजन और कहानियों का रिश्ता बेहद आत्मीय और बहुरंगी रहा है। कभी यह रिश्तों को जोड़ने वाला माध्यम बनता है, तो कभी जीवन की जटिलताओं और संवेदनाओं को समझाने का जरिया।

लंच बॉक्स में इरफान खान और नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने उस दुर्लभ ठहराव को जीवंत किया है, जहां डिब्बे में रखा साथारण खाना दो अनजान आत्माओं को जोड़ देता है और चुपचाप चिट्ठियों का सिलसिला ध्यानी-सी प्रेम कहानी में बदल जाता है। तरला में हुमा कुरैशी, भारत की पहली महिला शोफ तरला दलाल के जीवन को पर्दे पर उतारती हैं और दिखाती हैं कि कैसे पाक-कला किसी लड़की के लिए सशक्तिकरण की भाषा भी हो सकती है। इसी क्रम में हमें भारतीय क्षेत्रीय सिनेमा की सराहना करनी चाहिए, क्योंकि इस मामले में यहां वाकई बहुत उत्कृष्ट काम हुआ है। क्षेत्रीय सिनेमा ने कई बार यह दिखाया है कि भोजन के बजाए स्वाद या परंपरा नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन, रिश्तों और समाज की संरचना से गहराई तक जुड़ा हुआ है।

मलयालम फिल्म द ग्रेट इंडियन किचन घरेलू लड़की के जीवन और रसोई की



**खानपान:** 1. तरला, 2. किलर सूप, 3. लंच बॉक्स, 4. शर्माजी नमकीन, 5. शेफ, 6. स्टेनली का डिब्बा, 7. बावर्ची

दिनचर्या को केरल की भोजन संस्कृति और पिरुसत्ता से जोड़ते हुए तीखा प्रहार करती है, तो वहीं सॉल्ट एन पेपर खाने और रेडियो कार्यक्रम के माध्यम से दो अनजान लोगों की दोस्ती और व्यंजन परंपरा की आत्मीयता को सामने लाती है। तमिल थ्रिलर ओनायुम अट्टुकुछियुम अपने कथनक में दक्षिण भारत में रात में चलने वाले टी-स्टॉल संस्कृति को पिरोती है, जबकि असमिया फिल्म आमिष खानपान की असामान्य परंपराओं के जरिए सामाजिक वर्जनाओं और मानव-स्वभाव की गहराइयों को उजागर करती है। गुलाबजाम महाराष्ट्रीयन पाक-कला और मिठाइयों के माध्यम से गुरु-शिष्य संबंध की संवेदनशीलता को प्रस्तुत करती है, भोजपुरी सिनेमा सहित कई अन्य क्षेत्रीय फिल्में भोज, दावत और थाली संस्कृति को सामाजिक रीतियों और सामूहिक जीवन से जोड़ती रही हैं। जबकि उस्ताद होटल, बिरयानी, आतिथ्य और परिवारिक रिश्तों के जरिए जीवन-दर्शन सिखाती है। अंगामाली डायरीज स्थानीय व्यंजनों के माध्यम से छोटे शहर की सांस्कृतिक पहचान को प्रामाणिकता से चिह्नित करती है। कड़वी हवा जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से बदलती भोजन संस्कृति और किसान जीवन की त्रासदी को मर्मिक ढंग से सामने रखती है।

विश्व सिनेमा की बात करें, तो इस संदर्भ में उनका दायरा कहीं अधिक व्यापक हो

**शेफ भोजन को लोकतांत्रिक बनाते हुए फूड ट्रक की सङ्क-यात्रा में पारिवारिक रिश्तों की पुनः खोज कराती है, और रिश्तों में भोजन की अहमियत को रेखांकित करती हैं**

जाता है। कोरियाई सिनेमा में भोजन और संस्कृति का गहरा संगम देखने को मिलता है। कभी यह व्यंजन किसी राष्ट्र की पहचान और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सापने आते हैं, तो कभी एक युवती के गांव लौटकर पारंपरिक और मौसमी भोजन बनाने की आत्मीयता में झलकते हैं। कहीं रहस्यमयी व्यंजन की खोज, स्वाद, सुगंध और स्मृतियों को जोड़ती हैं, तो कहीं बैकरी और मिठाइयों के जरिए रिश्तों की परंतु खुलती हैं। कभी यह व्यंजन प्रतियोगिता और मेलजोल का प्रतीक बनते हैं, तो कभी जीवन की सरलता और भावनाओं का आईना। इस तरह भोजन सिर्फ स्वाद तक सीमित नहीं रहता, बल्कि संस्कृति, स्मृतियों और रिश्तों का गहरा रूपक बन जाता है।

हॉलीवुड के सिनेमा में भोजन केवल स्वाद की अनुभूति नहीं, बल्कि जीवन और समाज के जटिल ताने-बाने का रूपक बनकर उभरता है। डिनर रश फिल्म में न्यूयॉर्क का रेस्टोरेंट महज व्यंजन परोसने की जगह नहीं, बल्कि शक्ति और पहचान के संघर्ष का रंगमंच है, जहां इंटीलियन परंपरा और आधुनिक प्रवृत्तियां आपने-सामने खड़ी हैं। द मेन्यू फिल्म भोजन को कला और उपभोग की पराकाश्ता बनाते हुए यह प्रश्न उठाती है कि क्या स्वाद का चरम अंतः विनाश का आह्वान करता है, यहां हर डिश एक नाटक है और हर मेहमान अपनी ऐतिक शूद्यता का उद्घाटन। इसके बरक्स वेंटो फिल्म का रेस्टोरेंट अमेरिकी मध्यमवर्गीय जीवन का व्यंग्यचित्र है, जहां श्रमिकों की असुरक्षा और उपभोक्ता का दंभ भोजन को एक सामाजिक प्रयोगशाला का विषय बना देता है। फिल्म बर्न्ट भोजन को आत्ममुक्ति और पुनर्जन्म का प्रतीक मानती है। मिशेलिन स्टार की खोज यहां आधुनिक मिथक का रूप लेकर कला, श्रम और प्रतिस्पर्धा को त्रासदीपूर्ण यात्रा में बदल देती है। वहीं द हंड्रेड-फुट जर्नी भारतीय मसालों और फ्रांसीसी व्यंजनों के बीच की सौ फुट दूरी को संस्कृतियों के संवाद और सह-अस्तित्व के पुल में रूपांतरित कर देती है।

एक रोचक तथ्य यह भी है कि इस फिल्म में महान कलाकार ओम पुरी का अभिन्य देखने लायक है। कुछ फिल्में फ्रांसीसी भोजन संस्कृति और अमेरिकी जीवन शैली के मेल को दर्शाती हैं, तो कुछ आधुनिक फूड ट्रक संस्कृति और परिवारिक रिश्तों में भोजन की अहमियत को रेखांकित करती हैं। कहीं रसाइंघर को कला और जुनून की प्रयोगशाला के रूप में चिह्नित किया गया है, तो कहीं पास्ता, पिज्जा और पारंपरिक व्यंजनों के माध्यम से आत्मीयता और जीवन का संतुलन दिखाया गया है। स्वादिष्ट भोजन करना हमेशा से सुखद अनुभवों में से एक रहा है।

(लेखक फिल्म अध्येता हैं)

## बुलेट रानी

जब फिल्म का नाम गुस्ताख इश्क हो, तो गुस्ताखियां बनती हैं। विजय वर्मा के साथ इसी नाम से आ रही फिल्म में फातिमा सना शेख का बहुत दमदार रोल है। इस दम को उन्होंने अपने अंदर इतना उतार लिया कि पहाड़ों पर बुलेट लेकर निकल गई। कई साल बाद बाइक चलाने का उनका अनुभव मजेदार भी रहा और रोमांच से भरा भी। फातिमा के लिए बाइक चलाना खुद को खोजने जैसा है। आप जैसा कोई और मेट्रो... इन दिनों फिल्म की स्टार सना के लिए पहाड़ों को नापने के लिए अपने इस भरोसेमंद साथी के सिवा किसी पर भरोसा नहीं है।



## धाय मां

बेडमिंटन में गोल्ड मेडल की चाहत रखने वाली ज्वाला गट्टा इस मेडल से भी कहीं ऊपर हो गई हैं। गोल्डन हार्ट वाली इस खिलाड़ी ने उन नवजातों के लिए ब्रेस्ट मिल्क दान किया, जिनकी मां दूध नहीं पिला पातीं। ब्रेस्ट मिल्क को लिविंग गोल्ड कहा जाता है। ज्वाला ने 30 लीटर ब्रेस्ट मिल्क दान किया। ह्यूमन मिल्क बैंक ऐसे दूध को पॉश्चुराइज कर ऐसे बच्चों तक पहुंचाते हैं, जिनका जन्म समय से पहले हुआ हो या जिनकी मां न हो।



## चीनी कम

एक बार जो टैग मिल गया उस पर हमेशा कायम रहना पड़ता है। आमिर खान को बोल दिया परफेक्शनिस्ट, तो बस बोल दिया। इसलिए जब राजकुमार हिरानी ने दादा साहब फाल्के की बॉयोपिक की स्क्रिप्ट उन्हें सुनाई, तो उन्हें लगा इसमें घूमर का तड़का थोड़ा कम है। जैसा श्री इंडियट्स और पीके में था। राजू दोबारा स्क्रिप्ट परफेक्ट बनाने में जुटे हुए हैं।

## बैइज्जती खराब

‘गजब बेज्जती है भाई!’ यंचायत वेबसीरीज के दामाद जी का ये संवाद लगता है, तनुश्री दत्ता को कुछ ज्यादा ही रास आ गया है। सबसे ज्यादा देखे जाने वाले शो बिग बॉस में जाने के लिए जनता लाइन लगाए रहती है। लेकिन मीटू में नाना पाटिकर के खिलाफ हल्ला बोलने वाली मैटम दत्ता ने साफ कह दिया, “वे इतनी सस्ती” नहीं हैं कि बिग बॉस जैसे शो में जाएं। वो कितनी ‘महंगी’ हैं यह पूछने की हिम्मत किसी में हो, तो जरा पूछ देखे। मीटू हल्का पड़ा है खत्म नहीं हुआ। यह मत भूलना।



## स्टंट बधू

छोटी सी बालिका बधू 27 साल की हो गई हैं। इसलिए उनका अब असली बधू बनने का मन है। अविका गोर कलर्स पर आ रहे शो पति-पत्नी और पंगा में अपने मंगेतर मिलिंद चंदवानी के साथ दिखाई दे रही हैं। सूचना है कि अब वे जल्द ही अपने से छह साल बड़े मिलिंद के साथ शो के सेट पर ही सप्तपदी पूरी करेंगी। जब शो के प्रमोशन के लिए यह सब हो ही रहा है, तो लगे हाथ अविका ने अपनी गेस्ट लिस्ट में राधे मां और नेहा कक्कड़ का नाम भी जोड़ दिया है। जय हो। राधे मां समां बांध देंगी और नेहा विदाई में विश्वसनीयता के साथ रो लेंगी।





अंकिता सिटोडे  
लेखिका

### मां शारदा की नगरी

कुछ लोग मुझे ऐतिहासिक नगरी मानते हैं, तो कुछ धार्मिक। भक्तों के लिए मैं मैहर हूं, पर कुछ लोगों के लिए अभी भी अपने पुराने नाम छाप लिए मैहरगढ़ ही हूं। दोनों नामों का दावा अपने अपने किस्सों से जुड़ा है। मुझे जो जिस नाम से पुकारे मैं दोनों नामों का स्वागत करता हूं। पर हां, इतना जरूर है कि मां शारदा के कारण मेरा नाम दूर-दूर तक गुज़ता है। कहते हैं कि यह वही धरा है, जहां मां शारदा ने त्रिकूट पहाड़ी पर वास किया और अल्हा-उदल जैसे वीरों ने मां की भक्ति कर अमरत्व पाया।



### इतिहास और किंवदंती

मेरी कहानी इतिहास और किंवदंतियों की गहराई से बुरी हुई है। बुंदेलखण्ड की धरती पर बसे मेरे प्राचीन अतीत की गूंज आज भी सुनी जा सकती है। कहते हैं, त्रेता युग में भगवान राम ने यहां मां शारदा की आराधना की थी। मध्यकाल में यह इलाका चंदेलों और बघेलों के साम्राज्य का हिस्सा था। मेरी सबसे प्रसिद्ध कथा अल्हा और उदल से जुड़ी है। बुंदेलों के ये वीर जब युद्धभूमि में उत्तरते थे, तो फहले त्रिकूट पर्वत पर स्थित मां शारदा के दरबार में माथा टेकते थे। आज भी गर्भगृह के बाहर वह तलवार ठंगी है, जिसके बारे में मान्यता है कि अल्हा को शारदा माई ने यह तलवार भेंट की थी।

### तीर्थ और आस्था

मुझ पर सबसे बड़ी कृपा मां शारदा की है। भक्त त्रिकूट पर्वत की सीढ़ियां जैसे-जैसे चढ़ते जाते हैं, उनके मन की चिंताएं और बोझ उतना ही हल्का होता जाता है। मां के मंदिर तक पहुंचने के लिए फहले 1063 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती थीं, लेकिन अब रोपवे ने यह यात्रा सरल बना दी है। नवरात्रि में पूरा शहर किसी बड़े मेले में बदल जाता है। दूर-दूर से श्रद्धालु यहां शारदा माई के दर्शन के लिए आते हैं। शारदा माता की आरती की गूंज और ढोल-नगाड़ों की थाप, जैसे मेरे हर कोने में प्राण फूंक देती है। मंदिर परिसर में अस्थायी बाजार लग जाते हैं, खिलौनों से लेकर धार्मिक वस्तुएं और स्वादिष्ट पकवान तक सब यहां रैनक लगाते जाते हैं। नवरात्रि के दौरान दशहरा पर्व परिकूट पर्वत दीपों की रोशनी से जगमगा उठता है। दूर से देखने पर लगता है, जैसे पूरा पर्वत एक दिव्य दीपमालिका में बदल गया है। भीड़ में छोटे बच्चों की खिलखिलाहट, भक्ति गीतों की गूंज और श्रद्धालुओं की आँखों में चमक सब मिलकर इस शहर को आस्था के महासागर में बदल देते हैं।

### मैहर घराना और संगीत साधना

इस शहर से जुड़ा एक अभिमान और है, संगीत का एक ऐतिहासिक घराना। संगीत प्रेमी इसे मैहर घराना कहते हैं। संगीत के इतिहास में यह घराना अमर है क्योंकि यहां उत्ताद अलाउदीन खान ने संगीत को नई ऊँचाई दी। 20वीं सदी की शुरुआत में जब अलाउदीन खान यहां आए, तो उन्होंने मां शारदा के चरणों में

संगीत को समर्पित किया। उनकी तपस्या से यह घराना भारत के शास्त्रीय संगीत का एक प्रमुख केंद्र बन गया। उनके शिष्यों में पंडित रविशंकर, अन्नपूर्णा देवी और अली अकबर खान जैसे महान कलाकार शामिल रहे। मैहर का नाम आज भी दुनिया भर के संगीत श्रेमियों के दिल में गुज़ता है। मैं सिर्फ शहर ही नहीं हूं, मेरे अंदर भक्ति और संगीत की आत्मा बसती है। मेरे लिए गर्व का एक और कारण है, मैहर बैंड। यह बैंड अंग्रेजों के जमाने में स्थापित हुआ था। फहले यह अंग्रेज अधिकारियों के लिए पश्चिमी धुनें बजाता था, फिर धीरे-धीरे उसने भारतीय रागों को भी अपनाया। नवरात्रि और दुर्गा पूजा के दौरान यह बैंड मां शारदा के दरबार में संगीत बजाता है, तो लगता है मानो पूरा परिसर मां की आराधना कर रहा है।

### जीवंत क्षण

रेलवे स्टेशन पर आती-जाती यात्रियों की भीड़ बताती है कि मां शारदा के दरबार की ख्याति कितनी दूर तक फैली है। सतना, कटनी और रीवा से आने वाली ट्रेनें पूरे भारत भर से जुड़ी हुई हैं। जिस तरह नवरात्रि में गुज़रात गुज़रात रहता है, यहां के लिए भी यह साल का सबसे बड़ा पर्व होता है। मां शारदा की भव्य शोभायात्रा, त्रिकूट पहाड़ी पर जलते दीपों की कतरें और भक्तों के जयकारे इस शहर को जीवंत कर देते हैं। उस समय मैं सिर्फ एक शहर नहीं रह जाता, बल्कि आस्था का महासागर बन जाता हूं। नवरात्रि मेले के दौरान मेरी सड़कों पर धार्मिक नाटक मंडलियां अल्हा-उदल की बीरगाथाओं और देवी की कथाओं का मंचन करती हैं। इन कथाओं में बुंदेलखण्ड की मिट्टी की खुशबू और मां शारदा की महिमा दोनों समाए रहते हैं। आज भी नवरात्रि में मां शारदा की आरती के समय बजने वाली उस धुन में अलाउदीन खान की साधना की आत्मा सुनाई देती है।

### गानपान की खुशबू

मेरे गलियों में सिर्फ भक्ति की गूंज नहीं, स्वाद की खुशबू भी तैरती है। सुबह-सुबह गरम पोहे-जलेबी, साबूदाने की खिंचड़ी और मलाइदार लस्सी का आनंद लिए बिना यात्रा अधूरी लगती है। मेले के दिनों में मेरी गलियों में लगे ठेलों पर कचौरी-समोसा, भुट्ट का कीस और गुलाब जामुन की महक हवा में घुली रहती है। मां के दर्शन के बाद श्रद्धालु इन पकवानों का स्वाद लेते हैं।

### मौसम भी है अनुग्रह

यहां का मौसम भी इस शहर की तरह कई रंग लिए हुए है, गर्मियों में तपता हुआ, बरसात में भीगता हुआ और सर्दियों में ठिठुरता हुआ। नवरात्रि के दौरान, जब शरद ऋतु की ठंडी हवाएं बहती हैं, तब मेरा रूप सबसे मनमोहक हो जाता है। त्रिकूट पर्वत की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए जब ठंडी हवा छूती है, तो लगता है, मां शारदा स्नेह से असीरीदार दे रही हैं। नाम चाहे जो हो, मैहर या मैहरगढ़ यहां की आत्मा में मां शारदा की भक्ति, अल्हा-उदल की बीरता और अलाउदीन खान की संगीत साधना हवा में तैरता रहती है। मैं सिर्फ शहर नहीं, बल्कि संस्कृति, आस्था और कला का संगम हूं।

# Powering Transformation



Driven by passion and excellence, Atlanta Electricals has built a compelling presence in the power sector. We manufacture power and special application transformers up to 200 MVA, 220 kV with 16,740 MVA per annum capacity. We are one of the most trusted and high-tech partners in the domestic and international markets who are revolutionising the future of the power sector.

## Product Range

Power Transformers

Furnace Transformers

Inverter Duty Transformers

Testing Transformers

Special Application Transformers

## ATLANTA ELECTRICALS LIMITED

(Formerly known as ATLANTA ELECTRICALS PVT. LTD.)

CIN No. U31110GJ1988PLC011648

### Corporate Office & Anand Plant

Plot No. 1503/4, GIDC Estate,  
Vithal Udyognagar,  
Anand - 388121, Gujarat, India

 sales@aetrafo.com  
 www.aetrafo.com  
 +91 02692 235023





Dr. NEMNATH JAIN  
Padma Shri Awardee  
Soya Man of the Millennium  
Founder Chairman PRESTIGE Group

[www.pimrindore.ac.in](http://www.pimrindore.ac.in)

NAAC  
**A++** Autonomous  
by UGC

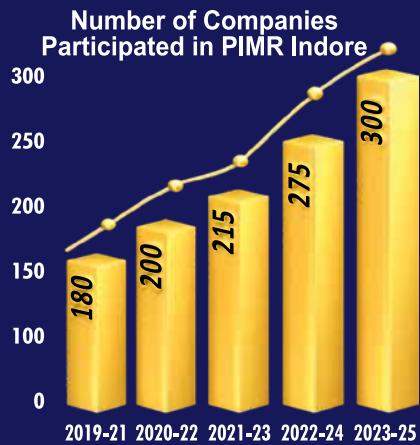


# PRESTIGE PLACEMENT EXCEL

₹ **6.24**  
LAKHS P.A.  
AVERAGE SALARY

**720+**  
MBA STUDENTS PLACED  
...& COUNTING

**310+**  
COMPANIES  
IN 2025



## ■ PG Programs

- MBA (Full Time)
- MMC (Master of Mass Communication)

## ■ New Age Programs

- Liberal Arts & Sciences

## ■ UG Programs

- BBA • BCA • B. Com. • BAJMC

## ■ Law Programs

- BBA LL.B (Hons.) • B.A. LL.B. (Hons.)
- B.Com. LL.B. (Hons.) • LL.B. (Hons.) • LL.M.



# PRESTIGE INSTITUTE OF MANAGEMENT & RESEARCH, INDORE (PIMR)

(An Autonomous Institution Established in 1994, Thrice Accredited by NAAC with Highest Grade, now A++).

**PIMR PG CAMPUS**, Adjacent to Bombay Hospital, Indore  
Call: 81031 29701, 78699 99297, 78699 55422, 78699 55145

**PIMR UG CAMPUS**, Scheme No. 74 C, Vijay Nagar, Indore  
Call: 78699 13304, 78699 13306

